—: सम्पादक :—
डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी
— सहायक —
मु० गुफ़रान नदवी
मु० सरवर फारूक़ी नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही !
मजलिसे सहाफ़त व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 2741235
फैक्स : 2787310
e-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु० 9/–
वार्षिक	रु० 100/–
विशेष वार्षिक	रु० 500/–
विदेशों में (वार्षिक)	25 यूएस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :
"सच्चा राही"
पता : सेक्रेटरी मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ़्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

H.I.Computer Institute - 9335214913

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

मार्च, 2006 वर्ष 5 अंक 01

वास्तविक आनन्द

"प्रेम और भाईचारे का माहौल बनाइये, पारस्परिक विश्वास, नेकी और इन्साफ़ का वातावरण पैदा कीजिए। और जीवन का वास्तविक आनन्द उठाइये।

मौलाना अ़ली मियां (रह०)

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक नज़र में

❐	इस्लाहे मुआशरा और समाज के प्रजे	सम्पादकीय.....3
❐	कुर्आन की शिक्षा	मौलाना मु० उवैस नदवी (रह०) 5
❐	प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम 6
❐	दीने इस्लाम का मिज़ाज	मौलाना सय्यद अबुल ह़सन अ़ली ह़सनी 8
❐	सीरतुन्नबी	अ़ल्लामा शिब्ली नोमानी..... 12
❐	संक्षिप्त इस्लामी इतिहास	मौ० अब्दुस्सलाम क़िदवाई नदवी 17
❐	निरन्तर विपत्तियों का आक्रमण	मौ० शम्सुल हक़ नदवी..... 20
❐	मीरास में लड़कियों का ह़िस्सा	मौ० बदीअुज़्ज़मां नदवी 23
❐	कुर्आन की तिलावत	मौ० मुजीबुल्लाह नदवी..... 27
❐	आज़ादी के नाम पर स्त्रियों का शोषण	ज़ैद अहमद कसौलवी..... 28
❐	आपके प्रश्नों के उत्तर	इदारा 29
❐	इस्लाम में ब्याज ह़राम है	डा० अब्दुल्लाह चतुर्वेदी..... 30
❐	धन्या	इदारा..... 31
❐	ह़ज़रत मौलाना अ़ब्दुल्लाह अ़ब्बास नदवी	डॉ० हारून रशीद सिद्दीक़ी.....32
❐	अल्लहा का शुक्र व इह़सान	सम्पादक..... 34
❐	वैदिक काल	इतिहास के पन्नों से..... 35
❐	हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से मह़ब्बत	मौ० अ़ब्दुल्लाह अ़ब्बास नदवी..... 38
❐	अन्तर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ० मुईद अशरफ़ नदवी 40

❐❐❐

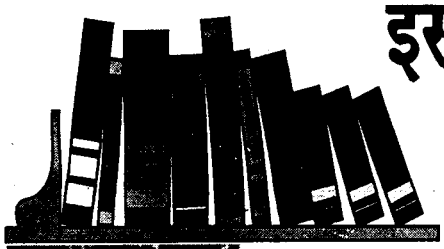

इस्लाहि मुआशरा और समाज के प्रजे

डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी

एक प्रजा तो राजा या शासक के मुकाबले में बोला जाता है जब कि एक प्रजा समाज के कुछ ख़ादिमों (सेवकों) पर बोला जाता है। आज हम इसी दूसरे प्रजा पर कुछ चर्चा करना चाहते हैं।

हाजी हबीब के बेटे की शादी थी, एक रोज़ मुझ से कहने लगे शादी विवाह में सब से मुश्किल काम होता है प्रजों को खुश करना साथ ही हक़ वालों को राज़ी करना। मैंने कहा कैसे प्रजा क्या आप राजा है? कहने लगे प्रजों से मेरी मुराद पेशेवर ख़ादिमों से है जैसे नाई धोबी, दर्ज़ी, माली वगैरह और हक वालों से मुराद है बहन, बहनोई, फूफी, फूफा वगैरह। नाई तो कदम दकम पर झगड़ता है। पैर धुलाई, नाख़ुन कटाई, दूल्हा नहलाई कितने मौक़ों पर वह अड़ जाता है, हम तो इतना लेंगे, या हम कोई निशानी लेंगे। इसी तरह दरज़ी जोड़ा पहनाकर और माली सेहरा डालकर झगड़ते हैं और उनको किसी तरह दे ले कर ख़ुश किया जाता है। एक मौके पर तक्यादार अपनी बख़्शीश के लिए अड़ता है तो भंगी अपने इनआम के लिए।

मैंने एक आहेसर्द खींची और हाजी साहिब से अर्ज़ किया : हाजी साहिब ! सर के बाल उतरवाना या छोटे कराना, दाढ़ी मोंछ की कटिंग करके ज़रा खूबसूरत करना इन्सान की ज़रूरत है, साथ ही यह एक फ़न भी है जिसे सीखे बिना किया नहीं जा सकता पस अगर कुछ लोगों ने इस फ़न को सीखा और उनके ख़ान्दान ने इसको पेशे के तौर पर अपना कर समाज की ख़िदमत करके अपनी रोज़ी कमाने लगे तो यह तो अच्छी ही बात है। भले से वह नाई कहे जाएं लेकिन समाज में उनको घटिया समझा जाए, उनको प्रजा समझा जाए वह क़दम क़दम पर इनआम का मुतालबा करें यह बात तो ठीक नहीं और दोनों के लिए ज़िल्लत का सबब है। उधर घर मालिक लोगों के सामने शार्मिन्दा हो रहा है तो दूसरी जानिब नाई साहिब अपनी मेहनत पर इनआम की मांग करके अपने को ज़लील कर रहे हैं।

बेशक नाइयों ने अपना काम बाल बनाना अपनाया तो यह कोई ज़िल्लत का काम तो न था, उनको अपने काम की मुकर्ररह उजरत मिलना चाहिए और अब इस का रिवाज भी हो रहा है, चाहे वह नक़्द उजरत हो या छे छे माह की उजरत ग़ल्लों की शक्ल में हो। इसी तरह नाइयों की औरतें उमूमन दायी का काम अन्जाम देती हैं और ज़च्चे की मालिश बतौर इलाज करती हैं इसमें भी कोई ऐब नहीं एक तजरिबे वाली औरत किसी औरत की तिब्बी मदद करती है और मुनासिब उजरत लेती है बिल्कुल ठीक बात है। मगर इस में यह कोताही चल रही है कि उजरत मुक़र्रर नहीं की जाती वही इनआम वाला सिलसिला चलता है जो सहीह नहीं है। काम की उजरत मालूम होना चाहिए और वही अदा होना चाहिए। बेशक दीहातों में दावत पहुंचाने का काम उमूमन नाइयों के ज़िम्मे होता है और उसकी उजरत मदऊ हज़रात अदा करते हैं, यह तरीक़ा भी सहीह नहीं है। दअ़वत देने वाला या खुद दअ़वत पहुंचाए चाहे डाक से दअ़वत दे, अगर नाई के जरीअ़े दअ़वत पहुंचाता है तो उस की उजरत दअ़वत देने वाले दाअी पर है न कि मदऊ पर?

नाख़ून कटाई की रस्म, नहलाई की रस्म लग़्व और फुजूल है, कोई बाल बनवाए, नाख़ून तरशवाए उसकी उजरत अदा करे नहाना है तो ख़ुद नहाए, एक जवान मर्द या औरत को कोई दूसरा

नहलाए यह बात ठीक नहीं है। कहीं यह भी रिवाज है कि नाई के ज़िम्मे खाना तय्यार कराना और खाए हुए बरतनों की सफ़ाई भी होती है। नाई साहि़ब को मुआ़मला साफ़ कर लेना चाहिए कि फ़ी देग खाना पकवाई यह होगी और इतने मेहमानों के बरतनों की धुलाई इतनी होगी फिर उसकी अदाएगी होना चाहिए न कि यह उजरत बशक्ल इनआ़म दी जाए।

हमारे दीहातों में क़ुर्बानी और अ़क़ीक़े के गोश्त की तक़सीम नाई के ज़िम्मे होती है और नाई हर घर से उ़मूमन ग़ल्ले की शक्ल में कुछ उजरत पाता है। यह तरीक़ा भी सही़ह़ नहीं है। गोश्त अपने हाथ तक़सीम कीजिए और अगर नाई के जरीअ़े ही तक़सीम करवाना है तो उस की मा़लूम उजरत बटवाने वाले के जिम्मे है न कि हि़स्सा पाने वाले के ज़िम्मे। यह क्या कि आप ने चार बोटियां पड़वे के गोश्त की भेजीं उसके बदले में पाने वाला कम से कम एक पाव चावल या गेहूं अदा करे। नाई साहि़ब यहां एक और ज़ियादती करते हैं कि बकरा, बकरी, वगैरह की क़ुर्बानी या अ़क़ीक़ा हुआ तो उन्होंने कहा सिरी तो हमारी है। यूं अ़क़ीक़ा या क़ुर्बानी करने वाला ख़ुशी से नाई को सिरी दे दे तो कोई हरज भी नहीं लेकिन सिरी नाई का ह़क़ है यह सही़ह़ नहीं है। इन रस्मों से क़ुर्बानी और अ़क़ीक़े को ख़राब न करना चाहिए।

यही ह़ाल दूसरे पेशावरों का है टेलरिंग का पेशा तो आज कल बड़ा ही फार्वर्ड है, पता नहीं वह प्रजा बन कर इनआ़म लेने क्यों आता है। अस्ल में हम ने ख़ुद मुआ़शरे को बिगाड़ रखा है। ह़ाजी साहि़ब! यह निकाह़ से पहले भरी मजलिस में दूल्हे के कपड़े बदलवाने की रस्म कैसी? जो कपड़े पहले से पहन रखे हैं उनही पर निकाह़ होना चाहिए। उन कपड़ों को जिन को टेलर साहि़ब ने सिला है उनको पहले ही से उजरत मिल जाना चाहिए यह भरी मजलिस में टेलर की उजरत बतौर इनआ़म देना फ़ुज़ूल बात है। अस्ल में इन्सान लालची है वह चन्द पैसों के लिए अपने को गिरा लेता है। ज़ाहिर है इनआ़म की शक्ल में आ़म उजरतों के मुक़ाबले में कुछ ज़ियादा मिल जाता है इसी लिये वह इस पर राज़ी हो जाता है। उसने यह न सोचा कि इससे मुआ़शरे में ऊंच नीच की जड़ें मज़बूत होंगी। हम मुसलमानों ने [illegible] इस्लामी तअ़लीमात को भुला कर यहां की तबक़ाती तक़सीम को अपना लिया। अ़रब मुल्कों में इस तरह के काम करने वाले तो मिलते हैं लेकिन वहां शादी विवाह में न इस तरह की रस्में हैं न इन पेशावरों की इस तरह़ प्रजों की है़सीयत।

बेशक भंगी समाज में सफ़ाई का काम अपना कर बड़ी ख़िदमत अंजाम देता है। एक किसान या खेत मज़दूर उ़मूमन अनपढ़ होता है या यह कि अनपढ़ हो तो उस के काम में कोई रुकावट नहीं होती, लेकिन धूप, बारिश, सर्दी में उसे सख़्त मेह़नत (हार्ड वर्क) करना होती है। इसी तरह़ आ़म तौर से भंगी पढ़ा नहीं होता, या यह कि उसके काम के लिए पढ़ा होना ज़रूरी नहीं लेकिन गन्दगी साफ़ करने के लिए अपने को तैयार करना यह भी बड़ी हिम्मत का काम है। पहले कुछ लोगों ने किसी मजबूरी से यह ख़िदमत अपनाई होगी आगे चलकर उनका ख़ान्दान ही इस काम के लिए शुहरत पा गया। लेकिन आज भी उनमें इसका एहसास है कि वह मुआ़शरे में सबसे घटिया लोग हैं और उनके पढ़े लिखे लोग इससे निकल रहे हैं।

यह बात भी सोचने के लाइक़ है कि उनसे तक्लीफ़ देह बदबूदार पाख़ाना क्यों उठवाया गया और वह कैसे इस पर राज़ी हुए? लेकिन अब तो इन्सान ने तरक़्क़ी की, सीवर लाइन और फ़्लेशों की ईजाद ने यह मुश्किल ह़ल कर दी, फिर भी सफ़ाई धुलाई का काम उनके ज़िम्मे है। अ़रब मुल्कों में इस काम के लिए कोई ख़ास क़ौम नहीं, जिसका जी चाहे यह काम करे और उजरत ले। आज कल तो वहां हिन्द व पाक व बंगला देश के भंगी नहीं, शरीफ़ घर के लोग यह ख़िदमत अंजाम देते हैं। हमारे यहां भी यह रवाज होना चाहिए और कम से कम इतना तो होना चाहिए कि सफ़ाई का काम अंजाम देने वालों को मुआ़शरे में नीच न समझना चाहिए बल्कि उन का एह़सान मानते हुए उनकी इ़ज़्ज़त होनी चाहिए।

क़ुर्आन की शिक्षा

मौ० मुहम्मद उवैस नदवी

रसूलुल्लाहि (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पैरवी

और जो दें तुमको रसूल सो उसे लेलो और जिससे रोकें उसे छोड़ दो। (५९:७)

इस आयत का मतलब यह है कि तुम को हर हाल में और हर बात में रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पैरवी करना चाहिए और जो वह करने को कहे वह करो और जिस चीज से रोकें रूक जाओ।

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया कि सबसे बुरा काम बिदअ़त है और बिदअ़त गुमराही है।

दीन में अपनी तरफ़ से ज़ियादती करने को बिदअत कहते हैं। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया जब लोग कोई नई चीज़ दीन में ईजाद करते हैं खुदा उनके दिलों से उसी के बराबर सुन्नत निकाल लेता है।

एक बार रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने जमीन पर सीधी लकीर खींची और फ़रमाया कि यह अल्लाह का रास्ता है। फिर दाएं और बाएं लकीरें खींची और फ़रमाया कि यह सब रास्ते हैं इन तमाम रास्तों पर शैतान हैं जो अपनी तरफ बुलाते हैं। मतलब यह हुआ कि रसूल का रास्ता सीधा और बे खटक है, उसको छोड़ कर जिस रास्ते पर जाओगे शैतान के दांव में फंस जाओगे। कुर्आन में है।

यह मेरा सीधा रास्ता है इसपर चलो और रास्तों पर मत चलो। (६:१५४)

हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया : मेरी उम्मत जन्नत में जाएगी सिवा उसके जिस ने इनकार किया। लोगों ने पूछा किस ने इन्कार किया? फरमाया जिसने मेरी पैरवी की वह जन्नत में दाखिल हुआ और जिस ने मेरी नाफरमानी की उसने इन्कार किया। फरमाया जिसने मेरी मिटी हुई सुन्नत को जिन्दा किया उसको सवाब मिलेगा उन लोगों के सवाब के बराबर जिन्होंने उस पर अमल किया इस के बिना कि उनके सवाबों में कोई कमी की जाए और जिस ने कोई गुमराह बिदअत निकाली उसको उतना ही गुनाह होगा जितना उन लोगों पर होगा जिन्होंने उस गुनाह को किया इसके बिना कि उनके गुनाहों में कुछ कमी की जाए।

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का अदब

ताकि तुम लोग यकीन लाओ अल्लाह पर और उसके रसूल पर और उसकी मदद करो और उसकी अजमत रखो। (कुर्आन ४८:९)

इस आयत से मालूम हुआ कि खुदा और उसके रसूल पर ईमान लाने के साथ साथ उनकी इज्जत और बुजुर्गी का ख्याल रखना भी जरूरी है। इज्जत और अजमत का मतलब यह है कि न ज़बान से कोई ऐसी बात निकले जिससे मालूम हो कि खुदा और रसूल के साथ बे अदबी कर रहा है, और न दिल में उनकी शान के खिलाफ कोई अकीदा जमने पाए।

सहाबा के अदब का यह हाल था कि रसूलुल्लहा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) जब मदीना तशरीफ लाए तो हजरत अबू अयूब अन्सारी के घर ठहरे। आप नीचे के हिस्से में थे और उनके घर वाले ऊपर के हिस्से में थे। एक रात हजरत अयूब जगे और कहा कि हम रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के ऊपर रहें। इस ख्याल से सब को एक कोने में कर दिया और सुब्ह को हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से कहा कि आप ऊपर रहा करें। हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया : नीचे का हिस्सा हमारे लिय जियादा मुनासिब है। बोले जिस छत के नीचे आप हों हम उस पर चढ़ नहीं सकते मजबूरन आप ऊपर तशरीफ ले गये।

दुरूद व सलाम

ऐ ईमान वालो दुरूद भेजो उस पर और सलाम भेजो खूब खूब। (अहजाब:५६)

इस आयत में अल्लाह तआला ने मुसलमानों को हुक्म दिया कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर दुरूद व सलाम भेजा करें। दुरूद व सलाम अस्ल में एक तोहफा है जिसको मुसलमान अपने रसूल की

(शेष पृष्ठ ७ पर)

प्यारे नबी की प्यारी बातें

अमतुल्लाह तस्नीम

अल्लाह से कुर्बत और उसकी महबूबीयत के आसार

१/८६. हजरत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अल्लाह तआला का इर्शाद है, जो मेरे दोस्त से दुश्मनी रखेगा उससे लड़ाई का एलान है। और मेरे बन्दों का मेरे फराइज से नज्दीकी हासिल करना जिस कद्र मुझको महबूब है उस कद्र और किसी नेकी की नज्दीकी मुझको महबूब नहीं। और बराबर मेरा बन्दः मुझसे नवाफिल के साथ करीब होता है हत्ता कि मैं उससे महब्बत करने लगता हूं। जब मैं उससे महब्बत करता हूं तो उसके कान बन जाता हूं जिनसे वह सुनता है, और उसकी आंख बन जाता हूं जिनसे वह देखता है, और उसके हाथ बन जाता हूं जिनसे वह पकड़ता है, और उसके पांव जिनसे वह चलता है। अगर वह मुझसे सवाल करेगा तो मैं उसको दूंगा और अगर वह मुझसे पनाह चाहेगा तो मैं उसको पनाह दूंगा। (बुखारी)

अल्लाह की बन्दःनवाज़ी

२/६०. हजरत अनस (र०) से रिवायत है– वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत करते हैं, और आप अपने रब अज़्ज़ व जल्ल से रिवायत करते हैं, फरमाया, जब मेरा बन्दः मुझसे एक बालिश्त करीब होता है तो मैं उससे एक हाथ करीब होता हूं, जब वह मुझसे एक हाथ करीब होता है तो मैं उससे दो हाथ करीब होता हूं, और जब वह मेरे पास चलकर आता है तो मैं उसकी तरफ दौड़कर आता हूं। (बुखारी)

दो दौलतें हैं जिनकी कद्र नहीं

३/६१. हजरत इब्नि अब्बास (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया– दो निअमतें हैं जिनमें बहुत लोग घाटे में हैं – तन्दुरुस्ती और फुर्सत । (बुखारी)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अिबादत और जज़्ब-ए-शुक्र

४/६२. हजरत आयशा (र०) से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रात को खड़े होते थे और खड़े–खड़े आपके कदम मुबारक सूज जाते थे। मैंने कहा, आप यह क्यों करते हैं, अल्लाह तआला ने तो आपको अगले और पिछले गुनाह मुआफ कर दिये हैं। आपने फरमाया, क्या मैं शुक्रगुजार बन्दः न बनूं। (बुखारी मुस्लिम)

रमज़ान के अशर-ए-अखीर की शब-बेदारी

हजरत आयशा (र०) से रिवायत है कि जब रम्जान का आखिरा अशरः होता था तो आंहजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बड़ी शब–बेदारी फरमाते और घर वालों को जगाते और कमर कसकर तैयार हो जाते।

मुफ़ीद बात की हिर्स और मुस्तअिदी

हजरत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमने फरमाया – कवी मोमिन बेहतर है। और अल्लाह को कमजोर मोमिन से कवी मोमिन ज्यादः महबूब है। और दोनों में खैर है उस नेकी पर लालच करो जो तुमको नफा पहुंचाये। अल्लाह से मदद चाहो और आजिज नं हो। अगर तुमको कोई मुसीबत पहुंचे तो यह न कहो कि यह करता तो यह होता बल्कि यह कहो कि अल्लाह ने जो चाहा मुकद्दर कर दिया।

जन्नत नागवार चीज़ों से घिरी है

हजरत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, आग ख्वाहिशात के साथ घेरी गयी है। और जन्नत नागवार चीजों से घिरी हुई है। (बुखारी–मुस्लिम)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रात की नमाज़

हजरत अबू हुजैफा (र०) से रिवायत है कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ एक रात नमाज पढ़ी। आपने सूरः बकरः शुरू की। मैंने ख्याल किया कि आप सौ आयतों पर रुकूअ करेंगे। आप उससे बढ़ गये, मैंने ख्याल किया आप इसको

एक रकअत में पढ़ेंगे लेकिन आप उससे भी गुजर गये। मैंने कहा, अब शायद रुकूअ करें, फिर आपने सूरः निसा शुरू कर दी। उसको खत्म करके आल अिमरान शरू की और उसको भी पढ़ा, और आप आहिस्तः आहिस्तः पढ़ रहे थे, जब आप ऐसी आयत पर पहुंचते जिसमें तस्बीह होती थी तो आप तस्बीह करते थे और जब पनाह की आयत पर पहुंचते तो पनाह मांगते थे और सुवाल की आयत पर पहुंचते तो आप सुवाल करते। फिरआपने रूकूअ किया और कहने लगे 'सुबहान रब्बियल अजीम' और आपका रूकूअ कयाम की तरह था। फिर खड़े हुए और कहा 'समिअल्लाहु लिमन हमिदह रब्बनाल कलहम्दु और आपका कयाम रूकूअ की तरह था। फिर सज्दः किया और कहा 'सुबहान रब्बियलअअला, पस आपका सज्दः आपके कियाम की तरह था। (मुस्लिम)

नमाज़ की तिलावत

हज़रत इब्नि मसऊद (र०) से रिवायत है कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ एक रात नमाज पढ़ी। आपने कियाम लम्बा किया। मैंने इरादः किया कि बैठ जाऊं और छोड़ दूं। (बुखारी)

मरनेवालों के साथ क्या जाता है।

हजरत अनस (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मय्यत के साथ तीन चीजें जाती हैं। (१) घरवाले (२) माल (३) अमल। दो चीजें पलट आती हैं और एक बाकी रहती है। घरवाले और माल पलट आता है। अमल साथ होता है। (बुखारी मुस्लिम)

जन्नत व दोजख आदमी से किस कदर करीब है

हजरत इब्नि मस्ऊद (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जन्नत तुम्हारे जूते के तस्मा से जियादः करीब है। और इसी तरह दोजख भी। (बुखारी)

नवाफिल की कस्रत, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रफाकत

हजरत अबू फरास रबीअः (र०) खादिम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत है (जो अहले सुफ्फा में से थे) कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ घर में करीब ही सोता था। वजू का पानी और जिस चीज की जरूरत होती तो मैं आपके लिए लाता। आपने फरमाया, मुझसे मांगो; मैंने कहा मैं जन्नत में आपकी रफाकत चाहता हूं। आपने फरमाया, और कुछ? मैंने कहा, बस यही। आपने फरमाया, सज्दः की कस्रत से मेरी मदद करो। (मुस्लिम)

नवाफिल की जियादती के नताइज

हजरत सौबान मौला (र०) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत है कि आप फरमाते थे, सज्दों की कस्रत करो; अगर तुम अल्लाह के लिए सज्दः करोगे तो अल्लाह तआला उसके जरिये तुम्हारे दर्जे बुलन्द करेगा। और तुम्हारी खताओं को मुआफ फरमायेगा। (मुस्लिम)

उम्र दराज अमल नेक

हजरत अबू सफवान (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया वह आदमी बेहतर है जिसकी उम्र लम्बी हो और काम अच्छे हों। (तिर्मिजी)

"वह आंख इन्सान की आंख नहीं जिसमें नमी नहो। वह दिल इन्सान का दिल नहीं जिस पर कभी दर्द की चोट न लगे। जो हाथ मानवता की सेवा के लिए नहीं बढ़ता वह अपंग है।"

मौलाना अ़ली मियां
पयामे इननियत

(पृष्ठ ५ का शेष)

खिदमत में भेजते हैं। अल्लाह तआला और फिरिश्ते भी रसूलुल्लाह पर दुरूद भेजते हैं।

जिस रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने तरह तरह के दुख झेलकर हम तक अल्लाह का दीन पहुंचाया है क्या हम उस पर दुरूद व सलाम भी न पढ़ेंगे?

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) हमारे और तुम्हारे दुरूद के मुहताज नही है बल्कि इसमें खुद हमारा और तुम्हारा ही भला है। हुजूर फरमाते हैं कि एक बार दुरूद पढ़ने वाले पर खुदा दस बार दुरूद भेजता है, दस नेकियां लिखता है, दस गुनाह मिटाता है, दस दर्जे बुलन्द करता है। सब से अच्छा दुरूद वह है जो नमाज में पढ़ा जाता है।

अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मुहम्मदिंव्व अला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लेत अला इब्राहीम व अला आलि इब्राहीम इन्नक हमीदुम्मजीद।

दीने इस्लाम का मिज़ाज

और उसकी ख़ास-ख़ास बातें

मौ० स० अबुल हसन अली हसनी

बुनियादी इस्लामी अक़ाएद

इस दुनिया का एक बनाने वाला है जो हमेशा से है और हमेशा रहेगा। उसका होना कतई और उसका मिटना मुहाल है। वह तमाम सिफात वाला और ऐब से पाक है। वह सब कुछ जानने वाला और सब पर कादिर है और तमाम कायनात उसी के इरादे से है। वह हयातवाला, सुनने वाला और देखने वाला है। कोइ उस जैसा नही है। उसका कोई मददगार नहीं। कोई उसका शरीक नहीं। इबादत का सिर्फ वही मुस्तहक है। वही मरीज को शिफा देता, मखलूक को रोजी पहुंचाता और उनकी तकलीफों को दूर करता है। उसकी शान है –

तर्जुमा : "उसकी शान यह है कि जब वह किसी चीज का इरादा करता है, तो उससे फरमा देता है "होजा". तो वह हो जाती है। (सूर : यासीन ८२)

अल्लाह तआला किसी दूसरे के कालिब में न उतरता है न किसी से मुत्तहिद होता है। वह न जौहर है, न अर्ज, न जिस्म, वह किसी जगह महदूद नहीं है। कियामत के दिन मोमिनों को उसका दीदार होगा। जो वह चाहता है सो होता है, जो नहीं चाहता नहीं होता। वह ग़नी है किसी चीज का मुहताज नहीं उस पर किसी का हुक्म नहीं चलता। उससे पूछा नहीं जा सकता क्या कर रहा है, किसी के वाजिब करने से कोई चीज उस पर वाजिब नहीं होती। हिम्मत उसकी सिफत है। उसके अलावा कोई हाकिम नही।

तकदीर अच्छी हो या बुरी अल्लाह की तरफ से है। वही वाकिआत को उनके वजूद से पहले वजूद के काबिल बनाता है। उसके फरिश्ते बन्दों के आमाल लिखने और मुसीबत से उनकी हिफाजत करने और भलाई की तरफ बुलाने पर मामूर हैं। और खुदा की मखलूक शैतान भी है जो लोगों के लिए बुराई का सबब बनाता है और उसकी मखलूक में जिन्नात भी हैं। कुरआन अल्लाह का कलाम है। उसके अल्फाज सब अल्लाह की तरफ से हैं। वह मुकम्मल है। तहरीफ से महफूज है। अल्लाह की सिफात में किसी तरह का कतर ब्योंत करना जायज नहीं। मौत बरहक है। जिन्दगी का लेखा जोखा बरहक है। पुलेसिरात कुरआन व सुन्नत से साबित है। जन्नत और दोजख बरहक है। वह पैदा की जा चुकी है।

कबायर के मुरतकिब मुसलमान के हक में अल्लाह के रसूल स० की सिफारिश कबूल की जायेगी वह हमेशा दोजख में नहीं रहेंगे। गुनहगार के लिए कब्र का अजाब और मोमिन के लिए कब्र का आराम हक है। मुनकर व नकीर का सवाल करना बरहक है। मखलूक की तरफ नबियो का आना बरहक है। और उनकी जबानी और उनके वास्ते से खुदा का अपने बन्दों को अम्र व नहीं का मुकल्लफ करार देना बरहक है। नबियों की कुछ ऐसी सिफात होती है जो आम इन्सानों से उन्हें अलग करती है और जो दूसरे इन्सानों में नहीं पायी जातीं और वह उनकी नबूवत की दलील होती है। जैसे "मोजजात" सलामती–ए–फितरत और मिसाली अखलाक" नबियों को जानबूझ कर गुनाह करने से महफूज कर दिया गया है।

मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आखिरी नबी हैं। आप के बाद कोई नबी नहीं। आपकी दावत सारी दुनिया तमाम इन्सानों और जिन्नात के लिए हैं। इस बिना पर वह सब नबियों में अफजल हैं। आप की रिसालत पर ईमान लाना जरूरी है। इस्लाम ही सच्चा दीन है। इसके अलावा कोई दीन खुदा के यहां मकबूल और आखिरत में नजात का जरिया नहीं।

मेराज बरहक है। आपको बेदारी की हालत में रात में बैतुलमकदिस और वहां से जहां खुदा ने चाहा ले जाया गया।

औलिया–उ–अल्लाह की करामात बरहक है। जिसको खुदा चाहता है इन से नेवाजता है। तकलीफ शरअी किसी से साकित नहीं होती चाहे वह विलायत, मुजाहदा और जुहद के कितने ही बलन्द मकाम पर फायज

हो वह फरायज का हमेशा मुकल्लफ रहेगा। कोई हराम चीज या गुनाह जब तक आदमी के होश व हवास दुरुस्त हैं उसके लिए जायज न होगे। नबूवत विलायत से कतई अफजल है। कोई वली चाहे कितना ही बड़ा हो किसी सहाबी के दर्जा को नहीं पहुंच सकता। सहाबाकिराम की औलिया–ए–इज़ाम पर फजीलत, सवाब की कसरत और खुदा के यहां मकबूलियत की अजमत पर है न कि अमल की कसरत पर।

नबियों के बाद बेहतरीन मखालूक सहाबाकिराम हैं। अशर–ए–मुबश्शरा के लिए जन्नत और खैर की हम गवाही देते हैं। अहले बैत और अजवाज मुतहरात की अजमत व तौकीर करते हैं। उनसे मुहब्बत रखते हैं इसी तरह बदर वालों और बैअ़ते रिजवान में शरीक होने वालों के बलन्द मकाम के मोतरिफ हैं। अहले सुन्नत तमाम सहाबाकिराम की अदालत के कायल हैं।

हजरत अबूबक्र सिद्दीक रज़ियल्लाह, अन्हु अल्लाह के रसूल स० के बाद इमाम व खलीफये बरहक थे। फिर हजरत उमर रजिअल्लाहु अन्हु, फिर हजरत उस्मान रजिअल्लाहु अन्हु फिर हजरत अली रजिअ़ल्लाहु अन्हु। हजरत अबूबक्र व हज़रत उमर इस उम्मत में एक के बाद दूसरे सब से अफजल हैं। हम सहाबा किराम का सिर्फ जिक्रे खैर ही करते हैं। वह हमारे दीनी कायद हैं उनको बुरा भला कहना हराम है। और उनकी ताजीम वाजिब है।

हम "अहले किबला" में से किसी को काफिर करार नहीं देते। हां मगर जो अल्लाह के इस कायनात के खालिक और मालिक होने का इन्कार करे, या गैर अल्लाह की इबादत करे या नबी और आखिरत का इन्कार करे या जरूरियात दीने में से किसी चीज से इन्कार करे वह काफिर है। गुनाहों को जायज समझना कुफ्र है। शरीअत का मजाक उड़ाना कुफ्र है। अम्र बिल मारूफ और नहीं अनिल मुनकर वाजिब है। हम तमाम नबियों और उनपर नाजिल होने वाली किताबों पर ईमान रखते हैं और नबियों में बाहम तफरीक नहीं करते। ईमान जबान से इकरार व दिल से तस्दीक का नाम है। कियामत के अलामात पर जैसा कि हदीस में बयान किया गया है, हम यकीन रखते हैं। मेल जोल और एकता को हम हक और सवाब चीज समझते हैं और फूट व तफरीक को गुमराही और अजाब का सबब समझते हैं।

तौहीद, दीन खालिस और शिर्क

इबादत की बुनियाद अकायद और ईमान के सही होने पर है। जिसके अकायद में खलल और ईमान में बिगाड़ हो उसकी न कोई इबादत मकबूल न उसका कोई अमल सही माना जायेगा। और जिसका अकीदा दुरुस्त और ईमान सही हो उसका थोड़ा अमल बहुत है। इसलिए हर शख्स को कोशिश करना चाहिए कि उसका ईमान व अकीदा सही हो।

साफ जेहन गहराई और हक की तलाश के जज्बे के साथ कुरआन के मुतालआ से यह बात रोशन हो चुकी है कि अल्लाह के रसूल मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाने के कुफ्फार अपने झूठे खुदाओं को अल्लाह का बिल्कुल हमसर और हम मर्तबा करार नहीं देते थे बल्कि वह यह तस्लीम करते थे कि वह मखलूक और बन्दे हैं। उनका कभी यह अकीदा नहीं था कि उनके माबूद खुदा से कुदरत व ताकत में किसी तरह कम नहीं और वह खुदा के साथ एक ही पलड़े में हैं। उनका शिर्क सिर्फ यह था कि वह अपने झूठे खुदाओं को पुकारते, उनकी दुहाई देते, उन पर नजरें चढ़ाते और उनके नामों पर कुरबानियां करते। और उनको अल्लाह के यहां सिफारिशी, मुशकिल कुशा और कारसाज समझते थे। इसलिए हर वह शख्स जो किसी के साथ वही मामला करे जो कुफ्फार जो कुफ्फार अपने झूटे खुदाओं के साथ करते थे तो गो कि वह इस का इकरारी हो कि वह एक मखलूक और खुदा का बन्दा है, उसमें ओर जाहिलियत के जमाने के बड़े से बड़े बुत परस्त में बहैसियत मुशरिक होने के कोई फर्क न होगा।

हजरत शाह वलीयुल्ला साहब फरमाते हैं : –

जानना चाहिए कि तौहीद के चार दर्जात हैं :–

१. सिर्फ खुदा को वाजिबुलवजूद करार देना।

२. आसमान व जमीन और तमाम अशिया का खालिक सिर्फ खुदा को समझना। यह दो दर्जे हैं जिन से आसमानी किताबों ने बहस की जरूरत नहीं समझी। और न अरब के मुशरिकीन और यहूद व नसारा को इनके बारे में इख्तेलाफ व इनकार था बल्कि कुरआन इसकी सराहत करता है कि यह दोनों मर्तबे उनके नजदीक मुसल्लमात में से हैं।

३. आसमान व जमीन और जो

कुछ इसके दरमियान हैं, उसके इन्तेजाम को सिर्फ खुदा के साथ खास समझना।

४. चौथा दर्जा यह है कि उसके अलावा किसी को इबादत का मुस्तहक न समझना।

"यह दोनों दर्जे आपस में एक दूसरे से गहरा रब्त रखते हैं। इन्हीं दोनों से कुरआन ने बहस की है और काफिरों के शकूक को भरपूर जवाब दिया है।"

इससे यह मालूम हुआ कि शिर्क के मानी सिर्फ यह नहीं है कि किसी को खुदा का हमसर करार दिया जाये बल्कि शिर्क की हकीकत यह है कि आदमी किसी के साथ वह काम या वह मामला करे जो खुदा ने अपनी जात के साथ खास फरमाया है और जिसको बन्दगी का शेआर बनाया है जैसे किसी के सामने सज्दा करना, किसी के नाम पर कुरबानी करना या नजरें मानना, मुसीबत में किसी से मदद मांगना कायनात में मुतसररिफ समझना। यह सारी वह चीजें हैं जिनसे शिर्क लाजिम आता है। और इन्सान इनसे मुशरिक हो जाता है। भले ही उसका यह अकीदा क्यों न हो कि यह इन्सान, फरिश्ता या जिन्न जिसको वह सज्दा कर रहा है, नजरें मान रहा है और जिससे मदद मांग रहा है, इनका अल्लाह तआला से बहुत कम मर्तबा है। और चाहे यह मानता हो कि अल्लाह ही खालिक है और यह उसका बन्दा है। इस मामले में अंबिया, .औलिया, जिन्न और शयातीन, भूत परेत सब बराबर हैं। इन में से किसी के साथ भी जो यह मामला करेगा वह मुशरिक करार दिया जायेगा। यही वजह है कि अल्लाह तआला उन यहूद व नसारा पर जिन्होंने अपने राहिबों पादरियों और पुरोहितों के बारे में इस तरह का मामला किया, गजब व नाराजगी का इजहार किया इरशाद होता है –

तर्जुमा : उन्होंने अपने उल्मा और मशायख और मसीह इब्न मरियम को अल्लाह के सिवा खुदा बना लिया, हालांकि उनको यह हुक्म दिया गया था कि एक अल्लाह के सिवाय किसी की इबादत न करें। उसके सिवा कोई माबूद नहीं, और वह इन लोगों के शरीक मुकर्रर करने से पाक है।" (सूरःतौबा – ३६)

शिर्क के मजाहिर व आमाल और जाहिली रस्में

इस उसूली बात के बाद जरूरत है कि उन जाहिली रस्मों की निशानदेही कर दी जाये जो सही इस्लामी तालीमात से दूर और महरूम माहौल में रिवाज पा गयीं।

सब कुछ का इल्म और हर चीज पर पूरी कुदरत रखना अल्लाह की खुसूसियत में से है। और इबादत के अमल जैसे–सज्दा या रूकू का किसी के सामने करना, किसी के नाम पर और उसकी खुशनूदी के लिए, रोजा रखना, दूर दूर से एहतमाम के साथ किसी जगह के लिए तूलतवील सफर करके जाना ओर उनके साथ वह मामला करना जो बैतुल्लाह को जेबा है, और वहां कुरबानी के जानवर ले जाना, नजरें और मिन्नतें मानना शिर्क के काम और शिर्क के मजाहिर हैं। ताजीम के वह तरीके और अलामतें जो बन्दगी की मजहर हों सिर्फ खुदा के साथ खास हैं। इल्मगैब सिुर्फ खुदा को है और इन्सानी कुदरत से बाहर है। दिलों के भेद और नियतों का इल्म हर वक्त किसी के लिए मुमकिन नहीं। अल्लाह तआला को सिफारिश कबूल करने और बाअसर व बाइक्तेदार लोगों को राजी व खुश करने में दुनिया के बादशाहों पर कयास नहीं करना चाहिए। ऐसी हर छोटी और बड़ी बात में खुदा ही की तरफ ध्यान देना चाहिए। दुनिया के बादशाहों की तरह कायनात के इन्तेजाम में दरबारियों से मदद लेना खुदा के शयानेशान नहीं है। किसी तरह का सज्दा सिवाय खुदा के किसी के लिए जायज नहीं। हज के मनासिक, गायत दर्जे की ताज़ीम के मजाहिर और मुहब्बत व फनाइयत की तमाम बातें बैतुल्लाह के साथ खास है। सालहीन और औलिया के साथ जानवरों का खास करना, उनका एहतराम करना, उनकी नजरें चढ़ाना और उनकी कुरबानी के जरिये उनके कुर्ब हासिल करना हराम है। आजिज़ी व इन्केसारी के साथ गायत दर्जे की ताजीम के जज्बा से कुरबानी करना सिर्फ अल्लाह का हक है। कायनात में आसमानी नक्षत्रों की तासीर पर अकीदा रखना शिर्क है। जादूगरों, नजूमियों और ज्योतिषियों पर एतमाद करना कुफ्र है।

नाम रखने में भी मुसलमानों को तौहीद के शेआर का इजहार करना चाहिए। गलतफहमी पैदा करने वाले और जिस से मुशरिकाना एतेकाद का इजहार होता हो ऐसे अल्फाज से बचना चाहिए खुदा के अलावा किसी की कसम खाना शिर्क है। गैर अल्लाह की नज़रें मानना हराम हैं। इसी तरह किसी ऐसे मकाम पर कुरबानी करना जहां कोई बुत था या जाहिलियत का कोई जश्न मनाया जाता था नाजायज है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

की ताजीम में इफरात व तफरीत और नसारा के अपने नबी के बारे में गुलू व मुबालिगा की तकलीद और औलिया व सालहीन की तस्वीरों और शबीहों की ताजीम करने से परहेज करना चाहिए।

नुबूवत का बुनियादी मकसद :

अल्लाह के बारे में सही अकीदा और सिर्फ एक अल्लाह की बन्दगी की दावत हर जमाने में नबियों की पहली दावत औरउनके इस दुनिया में आने का पहला और अहमतरीन मकसद रहा है। हमेशा उनकी तालीम यही रही है कि अल्लाह ही नफा व नुकसान पहुंचाने की ताकत रखता है और सिर्फ वही इबादत और कुर्बानी का मुस्तहक है। उन्होंने हमेशा मूर्तियों, जिन्दा व मुर्दा शख्सियतों की पूजा का डट कर विरोध ा किया। इन हस्तियों के बारे में जाहिल लोगों का अकीदा था कि अल्लाह ने इन्हें ऐसी इज्जत व अजमत दी है और ऐसा जामा पहनाया है कि इनकी पूजा की जाये। वह यह भी समझते थे कि अल्लाह ने इनको खास खास कामों में तसर्रूफ का इख्तेयार भी दे रखा है और इन्सानों के बारे में इनकी सिफारिशों को कबूल फरमाता है जिस तरह बादशाह हर इलाके के लिए एक हाकिम भेज देता है। और कुछ अहम बातों के अलावा इलाके के इन्तेजाम की सारी जिम्मेदारी उन्हीं के सर डाल देता है इसलिए उन्हीं के पास जाना और उन्हीं को राजी करना मुफीद और जरूरी है।

जिस शख्स को कुरआन से कुछ भी तअल्लुक है उसको यह बात जरूर मालूम होगी कि शिक व बुतपरस्ती के खिलाफ मोर्चाबन्दी, इससे जंग करना, इसे दुनिया से खत्म करने की कोशिश करना और लोगों को इसके चंगुल से हमेशा के लिए नजात दिलाना, नबूवत का बुनियादी मकसद था :–

कुरआन इनके बारे में कहता है:–

तर्जुमा : और जो पैगम्बर हमने तुम से पहले भेजे उन की तरफ यही वही भेजी कि मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तो मेरी इबादत करो।" (सूरः अंबिया : २५)

और कभी तफसील के साथ एक एक नबी का नाम लेता है और बताता है कि इसकी दावत की इब्तेदा इसी तौहीद की दावत से हुई थी और पहली बात जो उन्होंने कही वह यही थी – "ऐ मेरी कौम के लोगों! खुदा की इबादत करो उसके सिवा मतुम्हारा कोई माबूद नहीं" (सूरः अलएराफ–५६)

यही बुत परस्ती और शिर्क मुद्दतों से चली आ रही आलमगीर और सख्तजान "जाहिलियत" है जो किसी जमाने के साथ मख्सूस नहीं। और इन्सान का सब से पुराना मर्ज है जो तारीखे इन्सानी के हर दौर में तमाम तबदीलियों और इन्केलाब के बावजूद उसके पीछे लगा रहता है। अल्लाह की गैरत और उसके गजब को भड़काता है। बन्दों की रूहानी व अखलाकी तरक्की की राह का रोड़ा बनता है और उनको इन्सानियत के उंचे दर्जे से गिराकर पस्ती के गढ़े में औंधे मुंह डाल देता है। और इसको रद्द करना कियामत तक के लिए दीनी दावतों और इस्लामी तहरीकों की बुनियादी बात है।

तर्जुमा : " और यही बात अपनी औलाद में पीछे छोड़ गये ताकि वह (खुदा की तरफ) रूजू करें। (सूर : जुख़रूफ–२८)

शिर्क जली की अहमियत कम करना जायज नहीं

यह हरगिज जायज नहीं कि नये इस्लाही व दावती तकाजां और जमाने की नई जरूरतों के असर से "शिर्क जली की अहमियत को कम कर दिया जाय। या "सियासी इताअत" और इन्सानों के बनाये हुए किसी कानून के कबूल करने को और गैर अल्लाह की इबादत को एक दर्जे में रखा जाये और दोनों पर एक ही हुक्म लगाया जाये। या यह समझा जाये कि शिर्क जाहिलियत कदीम की बीमारी और खराबी और जेहालत की एक भद्दी और भोंडी शक्त थी जो इंसान गैर तरक्की याफता दौर ही मैं इख्तेयार कर सकता है। अब उसका दौर गुजर गया, इंसान बहुत तरक्की कर चुका है। यह दावा वाकयात के खिलाफ है। शिर्क जली बल्कि खुली हुई बुतपरस्ती आज भी एलानिया तौरपर मौजूद है और कौमों की कौमें, पूरे–पूरे मुल्क यहां तक कि बहुत से मुसलमान शिर्क जली में मुब्तला हैं। और कुरआन का यह एलान आज भी सादिक है।

तर्जुमा :– "और उनमें से अक्सरों का हाल यह है कि अल्लाह पर यकीन लाते और उसके साथ शरीक भी ठहराए जाते हैं। (यूसुफ : १०६) सिर्फ इतना ही नहीं यह अंबियाए किराम की दावत की एक तरह की नाकदरी है और यह चीज ईमान व अकीदे को कमजोर बनाती है।

मौलाना मुहम्मद इस्हाक हुसैनी के इन्तिकाल पर इदारा दुखी है और मौलाना मुहम्मद सलमान हुसैनी और मौलाना मुहम्मद सुहैब हुसैनी और उनके सभी करीबी लोगों से तअज़ियत करता है और मौलाना के लिए मग्फिरत की दुआ करता है।

12वीं किस्त

सीरतुन्नबी

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अख़लाक

अल्लामा शिबली नोमानी

यहूद व नसारा के साथ बर्ताव

सामान्य आचारण में काफिर व मुस्लिम, दोस्त व दुश्मन, अपना–पराया का भेद भाव न था। अबरे रहमत दश्त व चमन पर यकसां बरसता था (दया का बादल वन व वाटिका पर समान रूप से बरसता था), (यहूद को आंहजरत सल्ल० से जितनी घोर अदावत थी उसकी शहादत खैबर की लड़ाई तक की एक घटना से मिलती है।) लेकिन आप का व्यवहार मुद्दत तक यह रहा कि जिन बातों की निस्बत मुस्तकिल हुक्म नाजिल न होता, आप उन में से उन्हीं का अनुसरण करते।

एक दफा एक यहूदी ने बरसरे बाजार कहा, 'कसम है उस ज़ात की जिसने मूसा को तमाम अंबिया पर फ़जीलत दी। एक सहाबी यह खड़े सुन रहे थे। उन से रहा न गया। उन्होंने पूछा क्या मुहम्मद सल्ल० पर भी। उसने कहा हां। उन्हों ने गुस्सा में एक थप्पड़ उसको मार दिया। आंहजरत सल्ल० के न्याय व अखलाक पर दुश्मनों को भी इतना भरोसा था कि वह यहूदी सीधा आप की खिदमत में हाजिर हुआ और घटना बयान की। आप ने उन सहाबी पर नाराजगी ज़ाहिर फ़रमाई। (बुखारी)

एक यहूदी का लड़का बीमार हुआ तो आप उस की अयादत को तशरीफ ले गये। और उस को इस्लाम की दावत दी। उस ने अपने बाप की तरफ देखा, मानो उसकी रज़ामन्दी चाहता हो। उसने कहा कि आप जो फरमाते हैं उस को बजा लाओ। अतएव उसने कलमा पढ़ा। एक दफा सरे राह एक यहूदी का जनाजा गुजरा तो आप खड़े हो गये। (बुखारी)

एक दफा चन्द यहूदी आपकी खिदमत में आये और शरारत से अस्सलाम अलैकुम के बजाये अस्सम अलैकुम (तुम पर मौत) कहा, हजरत आइशा ने गुस्सा में आकर उनको भी सख्त जवाब दिया। लेकिन आप ने रोका और फरमाया, आइशा! बदजबान न बनो। नर्मी करो। अल्लाह हर बात में नर्मी पसन्द करता है। (मुस्लिम)

यहूदियों के साथ इन्साफ करते थे। उन के सख्त व नाजाइज तकाजों और खरी खोटी को सहन करते थे। यहूदियों और मुसलमानों में अगर व्यवहार में विरोध होता तो मुसलमानों की बिला वजंह तरफदारी न फरमाते। इस प्रकार की अनेक मिसालें अन्यत्र बयान की गयी हैं। एक दफा एक यहूदी ने आकर शिकायत की कि मुहम्मद! देखो एक मुसलमान ने मुझको थप्पड़ मारा है। आपने उस मुसलमान को उसी समय बलवाकर मना फरमायी। नसारा का शिष्ट मण्डल जब नजरान से मदीना हाजिर हुआ तो आपने उसकी मेंहमांदारी की, मस्जिदे नबवी में उनको जगह दी, बल्कि उनको अपने तौर पर मस्जिद में नमाज पढ़ने की भी इजाजत दे दी और जब आम मुसलमानों ने उन को इस काम से रोकना चाहा तो आप ने मना फरमाया। (जादुलमआद)

यहूद व नसारा के साथ खाने–पीने, निकाह व व्यवहार की इजाजत थी और उनके लिए विशेष विशिष्ट आदेश इस्लाम की शरीअत में जारी फरमाये।

गरीबों के साथ मुहब्बत व शफ़्क़त

मुसलमानों में अमीर भी थे और गरीब भी, दौलतमन्द भी और फाकाकश भी, लेकिन आंहजरत सल्ल० का बरताव सबके साथ समान था बल्कि गरीबों के साथ आप इस तरह पेश आते थे कि दुनियावी दौलत की महरूमी उनके दिलों को सदमा नहीं पहुंचाती थी। एक दफा मनुष्य होने के नाते आपका एक काम इसके खिलाफ हुआ तो अल्लाह की तरफ से इस पर जवाब देही हुई। मक्का की घटना है आप के पास कुछ प्रतिष्ठित कुरैश बैठे थे और आप उनको इस्लाम की दावत दे रहे थे कि इत्तेफाक से अब्दुल्लाह बिन उम्मे मकलूम जो अन्धे और गरीब थे उधर आ निकले और वह भी उन लोगों के साथ बैठ कर आप से बातें करने लगे। कुरैश के रईस चूंकि स्वाभिमानी और घमंडी थे, उनको यह बराबरी नागवार गुजरी। आप ने इब्ने उम्मे मकतूम की तरफ ध्यान नहीं दिया, और उस उम्मीद पर रईसों से बातें

करते रहे कि शायद बदबख़्त इस्लाम की सआदत को कुबूल कर लें और उनके दिल हक़ की लज़्ज़त से आशना हों। लेकिन खुदा को यह भेद–भाव पसन्द न आया। और यह आयत उतरीः–

तर्जुमा : पैग़म्बर ने रूखापन दिखाया और मुंह फेर लिया कि उस के पास अन्धा आया। (ऐ पैगम्बर) तुझे क्या खबर कि तेरी बातों से वह पाक हो जाता, या नसीहत हासिल करता तो नसीहत उसको नफा पहुंचाती। लेकिन जो बेपरवाई बरतता है उसकी तरफ तू ध्यान देता है और तेरा क्या नुकसान है अगर वह पाक व साफ न बने और जो शख्स तेरे पास दौड़ा आता है और वह खुदा से डरता भी है तो तू उस से बेपरवाही बरतता है। नहीं हरगिज ऐसा न कीजिए। यह नसीहत आम है जो चाहे इसको कुबूल करे। (सूरः अबस – १)

यही दीन–दुखिये इस्लाम के सब से पहले जान निछावर करने वाले बने थे। आंहजरत सल्ल० उनको लेकर हरम में नमाज पढ़ने जाते थे तो कुरैश के रईस उनकी जाहिरी बद हैसियती को देखकर यह कहते हुए उनकी हंसी उड़ाते थे :–

तर्जुमः यही वह लोग हैं जिन पर खुदा ने हम लोगों को छोड़कर एहसान किया है? (अलअनआम : ५३)

लेकिन आप उनके इस खिल्ली उड़ाने को खुशी से सहन करते थे। हजरत सअद बिन अबी बेक़ास के मिजाज में किसी कदर शेखी थी और वह अप ने को गरीबों से बालातर समझते थे। आप ने उनकी तरफ सम्बोधन करके फरमाया, तुम को जो रोजी और कामयाबी मयस्सर आती है वह इन्हीं गरीबों की बदौलत आती है। ओसामा बिन ज़ैद से फरमाया, मैं ने जन्नत के दरवाजः पर खड़े होकर देखा कि ज्यादा तर गरीब मुफलिस ही लोग इस में दाखिल हैं।

अब्दुल्ला बिन उमर बिन अल आस बयान करते हैं कि एक दफा मैं मस्जिदे नबवी में बैठा था और गरीब महाजिर लोग हल्कः बान्धे एक तरफ बैठे थे। इसी बीच आप सल्ल० आये और उन्हीं के साथ मिलकर बैठ गये। यह देखकर मैं भी अपनी जगह से उठा और उनके पास जाकर बैठ गया। आप ने फरमाया गरीब महाजिरों को बशारत हो (खुशखबरी हो) कि वह दौलत मन्दों से चालीस साल पहले जन्नत में दाखिल होंगे। अब्दुल्ला बिन अमर कहते हैं कि मैंने देखा कि यह सुनकर उनके चेहरे खुशी से चमक उठे और मुझे हसरत हुई कि काश मैं भी इनही में से होता।

एक दफा आप सल्ल० एक मजलिस में तशरीफ फरमा थे, इस बीच एक व्यक्ति सामने से गुजरा। आपने अपने पहलू के एक आदमी से पूछा, इसकी निस्बत तुम्हारी क्या राय है? उसने जवाब दिया कि यह अमीरों के तब्क़ः में से एक साहब हैं। खुदा की कसम यह इस लायक है कि अगर रिश्ता चाहे तो किया जाये और अगर किसी की सिफारिश करे तो कुबूल की जाये। यह सुनकर आप खामोश हो गये। कुछ देर के बाद एक और साहब इसी राह से गुजरे, आप ने फिर उन से उनकी राय जानना चाहा। अर्ज़ की या रसूलुल्लाह! यह गरीब महाजिरों में से है और इस लायक है कि अगर रिश्ता चाहे तो वापस कर दिया जाये और सिफारिश करे तो रद्द कर दी जाये। अगर कुछ कहना चाहे तो न सुना जाये। इरशाद हुआ कि सारे संसार में अगर इस अमीर जैसे आदमी हों तो इस से यह एक गरीब बेहतर है। (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

एक दफा कुछ गरीब मुसलमानों ने आकर आप की सेवा में प्रार्थना की कि या रसूलुल्लाह ! अमीर हम से आखिरत के दर्जे में भी बढ़े जाते हैं, नमाज, रोजा जिस तरह हम करते हैं, वह भी करते हैं, लेकिन सदकः व खैरात से जो नेकियां उनको मिलती हैं उन से हम हरूम हैं। आप ने फरमाया क्या मैं तुम को वह बात न बताऊ जिससे तुम अगलों के बराबर न हो जाओ और पिछलों से बढ़ जाओ और फिर कोई तुम्हारी बराबरी न कर सके।

अर्ज की 'हां' या रसूलुल्लाह ! बताइये। इरशाद हुआ, हर नमाज के बाद ३३–३३ दफा सुबहान अल्लाह, अल्हम्दु लिल्लाह और अल्लाह हो अकबर पढ़ लिया करो। कुछ दिनों के बाद यह वफद (शिष्टमण्डल) फिर सेवा में उपस्थित हुआ और अर्ज की या रसूलुल्लाह। हमारे दौलतमन्द भाइयों ने भी यह वजीफा सुन लिया और पढ़ना शुरू कर दिया फरामाया, यह खुदा की देन है जिसको चाहे दे। मुसलमानों से जो ज़कात वसूल होती थी, उसकी निस्बत आम हुक्म था कि "हर क़बीला के या हर शहर के अमीरों से लेकर वहीं के गरीबों में बांट दी जाये।" सहाबः इस का कठोरता से पालन करते थे। और एक जगह की जकात दूसरी जगह नहीं भेजते थे। (अबू दाऊद)

मसावात (बराबरी) के बयान में इस घटना का बिस्तार से उल्लेख है

कि एक दफा हजरत अबू बक्र रज़ि० ने किसी बात पर हजरत सलमान व बिलाल को जिनका शुमार गरीब महाजिरों में है डांटा। आपने हजरत अबू बक्र से फरमाया कि तुमने इन लोगों को दुख तो नहीं पहुंचाया? यह सुनकर हजरत अबूबक्र उन लोगों के पास आये और माफी मांगी और उन लोगों ने माफ किया।

अवाली में एक औरत रहती थी वह बीमार पड़ी। उसके बचने की कोई उम्मीद न थी। ख्याल था कि वह आज किसी वक्त मर जायेंगी। आप ने लोगों से कहा वह मर जाये तो मैं जनाजः की नमाज खुद पढ़ाऊंगा। इकेस बाद दफन की जाएगी। इत्तफाक से उसने कुछ रात गये इन्तेकाल किया। उसका जनाजः जब तैयार करके लाया गया तो आप आराम फरमा रहे थे, सहाबः ने उस समय आप को तकलीफ देना मुनासिब न समझा और रात ही को दफन कर दिया। सुबह को आप ने पूछा तो लोगों ने घटना बयान की। आप यह सुनकर खड़े हो गये और सहाबः को साथ लेकर दोबारा उसकी कब्र पर जाकर नमाज़ जनाजः अदा की। (सुनन निसाई)

हजरत जरीर बयान करते हैं कि एक दिन पहले पहर हम लोग आंहजरत सल्ल० के पास बैठे थे कि एक पूरा क़बीला सफर करके आप की खिदमत में पहुंचा, उनकी ज़ाहिरी हालत इतनी खराब थी कि किसी के बदन पर कोई कपड़ा साबित न था। नंगे तन, नंगे पैर हालत देखकर आप पर बड़ा असर पड़ा। चेहरे का रंग बदल गया। बेचैनी में आप अन्दर गये, बाहर आये। फिर हज़रत बिलाल को अज़ान देने का हुक्म दिया। नमाज़ के बाद आप ने खुत्बः दिया, और तमाम मुसलमानों को उनकी इमदाद के लिए आमादा किया।

आंहजरत सल्ल०अक्सर दुआ में फरमाया करते थे, खुदावन्दा मुझे मिस्कीन (दुखिया) जिन्दा रख, मिस्कीन उठा और मिस्कीनों ही के साथ मेरा हश्र कर। हजरत आयशा ने पूछा या रसूलुल्लाह यह क्यों? फरमया इसलिए कि यह दौलतमन्दों से पहले जन्नत में जायेंगे। फिर फरमाया ऐ आयशा! किसी मिस्कीन को अपने दरवाजा से नामुराद न फेरो, चाहे छुहारे का एक टुकड़ा ही क्यों न हो। ऐ आयशा गरीबों से मुहब्बत रखो, और उनको अपने से नजदीक करो तो खुदा भी तुमको अपने से नजदीक करेगा। (सही बुखारी)

दुश्मनों को माफी व दर गुजर

जानी दुश्मनों और कातिलाना हमलाआवरों को माफी और दरगुजर की घटना पैगम्बरों के आचरण के अलावा और कहां मिल सकती है। जिस रात को आप ने हिजरत फरमाई है कुरैश के कुफ्फार ने तय कर रखा था कि सुबह को मुहम्मद का सर क़लम कर दिया जाये, इसलिए दुश्मनों का एक दस्ता रात भर नबी के घर को घेरे खड़ा रहा। यद्यपि इस समय दुश्मनों से बदला लेने की आप में जाहिरी ताकत न थी लेकिन एक समय आया जब उन में से एक की गर्दन इस्लाम के तलवार के नीचे थी और उसकी जान सिर्फ आंहजरत सल्ल० के रहम व करम पर मौकूफ (निर्भर) थी। लेकिन सबको मालूम है कि इन में से कोई व्यक्ति इस जुर्म में कभी मक़तूल नही हुआ अर्थात जिसे कत्ल किया गया हो।

हिजरत के दिन कुरैश ने आंहजरत सल्ल० के सर की कीमत मुकर्रर की थी और एलान किया था कि जो मुहम्मद का सर लायेगा या जिन्दा गिरफतार करेगा उसको सौ ऊंट इनाम में दिये जायेंगे। सुराकः बिन जाशम पहले व्यक्ति थे जो इस नीयत से अपने तेजरफतार घोड़े पर सवार हाथ में भाला लिए हुए आपके करीब पहुंचे, आखिर दो तीन दफा आपका चमत्कार देखकर अपनी बुरी नीयत से तौबः की और इच्छा जताई कि मुझ को सनदे अमान (प्राणदान की सनद) लिख दी जाये। अतएव अमान की सनद लिखकर उनको दी गई। (सही बुख़ारी) इसके आठ साल के बाद फतेह मक्का के मौके पर हलक–ए–इस्लाम में दाखिल हुए और इस जुर्म के बारे में एक शब्द की पूछ गछ भी बीच में नहीं आई।

उमैर बिन वहब आंहजरत का घोर दुश्मन था। बद्र की लड़ाई में मारे गये लोगों के बदला के लिए जब सारा कुरैश बेताब था, तो सफवान बिन उमैया ने उसको बहुत बड़े इनाम की लालच देकर मदीना भेजा था, कि वह चुपके जाकर, अल्लाह की पनाह, आंहजरत सल्ल० का काम तमाम कर दे। उमैर अपनी तलवार जहर में बुझाकर मदीना आया, लेकिन वहां पहुंचने के साथ उसके तेवर देखकर लोगों ने पहचान लिया। हजरत उमर ने उसके साथ सख्ती करनी चाही, लेकिन आप ने इससे मना फरमाया और अपने करीब बैठाकर उससे बातें कीं और असल राज जाहिर कर दिया। यह सुनकर वह सन्नाटे में आ गया लेकिन आप ने उसको कुछ कहा नहीं। यह देखकर वह इस्लाम लाया और मक्का में जाकर इस्लाम की दावत फैलाई। यह घटना

सन् तीन हिज्री की है। (तारीख तिब्री)

एक दफा आप एक गजवः से वापस आ रहे थे। राह में एक मैदान आया। धूप तेज थी। लोगों ने पेड़ों के नीचे बिस्तर लगा दिये। आप सल्ल० ने भी एक पेड़ के नीचे आराम फरमाया। तलवार पेड़ की डाल से लटका दी। कुफ्फार घात में लगे थे। लोगों को ग़ाफ़िल देखकर अचानक एक तरफ से एक बद्दू ने आकर बेखबरी में तलवार उतार ली। एक दम से आप जाग उठे और देखा कि एक व्यक्ति सिराहने खड़ा है और नंगी तलवार उसके हाथ में है। आप को बेदार देखकर बोला, क्यों मुहम्मद अब बताओ तुम को इस समय मुझसे कौन बचा सकता है? आपने फरमाया, "अल्लाह" यह पुर असर आवाज सुनकर उसने तलवार मियान में कर ली। इतने में सहाबः आ गये। आप सल्ल० ने उन से घटना बताई। और बद्दू को कुछ नहीं कहा। (सही बुखारी) एक दफा एक और व्यक्ति ने आपके कत्ल का इरादा किया। सहाबः उस को पकड़कर आप सल्ल० के सामने लाये। वह आप को देखकर डर गया। आप ने उससे कहा डरो नही, अगर तुम मुझे कत्ल करना चाहते भी हो तो नहीं कर सकते थे।

सुलह हुदैदिया के जमाने में एक दफा अस्सी आदमियों का एक दस्ता मुंह अंधेरे तनईम की पहाड़ी से उतर कर आया और छुपकर आंहजरत सल्ल० को कत्ल करना चाहा। इत्तेफाक से वह लोग गिरफतार हो गये। लेकिन आप सल्ल० ने उनको छोड़ दिया और कुछ कहा नहीं। कुर्आन मजीद की यह आयत इसी तरह के बारे में नाजिल हुई।

तर्जुमा : "उसी खुदा ने उनके हाथ तुम से और तुम्हारे हाथ उनसे रोक लिए।" (सूरः फतेह–२४)

खैबर में एक यहूदियः ने आंहजरत सल्ल० को खाने में जहर दिया। आप ने खाना खाया तो जहर का असर महसूस किया। आप ने यहूदियों को बुलाकर पूछा तो उन्होंने इकरार किया, लेकिन आप ने किसी से कुछ कहा नहीं, लेकिन इसी जहर के असर से जब एक सहाबी ने इन्तेकाल किया तो आप सल्ल० ने सिर्फ उस यहूदियः को किसास (खून के बदले खून) की सजादी। (हालांकि खुद आंहजरत सल्ल० को जहर का असर मरते दम तक महसूस होता रहता था) (बुखारी) (जारी)

दुश्मनों के हक में दुआ-ए-खैर

दुश्मनों के हक में बददुआ करना इन्सान की फितरी आदत है। लेकिन पैगम्बरों का मर्तबः आम इन्सानी सतह से बदर्जहः बुलन्द होता है। जो लोग उन को गालियां देते हें उनके हक में दुआ–ए–खैर करते हैं और जो उनके खून के प्यासे होते हैं वह उन को प्यार करते हैं। हिज्रत से पहले मक्का में मुसलमानों पर और खुद आंहजरत सल्ल० पर जो लगातार जुल्म ढाये जा रहे थे उस दास्तान को दुहराने के लिए भी संग दिल दरकार है। इसी जमाने में खबाब बिन एरत एक सहाबी ने अर्ज की कि या रसूलुल्लाह ! दुश्मनों के हक में बददुआ फरमाइये। यह सुनकर चेहर–ए–मुबारका सुर्ख हो गया। एक दफा चन्द सहाबियों ने मिलकर इसी किस्म की बात कही तो फरमाया मैं दुनिया के लिए लानत नहीं रहमत बनाकर भेजा गया हूं। (मुस्लिम)

वह कुरैश जिन्होंने तीन साल तक आप सल्ल० को घेरे रखा और जो आप के पास गल्ला के एक दाना के पहुचने के रवादार न थे, उनकी शरारतों के बदले में नबी की दुआ की कुबूलियत ने अबरे रहमत का सायः उनके सर से उठा लिया और मक्का में ऐसा अकाल पड़ा कि लोग हड्डी और मुर्दार खाने लगे। अबुसुफियान ने आंहजरत सल्ल० की खिदमत में हाजिर हो कर अर्ज की कि मुहम्मद ! तुम्हारी कौम मर रही है, खुदा से दुआ करो कि यह मुसीबत दूर हो, आपने फौरन दुआ के लिए हाथ उठाये और खुदा ने इस मुसीबत से उनको नजात दी। (सही बुखारी)

जंगे ओहद में दुश्मनों ने आप पर पत्थर फेंके, तीर बरसाये, तलवारें चलाईं। आपके दांत शहीद हुए। माथे से खून बह निकला, लेकिन इन हमलों का वार आपने जिस ढाल पर रोका वह सिर्फ यह दुआ थी, " खुदाया ! इन को माफ करना कि यह नादान हैं।"

वह ताइफ जिस ने इस्लाम की दावत का जवाब हंसी उड़कर और खिल्ली उड़ाकर कर दिया था, वह ताइफ जिसने आप सल्ल० को अपनी पनाह में लेने से इन्कारा कर दिया था, वह ताइफ जिस ने पाए–मुबारक को लहू लोहान किया था, उनकी निस्बत फरिश्ता गैब से पूछता है कि हुक्म हो तो इन पर पहाड़ उलट दिया जाये। जवाब मिलता है कि शायद इनकी नस्ल से कोई खुदा का परस्तार पैदा हो। (बुखारी)

दस बारह साल के बाद यहीं ताइफ इस्लाम की दावत का जवाब तीर व तफंग से देता है। जां निसारों

की लाशों पर लाशें गिर रही हैं, सहाबः अर्ज करते हैं कि या रसूलुल्लाह ! इन के हक में बददुआ कीजिए। आप दुआ के लिए हाथ उठाते हैं। लोग समझते हैं कि हुजूर उनके हक में बददुआ फरमायेंगे लेकिन आप की पाक जबान से सह शब्द निकलते हैं, "खुदावन्द ! सकीफ (ताइफ वासियों) को इस्लाम नसीब कर और दोस्ताना इन को मदीना ला।" वह तीर जो लड़ाई के मैदान में निशाने पर नहीं लगे थे, वह मदीना की मस्जिद के सहन (आंगन) में आप सल्ल० की जबान से निकल कर ठीक अपने निशाने पर लगे, अर्थात वह मदीना आकर खास मस्जिद नबवी में बैठकर जहां वह मेहमान ठहराये गये थे, मुसलमान हुए। (इब्ने सअद)

दोस का क़बीला यमन में रहता था तुफैल बिन अमर दोसी इसी क़बीला के रईस थे। वह कदीमुल इस्लाम थे। पुद्दत तक वह अपने कबीला को इस्लाम की दावत देते रहे, लेकिन वह अपने कुफ्र पर अड़ा रहा। नाचार वह आपकी खिदमत में हाजिर हुआ और कबीला की हालत अर्ज करके गुजारिश की कि उनके हक में बददुआ फरमाइये। लोगों ने यह सुना तो कहा कि अब दोस की बरबादी में कोई शक नहीं रहा, लेकिन रहमते आलम ने जो दुआ फरमाई वह यह है –

तर्जुमा : "खुदावन्द ! दोस को हिदायत कर और उनको ला।"

हजरत अबू हुरैरः की मां मुश्रिकः थी, अपनी मां को वह जितना इस्लाम की तबलीग करते थे, वह इन्कार करती थीं। एक दिन उन्हों ने इस्लाम की दावत दी तो उन की मां ने आंहजरत सल्ल० की शान में गुस्ताखी की। हजरत अबू हुरैरः को इतना दुख हुआ कि वह रोने लगे और इसी हालत में आप सल्ल० के पास आए और हाल कह सुनाया। आपने दुआ की इलाही! अबू हुरैरः की मां को हिदायत नसीब कर। वह खुश खुश घर वापस आये तो देखा केवाड़ बन्द हैं, और मां नहा रही हैं। नहाकर केवाड़ खोले और कलमः पढ़ा । (सही बुखारी)

अब्दुल्ला बिन अबी बिन सलूल वह व्यक्ति था जो उम्र भर मुनाफिक रहा और कोई मौका उसने आंहज़रत सल्ल० और मुसलमानों के खिलाफ खुफिया साजिशों और एलानिया एहानत का हाथ से जाने न दिया। कुरैश के कुफ्फार के साथ उसकी खुफिया खत व किताबत थी। ओहद की लड़ाई में एन मौके पर अपने साथियों को लेकर मुसलमानों की फौज से अलाग हो गया।

बुहतान (झूठा इल्जाम) की घटना में हजरत आयशा पर इल्जाम लगाने में वह सब से आगे था फिर भी उसकी फर्देजुर्म को रहमते आलम हमेशा दरगुजर फरमाते रहे। वह मरा तो आप ने उसकी मगफिरत की नमाज पढ़ी। इस पर हजरत उमर ने कहा, या रसूलुल्लाह ! आप इसके जनाजः की नमाज पढ़ते हैं, हालांकि उसने यह कहा और यह कहा। यह सुनकर आप मुस्कराये और फरमाया, हटो ऐ उमर! जब ज्यादा जिद किया तो फरमाया, अगर मुझे इख्तियार दिया जाता कि अगर सत्तर दफा मैं नमाज पढ़ूं कि इसकी बखशिश हो सकती है तो इस से भी ज्यादा पढ़ता। (सही बुखारी) (जारी)

प्रस्तुति तथा रूपान्तरकार :
मुहम्मद हसन अंसारी

(पृष्ठ ३७ का शेष)

सिन्धु घाटी के लोग शिव तथा शक्ति की पूजा करते थे और देवी को देवता से अधिक ऊंचा स्थान प्रदान करते थे परन्तु ऋग्वैदिक काल में शिव को कोई स्थान प्राप्त न था और देवता का स्थान देवी से कहीं अधिक ऊंचा था।

सिन्धु–घाटी के लोग लिंग पूजक थे और यह पूजा उनमें बड़ी लोकप्रिय थी परन्तु वैदिक आर्य लिंग–पूजा के विरोधी थे। वैदिक आर्य अग्नि–पूजक थे और प्रत्येक घर में अग्निशाला का होना आवश्यक था, परन्तु सिन्धु घाटी के लोग अग्नि का कोई विशेष महत्व नहीं देते थे।

(६) कला के ज्ञान में अन्तर – सिन्धु घाटी के लोग लेखन–कला से परिचित थे और कलाओं में भी वे बहुत अधिक उन्नति कर गये थे, परन्तु वैदिक आर्य संभवतः लेखन कला से परिचित न थे और अन्य कलाओं में भी वे उतने प्रवीण न थे। परन्तु काव्य कला में वे बढ़कर थे।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि सिन्धु घाटी सभ्यता तथा वैदिक सभ्यता में बहुत बड़ा अन्तर है। दोनों का अलग–अलग कालों में और विभिन्न लोगों द्वारा विकास किया गया था परन्तु दोनोंही भारत की उच्च कोटि की सभ्यताएं थीं और दोनों ही से भारत का गौरव तथा मस्तक ऊंचा उठता है।

●●●

राज पाट तथा सांसारिक सत्ता, प्रताप तथा प्रभुत्व पर भरोसा न करो इसलिए कि यह सब तुम से पहले भी रहे हैं और तुम्हारे पीछे भी रहेंगे। (शेख सअ़दी)

चौदहवीं किस्त

संक्षिप्त इस्लामी इतिहास

अब्दुल मलिक

अब्दुरसलाम किल्वाई नदवी

रमजान स० ६५ हि० में मरवान मर गया और उसी का बेटा अब्दुल मलिक बादशाह हुआ। अब बड़ी बड़ी शक्तियां केवल दो थीं। एक तरफ हजरत अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ि० थे, दूसरी तरफ अब्दुल मलिक। दोनों में जंग होने ही वाली थी कि बीच में मुख्तार का किस्सा निकल आया। यह शख्स पहले हजरत अली रज़ि० के खान्दान का दुश्मन था। एक बार हजरत इमाम हसन रज़ि० को बन्दी बना कर दुश्मन को सुपुर्द कर देना चाहता था लेकिन अब जब देश में यह खराबी देखी तो अपनी हुकूमत काईम करने के लिए झट हजरत इमाम हुसैन रज़ि० के खून का नाम लेकर खड़ा हो गया। थोड़े दिनों में सारे इराक पर उसका कब्जा हो गया। उसकी खुद नीयत ठीक नहीं थी लेकिन इतना अच्छा हुआ कि इस तरह इमाम हुसैन रजिअल्लाहु अन्हु के कातिल एक एक करके मारे गए और इन जालिमों से दुन्या पाक हो गई।

इराक पर कब्जे के बाद मुख्तार के हौसले बढ़ गए कि उसने हजरत अब्दुल्लाह रज़ि० इब्ने जुबैर रज़ि० से भी छेड़ छाड़ शुरू कर दी। आखिर हजरत मसअब रज़ि० (हजरत अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ि० के भाईऔर हजरत इमाम हुसैन रज़ि० के दामाद अर्थात हजरत सकीना रज़ि० के पति) मुकाबले पर गए जिस में उन्हें फतह हुई और मुख्तार मारा गया।

इन छोटी छोटी लड़ाइयों के बाद अब्दुल मलिक और हजरत अब्दुल्लहा बिन जुबैर रज़ि० का मुकाबला शुरू हुआ। सबसे पहले इराक में हजरत मसअब रज़ि० से मुकाबला हुआ। हजरत मसअब रज़ि० बहुत बहादुरी से लड़े लेकिन इराकियों की दगाबाजी को तो जानते ही हो, यहां भी वही हरकत की। सब के सब अब्दुल मलिक से मिल गए और मैदान में हजरत मसअब के साथ चन्द आदमी रह गए। नतीजा जाहिर है अब्दुल मलिक को विजय प्राप्त हुई और मसअब रज़ि० शहीद हो गए।

इसके बाद अब्दुल मलिक के आदेश से हज्जाम बिन यूसुफ मक्का की तरफ रवाना हुए और जाते ही शहर को घेर लिया और पत्थर बरसाने शुरू किये। कुछ ही दिनों में शहर का दाना पानी समाप्त हो गया और लोग एक एक करके साथ छोड़ने लगे। यह देख कर हजरत अब्दुल्लाह रज़ि० बिन जुबैर रज़ि० मैदान में निकले और लड़कर शहीद हो गए।

सन् ६३ हिजरी में आप की शहादत के बाद अब्दुल मलिक का कोई विरोधी नहीं रहा और बारह वर्षों के बाद फिर तमाम इस्लामी देश एक बादशाह के कब्जे में आ गये। इराक से हर समय डर रहता था। इसलिए वहां हज्जाम को मुकर्रर किया गया जिसने अपनी सख्ती से सबको खामोश कर दिया। खारजियों से भी कई लड़ाइयां हुईं। अन्ततः उनकी शक्ति हमेशा के लिए समाप्त हो गई।

अब्दुल मलिक का अक्सर जमाना ऐसे सख्त झगड़ों में गुजरा कि प्रारम्भ में कैसरे रूम से दबकर सुलह करनी पड़ी लेकिन जरा इतमीनान हुआ और मुसलमान फिर एक हुए और रूमियों से सख्त जंग हुई तो कैसरिया के स्थान पर रूमियों की बुरी प्राजय हुई। यूरोप की तरफ जीहून नदी के आसपास तुर्किस्ताान तक मुसलमान पहुंच गये। अफरीका का उत्तरी भाग पहले ही फतह हो चुका था। लेकिन अभी तक बरबरों में दम था। जहां मौका मिलता मुसलमानों पर हमला करते। अब्दुल मलिक के जमाने में उन्होंने बड़ा जोर बान्धा। मलका काहिना की शक्ति इतनी बढ़ गई थी कि थोड़े दिन के लिए मालूम होने लगा कि बस अब यहां से मुसलमानों का चल चलाव है। लेकिन हुसैन बिन नोअमान और मूसा बिन नसीर की कोशिश से उनका जोर ऐसा टूटा कि फिर उठने की सकत न रही और आन्ध्र महासागर तक फिर मुसलमानों का डंक बजने लगा।

१५ शौवाल ८६ हि० को २१ साल एक महीना पन्द्रह दिन की बादशाहत के बाद अब्दुल मलिक का स्वर्गवास हो गया।

वलीद

बाप की वसीयत के अनुसार

सन् ८६ हि० में वलीद तख्त पर बैठा।

उस समय झगड़ा फसाद कहीं नाम को न था। सारे देश में शांति थी। आपस की मेलमुहब्बत की वजह से मुसलमानों की शक्ति बढ़ गई और उन्हें बहुत अधिक सफलता मिलने लगी। एक तरफ देश का प्रबन्ध बहुत अच्छा हो गया, जगह जगह कूंवे खोदे गए, सड़कें बनीं, खैरात खाने काईम हुए, मस्जिदें तैयार हुईं, मदरसे खुले, हस्पताल जारी हुए, यतीम खाने बने, अन्धे अपाहिजों के लिए इन्तिजाम हुआ। सारा देश आबाद और खुशहाल हो गया, दूसरी तरफ मुसलमान सेनापतियों ने सारी दुन्या उलट पलट डाली। मुहम्मद बिन कासिम ने रूमियों के चीथड़े उड़ा दिये। कतीबा ने समरकन्द से काशगर तक कब्जा कर लिया और आगे बढ़कर चीन के बादशाह को कर देने के लिए मजबूर कर दिया। तारिक और मूसा बिन नसीर ने अफरीका से गुजर कर उन्दुलुस (स्पेन) फतह कर लिया और वहां से उत्तरी फ्रांस तक कब्जा कर लिया।

देखो एकता और आपस का मेल जोल कैसी बरकत की चीज है। पन्द्रह बीस वर्ष पहले यही मुसलमान थे जिन्होंने कैसर (रूम के बादशाह) से दबकर सुलह की थी और जब झगड़े मिटे और मेलजोल बढ़ा तो रूमियों की क्या हैसियत है सारी दुन्या के प्राखचे उड़ा दिये। स० ६६ हि० में वलीद का देहान्त हो गया।

सुलैमान

वलीद के बाद उसका भाई सुलैमान तख्त पर बैठा। यह बड़ा दानी और दयालु था। उसने हज्ज की सख्तियां दूर कीं ओर प्रजा को आराम पहुंचाने की कोशिश की। यदि दो चार गलतियां न हो जातीं तो हमेशा उनका नाम इज़्ज़त और मुहब्बत से लिया जाता।

ऊपर कतीबा, मुहम्मद बिन कासिम और मूसा बिन नसीर का हाल पढ़ चुके हो कि उन लोगों की वजह से मुसलमानों को कितना लाभ पहुंचा, लेकिन अफसोस सुलैमान ने कुछ तो हज्जाम की जिद में कुछ लोंगों की लगाई बुझाई से मुहम्मद बिन क़ासिम और कतीबा को कत्ल करा दिया और मूसा बिन नसीर को निकाल दिया।

ऐसे बड़े बड़े जनरलों के मारेजाने से विजय का क्रम बिल्कुल रूक गया। कुस्तुंतुनिया पर अलबत्ता हमला किया गया लेकिन कोई सफलता नहीं हुई। २० सफर स० ६६ हि० को सुलैमान का देहान्त हो गया।

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ि०

सुलैमान के बाद उसकी वसीयत के अनुसार हजरत उमर बिन अब्दुल अजीज रजियल्लाहु अन्हु खलीफा हुए। आपने कुल ढाई वर्ष हुकूमत की लेकिन इतनी ही मुद्दत में देश की काया पलट दी। हर प्रकार का अत्याचार और जियादती समाप्त हो गई। नस्ल और कौम का भेदभाव मिट गया और अमीर व गरीब एक स्तर पर आ गए। बस यह मालूम होता था कि जमाना सत्तर पछत्तर वर्ष पहले लौट गया है और हजरत अबू बक्र रज़ि० हजरत उमर रज़ि० हुकूमत कर रहे हैं।

इस्लाम की रूह जो बादशाहत के जमाने में मिट चुकी थी, अब फिर से जिन्दा हो गई। हर तरफ अल्लाह व रसूल का जिक्र (प्रवचन) होने लगा और आखिरत जिसे लोग भूल चुके थे अब फिर उसका ध्यान आने लगा। संसार तो हमेशा दीन के कदमों तले रहा है। याद करो अरब के बद्दुओं के पास क्या था लेकिन इस्लाम जो आया तो चन्द ही वर्षों में कैसर व कसरा के सिंहासन उनके कदमों के नीचे आ गए और मदीना सोने, चांदी और हीरे जवाहरात से पट गया। हजरत उमर बिन अब्दुल अजीज के समय में भी यही हुआ। दीनदारी के बढ़ते ही हर प्रकार की उन्नति के द्वार खुल गए और बिना जुल्म व जियादती के दौलत के ढेर लग गए। अगर कहीं दस बीस वर्ष जिन्दा रहते तो खुदा मालूम दुन्या कहां से कहां पहुंच जाती लेकिन अफसोस कि अभी तीन वर्ष भी पूरे न हुए थे कि सन् १०१ हि० में उनका स्वर्गवास हो गया। कहते हैं कि किसी खान्दानी दुश्मन ने जहर दे दिया था।

यज़ीद बिन अब्दुल मलिक

बनी उमय्या बादशाहत के आदी हो चुके थे, इसीलिए वह हजरत उमर बिन अब्दुल अजीज से नाखुश थे चुनानचि उनके बाद यजीद बिन अब्दुल मलिक तख्त पर बैठा तो उसने उन के तरीके को बिल्कुल बदल दिया। नतीजा यह हुआ कि उन्नति फिर रूक गई और आरमीनिया के थोड़े से इलके की फतह के सिवा बाकी आपस में ही झगड़े होते रहे जिस से राज्य को सख्त हानि पहुंची।

हिशाम

यजीद के बाद हश्शाम सन् १०५ हि० में बादशाह हुआ। यह बहुत ही होशियार बुद्धिमान और बहादुर था। उसके जमाने में सलतन को काफी शक्ति प्राप्त हुई। अफरीका में फिरएक

बार बरबरियों ने जोर पकड़ा परन्तु उनकी भारी प्रजय हुई और यह कहानी हमेशा के लिए समाप्त हो गई। सूडान के कुछ शहर फतह हुए। तुर्किस्तान में सख्त मारका रहा। रूमियों से जंग हुई और सब में मुसलमानों को कामयाबी हुई।

हश्शाम की नीति व उपाय से सलतनत में फिर जान आ गई लेकिन घुन तो पहले ही लग चुका था। बात यह है कि बनी उमय्या बादशाह थे और सब जानते हैं कि बादशाह तो किसी की सुनते नहीं हैं बस अच्छा बुरा जो उनके जी में आता है करते रहते हैं लेकिन न लोग सहाबा का जमाना देख चुके थे। वह हजरत अबू बक्र रज़ि० की परहेजगारी (संयम), हजरत उमर रज़ि० का इंसाफ, हजरत उसमान की नेकी और हजरत अली रज़ि० की सच्चाई ढूंढते थे लेकिन वह इन बादशाहों में कहां थी। यही कारण है कि जब औसर मिलता कोई न कोई लड़ाई शुरू हो जाती। हश्शाम के जमाने में भी हजरत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के पोते हजरत ज़ैद ने जिहाद किया और यदि कूफा के लोग साथ न छोड़ देते तो बनी उमैय्या का तख्ता उलट जाता लेकिन कूफा वालों को जानते हो कि कैसे दगाबाज और डरपोक थे। मुकाबला पड़ा तो साथ छोड़ कर अलग हो गए और हजरत शहीद हो गए। सन् १२५ हि० में हश्शाम का देहान्त हो गया।

वलीद द्वितीय

हश्शाम के बाद अब्दुल मलिक का पोता वलीद तख्त पर बैठा। यह बहुत बद मिजाज और आवारा था। हर समय शराब पीता और बदकारी (दुष्कर्म) में लगा रहता। उसकी इन हरकतों से लोग आजिज आ गए और सन् १२६ हि० में उसको कत्ल कर दिया।

यज़ीद द्वितीय

वलीद के बाद यजीद बादशाह हुआ। उसके समय में भी आपस में झगड़े रहे जिससे बनी उमय्या की शक्ति टूट गई और उनके खिलाफ काम करने वालों को अवसर मिल गया। छः महीने की बादशाहत के बाद ज़िल हिज्जा (बकरईद) सन् १२६ हि० में यजीद मर गया।

मरवान द्वितीय

यज़ीद तृतीय के बाद लोग अब्दुल मलिक के पोते इब्राहीम को बादशाह बनाना चाहते थे लेकिन अब्दुल मलिक के भतीजे मरवान बिन मुहम्मद ने इब्राहीम को पराजित किया और खुद बादशाह बन गया। उस की इस हरकत से बनू उमैय्या बहुत नाखुश हुआ और सुलैमान बिन हश्शाम एक बड़ी फौज लेकर मुकाबले पर आया। कनसरीन के निकट बड़ी घमासान की लड़ाई हुई। सुलैमान की पराजय हुई और उसके तीस हजार आदमी मारे गए।

इस पर बस नहीं बल्कि और बीसों झगड़े लगे रहते थे। कभी कूफा में लड़ाई होती कभी फिलिस्तीन में झगड़ा होता। कभी हिजाज में फसाद होता। गरज की मरवान के लिए रोज मुसीबत रहती। एक तरफ तो यह किस्से रहते और दूसरी तरफ अब्बासी ज़ोर बान्ध रहे थे और ऊपर कई जगह हम पढ़ चुके हैं कि लोग बनी उमैय्या को दिल से ना पसन्द करते थे। हजरत इमाम हुसैन रज़ि० की शहादत के बाद यह नफरत बढ़ गई। लोग दिल ही दिल में तदबीरें सोचते रहे और जब अवसर मिलता चढ़ दौड़ते। अब्बासी मुद्दत से अन्दर ही अन्दर अपना काम कर रहे थे। उनके आदमी चारों तरफ फैले हुए थे और चुपके चुपके लोगों को अपने में मिला रहे थे। संयोग से उन्हें अबू सालिम खुरासानी एक बड़ा जबरदस्त आदमी मिल गया। जिसने कुछ ही वर्षों में सारे देश में उनका प्रभाव फैला दिया।

तैयारी पूरी हो चुकी थी कि अचानक मरवान को खबर हुई और अब्बासियों के सरदार इब्राहीम इब्ने मुहम्मद बिन अली बिन अब्बास रज़ि० पकड़ कर बन्दी बना दिए गए जहां उनका देहान्त हो गया लेकिन कहीं इन बातों से ऐसे मामिले समाप्त होते हैं। इब्राहीम के बाद उनके खानदान के लोग भाग कर कूफा पहुंचे और अपने सहयोगी अबू मुस्लिम के यहां ठहरे। अबू मुस्लिम चाहता था कि हजरत अली रज़ि० के खान्दान से किसी को खलीफा बनाए लेकिन जब उनमें से कोई तैयार न हुआ तो इब्राहीम के भाई अबुल अब्बास सफ्फाह के हाथ पर बैअत हुई।

बादशाह होते ही सफ्फाह ने अपने चचा अब्दुल्लाह बिन अली को मरवान की तरफ भेजा। दजला की शाख नहर ज़ाब के किनारे दानों फौजों का मुकाबला हुआ। मरवान बड़ी बहादुरी से लड़ा लेकिन समय आ चुका था। भारी पराजय हुई। मरवान जान बचाकर भागा लेकिन अब्बासी सेनाएं पीछे थीं।

अन्ततः छः महीने की भागदौड़ के बाद २६ ज़िलहिज्जा (बकरईद) सन् ३२ हि० को मरवान मिस्र के गांव बूसारी में मारा गया और बनी उमय्या की इस बादशाहत का खात्मा हो गया। (जारी)

अनुवाद : हबीबुल्लाह आज़मी

किस्त एक

निरन्तर विपत्तियों तथा मुसीबतों का आक्रमण

कारण और इलाज

शमसुल हक़ नदवी

हमारी आजकी दुन्या में सुख शान्ति सुरक्षा के माध्यम और इन्तिजाम में बड़ी उन्नति कर ली है परन्तु मानव जीवन हर क्षण खतरे में है। घटनाएं और हादसे कुछ इस प्रकार पेश आ रहे हैं कि इंसानी अकल हैराना है। जो हानियां बड़ी बड़ी लड़ाइयों में पेश आतीं थीं वह अब दुर्घटनाओं, आपदाओं और इंसानी गलतियों के नतीजे में पेश आ रही हैं। नुकसानों का यदि अनुमान लगाया जाए तो प्राचीन युग और नवीन युग में कोई बड़ा अन्तर दिखाई नहीं देगा। जबकि यह युग सुरक्षा के प्रबन्धों, दुर्घटनाओं की पूर्व जानकारी की व्यवस्था और इलाज और सहायता के एतबार से पहले के युगों से बहुत अच्छी दशा में है।

सूखा, बाढ़, समुद्री तूफान, जलजला, स्वारियों की भयानक टक्कर, जहाजों का गिरना और अति बेबसी की दशा में इंसानी जानों का हलाक होना, इमारतों का गिरना, मिट्टी के तूदों और पहाड़ों की चट्टानों के नीचे दबकर मर जाना इसके अतिरिक्त कत्ल, गारतगिरी और इन्सानी खून बहाना ऐसा आम हो गया है जैसे अब इंसान की कोई कीमत ही बाकी नहीं रह गई है। वह गाजर मूली की तरह काट कर रख दिया जाता है। ऐसा क्यों हो रहा है? मुसीबतों की यह मार और आफतों का यह लगातार आना क्यों है? इसके पीछे कौन सी शक्ति काम कर रही है। इस पर हम गौर नहीं करते। जब कोई घटना और आफत आ जाती है तो हम इसका कारण बता कर संतुष्ट होजाते हैं और अपने पुराने रंग ढंग पर कायम रहते हैं। मकान इसलिए गिरा कि बहुत पुराना हो गया था। सवारी इसलिए टकराई कि ड्राइवर को नींद आ गई थी। जहाज इसलिए गिरा कि किसी पुर्जे ने काम करना छोड़ दिया था। समुद्र में तूफान इसलिए आया कि हवा का दबाव कम हो गया था। रेल इसलिए टकराई कि सिंगानल गलत दे दिया गया था। बीमार इसलिए स्वस्थ नहीं हो सका कि सारी उन्नतियों के बावजूद मर्ज की सही पहचान न हो सकी थी या समय से डाक्टरी सहायता नहीं पहुंच सकी थी। एक शख्स काफी तंदुरुस्त था अचानक हालत बिगड़ी और उसने दम तोड़ दिया। इस से अधिक यह की सन्साधानों से मालामाल और सुरक्षा कवच में रहने वाला व्यक्ति मन की शान्ति से वंचित है। वह अपने को खतरों से घिरा हुआ महसूस करता है। ऐसा क्यों हो रहा है? तमाम घटनाओं के पीछे कौन सी शक्ति काम कर रही है ? इस का उत्तर वैज्ञानिकों के पास नहीं है। इसका उत्तर तो केवल कुर्आन की आयतों और इल्मे नबूवत (नबियों की शिक्षा) की रोशनी में मिल सकता है लेकिन हम इन दोनों की तरफ ध्यान नहीं देते बस जाहिरी कारणों को बयान करके खामोश हो जाते हैं और जीवन की गाड़ी अपने पुराने ढर्रे पर चलती रहती है।

डगमगाती है, झटके खाती है, लोग गिरते हैं और मरते हैं मगर किसी को यह मालूम करने की फिक्र नहीं होती कि गाड़ी का कौन सा पुर्जा ढीला है जिससे झटके लग रहे हैं गिर और मर रहे हैं। परिस्थितियों की गम्भीरता अपनी आखिरी रोल अदा करने की तरफ तेजीसे बढ़ रही है। नहीं कहा जा सकता है कि किस क्षण पूरी गाड़ी टूट कर चकनाचूर हो जाएगी। कियामत (महा प्रलय) का सूर (बिगुल) फूंकने वाला फरिश्ता सूर मुंह से लगाए खड़ा है निगाहें उसकी आसमान की ओर लगी है कि हुक्म हो और सूर फूंक दे और ज़िन्दगी की गाड़ी को ऐसा झटका लगे कि सूरज व सितारे, जमीन व आसमान और पहाड़ व नदी सब को हिलाकर बिल्कुल तोड़ कर और गिरा कर रख दे और "जब आसमान फट जाएगा और जब तारे झड़ पड़ेंगे और जब नदियां बहकर (एक दूसरे में) मिल जाएंगीं।"

"जब सूरज लपेट लिया जाएगा और जब तारे बेनूर (प्रकाशहीन) हो जाएंगे और जब पहाड़ चलाए जाएंगे।" (कुर्आन) का दृश्य सामने आ जाए और कहा जाए।

"हातिफ गैबी आवाज दे रहा है। कि तुम उसकी तरफ आजाओ जिसके कब्जे में यह सब कुछ है। तुम उसके भेजे हुए रसूल (सल्ल०) ने जिन्दगी की अन्धेरी राहों में चलने के लिए प्रकाश का जो दिया जलाया है उसकी रोशनी में चलना शुरू कर दो। तुम्हारी गाड़ी के ढीले पुर्जो ठीक हो जाएंगे, गिरने और टूटने का भय जाता

रहेगा।

हम यकसू (एकाग्र) होकर गम्भीरतरसे गौर करें तो मालूम होगा कि हम जिन बलाओं में गिरफतार हैं वह अपनी लाई हुई बलाएं हैं। संसार का बनाने वाला जो इस रंग बिरंगी दुन्या का मालिक व शासक है फरमाता है–

"तुम पर जो मुसीबत आती है तुम्हारे हाथों की लाई हुई होती है और तुम्हारे अमल (कर्म) का नतीजा होती है (यह भी ऐसी हालत में है) कि अल्लाह तआला बहुत कुछ दरगुजर से काम लेता है। (अर्थात अनदेखी कर देतो है)

उस असली मालिक ने जहां अपने आज्ञापालन का आदेश दिया है अपने आदेशों पर अमल करने और अपने रसूल (सल्ल०)की शिक्षाओं पर अमल करने का हुक्म दिया है–

"और जो चीज को पैग़म्बर दें वह ले लो और जिससे मना कर दें (उससे) बाज रहो।"

वहीं इस बात की भी तालीम दी है मुझ से मांगो, सुख–दुख में मुझ को पुकारो, भूलचूक, गलती और गुनाह के बाद मेरी तरफ रूजूअ करो (झुको) तौबा व क्षमायाचना व माफी मांगो, मुझसे कुशल मंगल मांगो रोजी में बढ़ोतरी और खुशहाली मांगो, मेरी पकड़ से पनाह (सुरक्षा) मांगो। उसने फरमाया : मैं अपने उस बन्दे से अधिक खुश होता हूं जो मुझ से मांगता है। उसने अपना पता बता दिया अपने रसूल (सल्ल०) के द्वारा कहलवाया –

"और (ऐ पैग़म्बर) जब तुम से मेरे बन्दे मेर बारे में पूछें तो (कह दो कि) मैं तो (तुम्हारे) पास हूं जब कोई पुकारने वाला मुझे पुकारताहै तो मैं उसकी दुआ कुबूल करता हूं तो उनको चाहिए कि मेरे आदेशों को मानें और मुझ पर ईमान लाएं ताकि नेक रास्ता पाएं।"

वह कितना रहीम व करीम (दयावान व कृपालू) है कि खुद ही अपना पता भी बताता है और खुद ही मांगने का ढंग भी बता रहा है। कहता है इस तरह मांगो –

"ऐहमारे पालनहार हम को दुन्या में भी रहमत (अनुकम्पा) प्रदान कर और दोजख के अजाब से सुरक्षित रख (अल बकरः २०१) क्या "फिद दुन्या हसनः" में दुन्या की हर भलाई, सेहत, कुशल मंगल, आकस्मिक आपदा से सुरक्षा, बीमारियों व विपत्ति, रोजी की तंगी, दुश्मन के भय, कारोबार में बरकत, पवित्र कर्मों की क्षमता सारी चीजें नहीं आ गईं। बन्दों को इस पर गौर करना चाहिए। दूसरे स्थान पर दूसरे अन्दाज से भूल चूक की माफी मांगना इसी प्रकार बताया गया–

"ऐ हमारे पालनहार! हम को न पकड़, अगर हम भूल जाएं या चूक जाएं। ऐ हमारे पालनहार न रख हम पर बोझ जैसे तुम ने उन लोगों पर रखा जो हम से पहले थे और मत उठवा हम से वह जिसकी ताकत नहीं और माफ कर हमें और बख्श और रहम कर हम पर। तू हमारा सहारा है हमारीमदद कर ..... न मानने वालों के मुकाबले में।"

रब्बनावला तुहम्मिलना माला ताक़तलना बिही" में बर्दाश्त से बाहर बीमारी,मुसीबत और जालिमों का जुल्म आ गया। जब आका यह मांगना खुद सिखा रहा है तो फिर इस की कुबूलियत (स्वीकृति) में क्या सन्देह, लेकिन बन्दा यकीन के साथ सच्चे दिल से मांगे तो!

एक और आयत में अपनी औलाद और कुटुम्ब की भलाई व कल्याण और आंखों की ठंडक मांगने का ढंग इस प्रकार बताया–

"ऐ हमारे पालन हार ! हमारी बीवियों और औलाद से हमारी आंखें ठंडी कर और हम को परहेजगारों (संयमियों) का पेश्वा (अग्रणी) बना।"

क्या आंखों की ठंडक में औलाद का सुचरित्र होना, नेक आदत वाला और सद व्यवहार होना, मां बाप की नाफरमानी (अवज्ञा) से बचना और सेवा के लिए हर समय तैयार रहना शामिल नहीं, लेकिन कब और कितनी बार हम यह दुआ मांगते हैं। लड़कों की सरकशी और बेपरवाही की शिकायत तो हम करते हैं और जगह जगह इस का रोना राते हैं लेकिन क्या कभी अपने आका के सिखाए हुए इस तरीके के अनुसार उस से मांगते और उसके सामने रोते हैं फिर काहे का रोना रोते हैं। और एक जगह हजरत यूसुफ अलैहिस्सलाम की जबान से कहलवाया –

"आसमानों और जमीनों के पैदा करने वाले ! तू मेरा काम बनाने वाला है दुन्या और आखिरत में। मार मुझ को अपना आज्ञाकारी और मिला मुझ को नेकों से।"

क्या हम जब अपने मौला को अपना वली (स्वामी) और कारसाज (काम बनानेवाला) के विश्वास के साथ उससे लौ लगाएंगे, मुसलमान की हालत में मौत और सदाचारी होने की प्रार्थना करेंगे तो वह हम को आफतों और बलाओं से बचाएगा नहीं? आफत औरबलाओं में घिरजाने के बाद उस से छुटकारा पाने का तरीका हजरत यूनुस अलैहिस्सलाम की ज़बान से इस तरह अदा कराया–

"तेरे सिवा कोई पूज्य नहीं तू पाक है और बेशक मैं कुसूरवार हूं।"

तिरमिजी शरीफ में हुजूर सल्ल०

का यह कथन मनकूल (उद्धत) है जो मुसीबतों का मारा यह दुआ करेगा अल्लाह तआला उसकी दुआ कुबूल करेगा। एक शख्स ने सवाल किया अल्लाह के रसूल (सल्ल०) यह दुआ हजरत यूनुस (अलैहि०) के लिए खास थी या आम मुसलमानों के लिए है। आप (सल्ल०) फरमाया क्या तुमने इस आयत पर गौर नहीं किया।

"हम ने उसे गम से निजात दी (देखो) इसी तरह हम ईमान वालों को निजात देते हैं।" हम अपने हाल पर गौर क़रें। अगर हम ईमान में पक्के हैं और अपने खुदा पर यकीन रखते हैं उस से यह दुआ करें तो वह कुबूल न करेगा जबकि वह खुद ही फरमा रहा है और इसी तरह हम मोमिनीन को नजात देते हैं। मगर अफसोस हमने मांगना छोड़ दिया। केवल हमने शिकवा व शिकायत और मुसीबतों के कारण की खोज अपनी रीत बना ली है। फिर खुदा की सहायता कैसे आए, बलाए क्यों कर दूर हों। ईमान वालों के बाद भी, मुसलमान घराने में पैदा होनेके बावजूद हम हर क्षण खतरे में होते हैं कि हमारा अनाद काला दुश्मन हम को राह से हटा न दे। पथ भ्रष्टता व गुमराही के ग़ार में गिरा न दे। कभी हालात का बहाना बना कर कभी कोई और जाल लाकर।

हमारे दयावान मालिक ने हमको सिखाया कि तुम हम से इस तरह भी मांगा करो कि तुम को दृढ़ता की क्षमता तो हमी देते हैं। फरमाया कहो –

"खुदाया ! हमें सीधे रास्ते लगा देने के बाद हमारे दिलों को डामाडोल न कर और हमें अपने पास से रहमत (करूणा) प्रदान कर यकीनन तूही है कि तुझ से बड़ा बखशिश में कोई नहीं।" अनादि काल से सत्यवादियों और असत्यवादियों का विवाद चला आ रहा है। असत्यवादी हमेशा सत्यवादियों के पीछे पड़े हुए हैं। पूरे संसार में सत्यवादी और असत्यवादी में संघर्ष भयंकर उत्पात के रूप में जाहिर होता रहता है।

हमारे मालिक ने हम से कहा इन हालात में हमारी तरफ इस तरह झुको और मांगो "ऐ हमारे आक़ा! हमें इन्कार करने वालों के लिए फितना (उपद्रव) न बना दे। और ऐ हमारे रब हमारी गलतियों को माफ फरमा। बेशक तूही जबरदस्त और बुद्धिमान है।

हम पिटपिटा कर रोपीट करके या कुछ राजनैतिक बयान देकर और उपाय इख्तियार करके बैठ रहते हैं लेकिन क्या कभी तनहाई में बैठकर और दिल की गहराइयों से अपने असली मालिक को पुकारते हैं जिसने ऐसी परिस्थितियों में मांगने का वह ढंग बताया जो अभी बयान किया गया। फिर हमारी मदद कैसे हो। यह संसार फानी (नाशवान) है। यहां की हर चीज आनी जानी है। इसपर हमारी आस्था और विश्वास है परन्तु व्यवहारिक जीवन में हम इस मिट जानेवाले संसार को सदैव रहनेवाली दुन्या समझते हैं। इस में लीन होकर इसके स्वाद में डूब कर अपने कृपालु पालनहार को भूलजाते हैं कि उस ने हमको सचेत किया है कि यह संसार जिस की कीमत हमारे नजदीक मच्छर के परके बराबर भी नही है। इसमें आकर्षण और सुन्दरता हम ने इसलिए रखी है कि देखें तुम में कौन अच्छा कर्म करता है। अल्लाह ने फरमाया –

जो चीज ज़मीन पर है हमने उसको जमीन के लिए आरईश (साज सज्जा) बनाया है ताकि लोगों की परीक्षा लें कि उन में कौन अच्छा कर्म करने वाला है। (जारी)

अनुवाद हबीबुल्लाह आजमी

●●●

(पृष्ठ ३६ का शेष)

हुजूरे अकरम सल्ल० का चरित्र व आचरण, व्यवहार व आदतें, पसन्द और नापसन्द को भी इसी जज़्बे व शौक़ से हज़रात संगृहित (जमा) करते रहे और अपनी ज़िन्दगी सर्फ करते रहे। उद्देश्य इन सब बुजुर्गों का यही था कि ज़ाते गिरामी (आप सल्ल०) से लगाव हमेशा बढ़ता रहे। शौक की आग जीवन की हर सांस के साथ बढ़ती रहे। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रेम का यह चिराग कभी मद्धिम न हो और यह शोला कभी सर्द न होने पाए। जिन लोगों की तबीअतें मौजूं थीं। (शेर कहने की योग्यता थी) उन्होंने अशआर (छन्दों) और नज़्मों की शकल में अपने दिलों की कैफ़ियत (दशा) का इज़हार करते रहे। यह सिलसिला उसी ज़माने से अब तक क़ायम है। इस प्रकार की शाएरी को अरबी में "अलमदाइहुन्नबवीयः" और फ़ारसी में इस को नअ़त कहा जाता है। नअ़त का शाब्दिक अर्थ सिफ़त (विशेषता) के हैं और सच तो यह है कि सिफत वास्तव में उन्हीं की सिफ़त है जिनके अन्दर ब्रह्माण्ड (कायनात) की तमाम सुन्दरता पूरे कमाल के साथ मौजूद है जैसे हदीसका अनुवाद बात या वार्तालाप है मगर शब्दावली में उन्हीं की बात को हदीस कहते हैं जिनकी बात में ब्रह्माण्ड की तमाम सच्चाईयां जमा हैं।

अनुवाद–हबीबुल्लाह आजमी

मीरास में लड़कियों का हिस्सा

क़ुरआन व हदीस की रौशनी में

मौलाना बदीउज़्ज़मा नदवी व क़ासमी

मीरास से महरूम रखना लड़कियों के हुकूक पर गासिबाना कब्जा है

मीरास की तकसीम इज्तिमाई व मुआशरती जिन्दी के अहम तरीन मसाएल में से है और इनकी आदिलाना तकसीम पर मुआशरे की फलाह व बहबूद का बहुत कुछ मदार है। लेकिन अफसोस कि एक हक़्के वाजिब जिसको सदियों से फरामोश किया जा रहा है और हक भी किसका एक जईफ व नातवां मखलूक का। फरामोश करनेवाले कौन हैं? बाप और भाई जिनके कांधों पर इस कमजोर मखलूक की किफालत का बोझ रखा गया है। एक लड़की के लिए महब्बत व प्यार और खैर ख्वाही व हमदर्दी के जज्बात सबसे ज्यादा उसके बाप और भाई के दिल में होने चाहिए। लेकिन यही लोग उसके वाजिब हक से उसको महरूम करें तो इंसानियत और भाई–बिरादरी का दर्दनाक अलमिया (त्रासदी) है। खुद मुहाफिज रहजन हो जाए तो मुहाफिजत क्यों हो सकती है।

पढ़ने वालो। आप दिल पर हाथ रखकर बताएं कि क्या लड़की खुदा की मखलूक नहीं? क्या वह इंसानियत में बराबर की शरीक नहीं? क्या उसके वजूद से आदमियत की तकमील नहीं? क्या उसके साथ जरूरियात नहीं? इन तकाजों को तस्लीम कर लेने के बावजूद भी उसके साथ सौतेला बरताव किया जाता है, उसके हुकूक की पामाली की जाती है, उसको बाप की विरासत में शरीक नही किया जाता है, क्योंकि भाई नाग बनकर सारी जायदाद पर बैठ जाते हैं। क्यों मीरास में उसको हिस्सादार नहीं बनाते? सब चाहते हैं कि समाज अच्छा हो, पाकीजा हो, इंकलाबी हों, लेकिन उसके हुकूक को हज्म करके हम कैसे इंकलाबी बन सकते हैं? उस मजलूम की विरासत छीन कर हम कैसे सालेह बन सकते हैं? दर हकीकत यह लड़कियों के साथ सरासर जुल्म है और सरेआम उनके हुकूक पर गासिबाना कब्जा है। यह अफसोसनाक पहलू है। कहीं उसकी विरासत का मसला तो जेरे गौर आता ही नहीं। ख्याल भी नहीं आता कि लड़की भी विरासत में हिस्सेदार है और उसका हके विरासत भी दीन का कोई शोबा है। अदालतों, दारूलकजा और दारूल फतवा में भी तलाक, जहेज और दूसरे तनाजों के मसले जाते हैं, विरासत को दीन से अलग ही कर दिया है और जहेज की खुराफात को लाजिम निकाह कर दिया है। बड़े दर्द के साथ यह कहना पड़ता है–

हकीत खुराफत में खो गई
यह उम्मत रिवायत में खो गई

इस पामाल किए गए हक और फरामोश किए फरीजे की याद दिहानी मेरे लिए बाइसे सआदत है। किसी कमजोर तबके की हिमायत के लिए उठ खड़ा होना बहुत बड़ी इबादत है और सबसे बढ़कर बशारत है जो हदीस शरीफ में वारिद है कि जब उम्मत में फसाद आ जाए और वह सुन्नतों को फरामोश कर बैठे उस वक्त जो शख्स मेरी सुन्नत को जिन्दा करे तो उसके लिए सौ शहीदों का अज्र है।''

मीरास की सही तकसीम फर्ज ऐन है

कुरआन ने इसको कितनी अहमियत दी है इसका अंदाजा इससे किया जाए कि अल्लाह तआला ने फिर आखिर में इसका जिक्र किया है। पहले इस मसले को मुख्तसरन बतौर उसूल कुल्ली बयान फरमाया है। इरशाद है– मर्दों के लिए उस माल में हिस्सा है जो मां–बाप और करीबी रिश्तेदारों ने छोड़ा हो और औरतों के लिए भी उस माल में हिस्सा है जो मां–बाप और करीबी रिश्तेदारों ने छोड़ा हो, चाहे थोड़ा हो या बहुत और यह हिस्सा अल्लाह की तरफ से मुकर्रर है।' (सूरे–निसा)

इसके बाद तीन आयतों का वक्फा है। इसके बाद फिर उसी मजमून की तरफ मुतवज्जिह किया गया है और जो बात तीन आयतों से पहले कही गई थी उसकी वाजेह तशरीह की गई है। इरशाद है – 'अल्लाह तुम्हें तुम्हारी औलाद (की मीरास) के बारे में वसीयत करता है, मर्द का हिस्सा दो औरतों के हिस्से के बराबर है, अगर दो से ज्यादा औरतें ही हों तो उनके लिए

दो–तिहाई हिस्सा उस माल का है जो मूरिस छोड़ गया हो और अगर एक ही लड़की हो तो उसके लिए आधा हिस्सा है।' (सूरे–निसा)

कुछ मुफस्सिरीन ने यहां एक निहायत बारींक और लतीफ नुक्ता बयान किया है कि अल्लाह अपने बन्दों पर बनिस्बत मां–बाप के भी ज्यादा मेहरबान है,मां–बाप को उनकी औलाद के बारे में वसीयत कर रहा है इससे मालूम हुआ कि मां–बाप अपनी औलाद पर इतने मेहरबान नहीं जितना मेहरबाना अल्लाह अपनी मखलूक पर है। जरा गौर करें कि कितना अहम है वह हुक्म और वह मसला जिसको अल्लाह तआला ने पहले वाजेह बयान किया फिर उसकी तफसील बयान की। किसी मसले को दिलनशीं करने का यह असरदार तरीका है।यह मसला इतना तवज्जो का मुस्तहक कि उसकी तशरीह (ब्याख्या) इंसानी जेहन पर नहीं छोड़ी गईं बल्कि उसकी तशरीह खुद कुरआन ने अपने जिम्मे ले ली। कुरआन का इस मसले को इस अंदाज से बयान करने का मकसद यह है कि यहां अपनी राह पर चलने की गुंजाइश नहीं है, यह मूरिस की राय और इख्तियार पर मौकूफ नहीं बल्कि मीरास के हिस्से अल्लाह की तरफ से तय है। हिस्सों की हर तकसीम और तर्के का हर इस्तहकाक शरीअते इलाही का मुकर्रर किया हुआ कानून है जो इसको छोड़ता है। वह फर्ज ऐन छोड़ता है।

आयाते मीरास पर एक नजर और एक सबक आमेज वाक्या

मीरास की आयतों में वाजेह तौर पर पांच कानूनी हुक्म दिए गए हैं। पहला यह कि मीरास सिर्फ मर्दों का हिस्सा नहीं बल्कि औरतें भी इसकी हकदार हैं। दूसरा यह कि मैयत की मिलकियत में जो चीज थी, चाहे बड़ी हो या छोटी हर चीज में हर वारिस का हक है। किसी वारिस को कोई खास चीज बगैर तकसीम के खुद रख लेना जायज नहीं। यहां तक कि मैयत के बदन के कपड़े भी तर्के में शामिल होते हैं। उनको हिसाब में लगाए बगैर यूं ही यह कि विरासत का कानून हर किस्म के माल व इमलाक पर जारी होगा। चौथा यह कि मुख्तलिफ वारिसों के जो मुख्तलिफ हिस्से कुरआन ने तय किए हैं, उनमें किसी को अपनी राय और कयास से कमी बेशी, का कोई हक नहीं। पांचवा यह कि विरासत के जरिये जो मिलकियत वारिसों की तरफ मुंतकिल होती है वह मिलकियत जबरी है, न उनमें वारिस का कुबूल करना शर्त है न उसका उस पर राजी होना जरूरी है, बल्कि अगर वह जबान से बसराहत यूं भी कहे कि में अपना हिस्सा नहीं लेता तब भी वह शरअन अपने हिस्से का मालिक हो चुका। यह दूसरी बात है कि वह मालिक बन कर शरई कायदे के मुताबिक किसी दूसरे को बाद में देदे या बेच डाले या तकसीम कर दे । इसी तरह तर्के की तकसीम से पहले उसमें से मेहमानों की खातिर तवाजो और सदका खैरात कुछ जायज नहीं। इस तरह सदका खैरात करने से मुर्दे को कोई सवाब नहीं पहुंचता बल्कि सवाब समझ कर देना और भी ज्यादा सख्त गुनाह है। इसलिए कि मूरिस के मरने के बाद अब यह सब माल तमाम वारिसों का है। इस मुश्तरका माल में से देना ऐसा ही है जैसा कि किसी का माल चुराकर मैयत के हक में सदका कर दिया जाए। पहले माल तकसीम कर दिया जाए उसके बाद अगर वह वारिस अपने माल में से अपनी मर्जी से मैयत के हक में सदका खैरात करे तो उसको इख्तियार है, तकसीम से पहले भी वारिसों से इजाजत लेकर मुश्तरका तर्के में सदका खैरात न करें। इसलिए कि जो उनमें नाबालिग या गैर हाजिर है उनकी इजाजत तो मोतबर ही नही कि और जो बालिग है वह भी जरूरी नहीं खुशदिली से इजाजत दें। हालांकि शरीअत में सिर्फ वह माल हलाल है जिसे देने वाला खुश दिलीसे दे रहा है।

हां! अगर सब वारिस आकिल, बालिग व हाजिर हों और खुशदिली से इजाजत देने का पूरा यकीन हो तो मुश्तरका तर्के में से मैयत के लिए सदका–खैरात करना दुरूस्त हो सकता है। यहां हम एक बुजुर्ग का वाक्या नकल करते हैं जिससे मसला और ज्यादा वाजेह हो जाएगा। यह बुजुर्ग एक मुसलमान की अयादत के लिए तशरीफ ले गए, थोड़ी देर–मरीज के पास बैठे थे कि उसकी रूह परवाज कर गई। उस मौके पर जो चिराग जल रहा था उन्होंने फौरन उसे बुझा दिया और अपने पास से पैसे देकर तेल मंगाया और रोशनी की। लोगों ने इसका सबब पूछा तो फरमाया जब तक यह शख्स जिन्दा था यह चिराग उसकी मिलकियत थी और उसकी रौशनी इस्तेमाल करना ठीक था। अब यह इस दुनिया से रूखसत हो गया तो उसकी हर चीज में वारिसों का हक हो गया । इसलिए अब वारिसों की इजाजत ही से यह चिराग इस्तेमाल

कर सकते हैं और वह सब यहां मौजूद नहीं हैं। इसलिए अपने पैसों से तेल मंगाकर रौशनी की। मीरास की अहमियत पर रौशनी डालते हुए फ़िक्हुस्सुन्नः में फरमाते हैं कि दौरे जाहिलियत में औरतों और नाबालिग बच्चों को विरासत में हिस्सा नहीं दिया जाता था और एक मखसूस समझौते के तहत अजनबी को वारिस बना दिया जाता था। अल्लाह तआला ने इन रस्मों को बातिल किया और मीरास की आयतें नाजिल फरमाईं। (फ़िक्हुस्सुन्नः)

नसाई शरीफ में यह हदीस वारिद है और हजरत इमाम बुखारी (रह०) ने इस हदीस को मीरास कीआयतों की तफसीर में नकल फरमाया है कि जंगे उहद के बाद हजरत सअ़द बिन रबी की बीवी अपनी दो बच्चियों को लिए हुए नबी करीम (सल्ल०) की खिदमत में जाहिर हुई और उन्होंने अर्ज किया या रसूलल्लाह (सल्ल०) यह सअ़द की बच्चियां हैं जो उदह में शहीद हो गए उनके चचा ने पूरी जायदाद पर कब्जा कर लिया और इनके लिए एक दाना तक नहीं छोड़ा है। अब भला इन बच्चियों से कौन निकाह करेगा। इसपर आयाते मीरास नाजिल हुई। उसके बाद रसूल (सल्ल०) ने उनके चचा को बुलवाया और फरमया सअ़द की दोनों लड़कियों को पूरी मीरास की दो तिहाई और लड़कियों की मां का आठवां हिस्सा दे दो। इसके बाद जो बचे वह तुम्हारा है।

तकसीमे मीरास की तरतीब का शरई उसूल

जब मरने वाले की औलाद में लड़के और लड़कियों दोनों हो तो उनके हिस्से में जो माल आएगा इस तरह तकसीम होगा कि हर लड़के को लड़की के मुकाबले में दुगुना मिल जाए। मसलन किसी ने एक लड़का और दो लड़कियां छोड़े तो माल के चार हिस्से करे २/४ लड़के को और १/४ हर लड़की को दे दिया जाएगा और अगर लड़के न हो सिर्फ लड़कियां हों और लड़कियां एक से ज्यादा हों तो उनको माले मौरूस से दो तिहाई माल मिलेगा जिसमें सब लड़कियां बराबर की शरीक होंगी और बाकी एक तिहाई दूसरे मीरास के हकदारों को मिलेगा, दो लड़कियां और दो से ज्यादा सब दो तिहाई में शरीक होगी। तीन को ३/३ यानी कुल का कुल नहीं मिल जाएगा बल्कि लड़कियां जितनी भी हों उनका मजमूई हिस्सा तर्के का २/३ ही रहेगा। बाकी १/३ में और खास रिश्तेदार शरीक होंगे। दो लड़कियों से ज्यादा का हुक्म तो कुरआन की आयत में मजकूर है और अगर दो लड़कियां हों तो इसका हुक्म भी वही है जोदो से ज्यादा में हैं और अगर मरने वाले ने अपनी औलाद में सिर्फ एक लड़की छोड़ी और लड़के बिल्कुल न हों तो उसके वालिद या वालिदा के छोड़े हुए माले मौरूस का आधा हिस्सा मिलेगा, बाकी दूसरे वारिस ले लेंगे। यहां यह बता देना फायदे से खाली न होगा कि माले मीरास की तकसीम का शरई उसूल और तरतीब यह है कि पहले शरीअत के मुताबिक मरनेवाले के कफन दफन के खर्चे पूरे किए जाएं उसके बाद उसके कर्जे अदा किए जाएं अगर कर्जों के बाद माल बच जाए और उसने कोई वसीयत की हो तो अब जो माल मौजूद है उसके एक तिहाई में उसकी वसीयत नाफिज हो जाएगी। अगर कोई शख्स पूरे माल की वसीयत कर दे तब भी तिहाई माल ही में वसीयत मोतबर होगी, कर्ज की अदायगी के बाद एक तिहाई माल में वसीयत नाफिज करके शरई वारिसों में तकसीम कर दिया जाए। (तफसीलात के बाद फराएज़ की किताबों, दारूल फतावा और दारूल कुजात से राब्ता फरमाएं)

कानूने विरासत पर अमल न करना खुदाई अदालत में मुजरिम बनना है

लड़कियों की मीरास से गफलत बरतने वाले और इसको मामूली चीज समझने वाले लोग काश। इस आगाही को पढ़े जो मीरास का बयान मुकम्मल करने के बाद कुरआन ने दी है, "यह अल्लाह के मुकर्रर किए हुए जाब्ते हैं जो अल्लाह और उसके रसूल (सल्ल०) की इताअत करेगा, अल्लाह उसे बहिश्ते के ऐसे बागों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी उनमें वह हमेशा–हमेशा रहेंगे और वह बड़ी कामयाबी है और जो कोईअल्लाह और उसके रसूल (सल्ल०) की नाफरमानी करेगा उसके जाब्तों की हुदूद से बाहर जाएगा उसे वह दोजख की आग में दाखिल करेगा उसमें वह हमेशा हमेशा पड़ा रहेगा और उसे जिल्लत देने वाला अजाब होगा।". (सूरा निसा)

गौर करें कि किस कदर कंपा देने वाली आयत है जिसमें उन लोगों को हमेशा के अजाब की धमकी दी गई है जो अल्लाह के मुकर्रर किए हुए कानूने विरासत को तब्दील करें। इसलिए हुजूर (सल्ल०) ने इस माममले में शदीद एहतियात के लिए वाजेह हिदायत दी है। अबू हुरैरा (रज़ि०) फरमाते हैं कि नबी करीम (सल्ल०) का

इरशाद है — मैं तुमको खास तौर से दो बूढ़ों के माल से बचने की तंबीह करता हूं। एक औरत, दूसरे यतीम।" (इब्ने कसीर)

तकसीम मीरास में औलाद का मामला करना जुल्म है

तकसीमे मीरास में औलाद के बीचतफरीक बरतना चाहे उसकी यह सूरत हो कि लड़कियों के मुकाबले में लड़कों के साथ इम्तियाजी बरताव कियाजाए या यह सूरतेहो कि खुद लड़कों में एक दूसरे पर तरजीह दी जाए दोनों सूरतें निहायत कबीह और जुल्म है। इसलिए कि विरासत तो फरीजा–ए–इलाही है। अतिया जैसी रोजमर्रा की चीजों में भी तफरीक को जुल्म व जोर से ताबीर किया गया है और नबी करीम (सल्ल०) ने ऐसे अमल से अपनी सख्त बेजारी का इजहार फरमाया है। हजरत नोमान (रज़ि०) के वालिद हजरत बशीर (रज़ि०) ने अपने बेटे को अपने माल में से कुछ बख्शिश की। उसके बाद रसूल (सल्ल०) की खिदमत में हाजिर होकर दरख्वास्त की कि हजरत गवाह बन जाएं तो आप (सल्ल०) ने हजरत बशीर (रज़ि०) से दरयाफत फरमाया कि इस लड़के के और भी भाई हैं? हजरत बशीर (रज़ि०) ने अर्ज किया हैं, आप सल्ल० ने दरयाफत फरमाया उनको भी उतना ही दिया है। जितना नोमान को दिया है? बशीर (रज़ि०) ने कहा नहीं। आप (सल्ल०) ने फरमाया तो क्या तुम मुझको जुल्म पर गवाह बना रहे हो। मैं जुल्म पर गवाह नहीं बन सकता। तुम्हारी औलाद का तुम पर यह भी हक है कि उनके बीच अदल व इंसाफ करो जैसा कि तुम्हारा उन पर हक है कि वह तुम्हारे साथ सच्चे सुलूक में अदल कायम रखें। बशीर क्या तुम यह चाहोगे कि तुम्हारी सारी औलाद यकसां तौर पर तुम्हारी खिदमत करें? बशीर (रज़ि०) ने अर्ज किया हां ! आप (सल्ल०) ने इरशाद फरमाया जब तो तुम्हें ऐसा तरजीही मामला नहीं करना चाहिए। उसके बाद हजरत बशीर(रज़ि०) ने अपने अमल से रूजूअ कर लियाऔर नोमान से अतिया वापस ले लिया।

लड़कियों को मीरास में हिस्सा देने से जहेज के मतालबात खत्म हो सकते है

लड़कियों को हके विरासत वक्त का एक इन्तिहाई नाजुक और हस्सास मसला है और शायद इसी वजह से जहेज के फितने पैदा हो रहे हैं और समाज की गर्दन पर जहेज की नंगी तलवार कत्ल व खूंरेजी कर रही है और बसे बसाए घर इस तरह वीरान हो रहे हैं कि जिससे दुनिया भी हिल जाती है। जमीन में जलजला आ जाता है और दुनिया की हर चीज कांप जाती है। इसमें कोई शक नहीं कि जहेज की गंदी रस्मों ने समाज की जड़ें हिलाकर रख दी हैं और इंसान को तबाही व बर्बादी के आतिश फिशां पर पहुंचा दिया है। यह एक हकीकत है कि जब तक जहेज की लानत खत्म करके मीरास को लागू नहीं किया जाएगा उस वक्त तक परेशानी व बेचैनी में इजाफा ही होता रहेगा। अगर होने वाले दामाद और उसके खानदान वालों को इत्मीनान दिलाया जाए कि पूरे माले विरासत में लड़की का हिस्सा लगाया जाएगा तो वह जहेज के मतालबात को छोड़ सकते हैं और जहेज जैसी बुरी रस्म से निजात मिल सकती है और जो अल्लाह से तकवा इख्तियार करता है तो अल्लाह तआला उसके लिए कोई रास्ता जरूर निकाल देता है।" (सूरा तलाक़)

अगर हमें औरत से हकीकी हमदर्दी है तो हम अज्म करें कि जहेज की लानत को खत्म करेंगे और विरासत को फरोग देंगे। फिर कामयाबी हमारे कदम चूमेगी और जिन्दगी की खुशगवारी के एक नए दौर का आगाज होगा। हम तमाम मुसलमानों से अपील करते हैं कि औरतों के हुकूक की बाजयाबी के लिए खड़े हों और हमारी आवाज को अपनी आवाज समझें। कुरआन व हदीस को अपना रहबर बनाएं। रस्म व रिवाज की तरफ बिल्कुल ध्यान न दें। अल्लाह तआला हमें औरतों के लिए मुंसिफाना कदम उठाकर जुर्अते ईमानी और गैरते इस्लामी का सबूत पेश करने की तौफीक अता फरमाए–आमीन।

●●●

Mob: 9415006053

Mohd. Irfan
Proprietor

न्यू करीम ज्वैलर्स

NEW KAREEM JEWELLERS

Shop No. 1 Balaji Market, Opp. Ek Menara Masjid, Akbarigate, Lucknow. Ph.: (S) 2260890

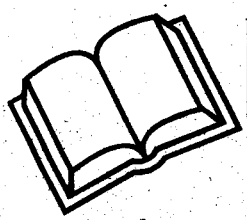

क़ुर्आन की तिलावत के आदाब

मौ० मुजीबुल्लाह नदवी

क़ुर्आन की तिलावत चाहे नमाज़ में की जाए या नमाज़ से बाहर उसके कुछ ज़रूरी आदाब हैं, उनमें से कुछ बातें यहां लिखी जाती हैं।

जब क़ुर्आन पढ़ें तो वुज़ू के साथ पढ़ें (अगरचि ज़बानी बे वज़ू पढ़ना जाइज़ है मगर ग़ुस्ल की हाजत हो तो न ज़बानी पढ़ सकते हैं न देख कर।) क़ुर्आन पढ़ते वक्त खुशूअ (खुदा का खौफ) खुजूअ (विनम्रता) हो और समझते हों तो तदब्बुर (चिन्तन) के साथ पढ़ें। यह बात दिल में रहे कि यह बाअ़ज़मत कलाम (महान वाणी)उस बा अ़ज़मत हस्ती का है जिस के कब्ज़े में दुन्या का हर ज़र्रा है। तिलावत का मक्सद सिर्फ़ खुदा को ख़ुश करना हो कोई दुन्यावी ग़रज़ न हो। क़ुर्आन की अ़ज़मत (महानता) का ज़िक्र ख़ुद क़ुर्आन की आयतों में बयान हुआ है और हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की हदीसों में भी। उनही आयात और अहादीस की रौशनी में इमाम ग़ज़ाली अपनी किताब इहयाउल उ़लूम में लिखते हैं :

"क़ुर्आन पढ़ने वाले को चाहिए कि क़ुर्आन की तिलावत करने से पहले अपने मन में कलाम वाले अर्थात ख़ुदा की बड़ाई को ख़ूब बिठाए और यह समझे कि वह जिस कलाम की तिलावत कर रहा है वह अल्लाह तआ़ला का कलाम है जिस के पढ़नेकी ख़ुसूसी अहमीयत है इसलिए कि अल्लाह तआ़ला ने ख़ुद फ़रमाया कि इस को वही लोग छू सकते हैं जो खुद पाक होते हैं, तो जिस तरह क़ुर्आन शरीफ़ की ज़ाहिरी जिल्द और उसके वरक़ को बे वुज़ू इन्सान के ज़ाहिरी जिस्म से बचाया गया है। (अर्थात बे वज़ू क़ुर्आन छूने से रोका गया है) इसी तरह उसकी बातिनी (आंतरिक) और मअ़नवी (वास्तविक) खूबियां उस की इ़ज़्ज़त व जलालत (तेज़) के पेशेनज़र उसी दिल में पैदा हो सकती हैं जो दिल बातिनी (आंतरिक) नजासत (गन्दगी) से पाक हो और जिस तरह हर हाथ क़ुर्आन की जिल्द छूने की योग्यता नहीं रखता इसी प्रकार हर ज़बान न उस के पढ़ने की योग्य है और न हर दिल उसके ज्ञान को पाने की योग्यता रखता है।

इमाम मुहीयुद्दीन नववी (रह०) किताबुल अज़कार में लिखते है। :

क़ुर्आन पढ़ने वाले को जिन बातों की तरफ़ ध्यान देना चाहिए वह बहुत हैं उनमें से कुछ हम यहां लिखते हैं: पहली बात तो यह है कि इख़्लास से पढ़े यअ़नी सिर्फ़ अल्लाह को राज़ी करने के लिए पढ़ें, क़ुर्आने मजीद का ख़ूब अदब व इहतिराम (सम्मान) करे। पढ़ते वकत मन में लाए कि मैं अल्लाह से बात कर रहा हूं और अल्लाह का कलाम पढ़ रहा हूं और यह कि जैसे मैं उसे देख रहा हूं अगर यह हालत नहीं पैदा हो रही है तो यह तो है ही कि वह हमें देख रहा है।

क़ुर्आने मजीद ठहर ठहर कर पढ़ा जाए अ़रबी ज़बान आती हो तो उसके मअ़नों पर ध्यान देना चाहिए क़ुर्आन व हदीस में इस की बड़ी ताकीद आई है। क़ुर्आन उतारे जाने का सब से बड़ा मक़्सद उस को समझना और समझकर अ़मल करना है चाहे सीधे अपनी जानकारी से हो या जानकारों के जरीअ़े हो।

लेकिन अगर किसी का इतना इ़ल्म नहीं है कि उसे समझकर पढ़ सके तो उसके लिए भी बे समझे तिलावत ज़रूरी है, जो लोग यह समझते हैं कि बेसमझे क़ुर्आन की तिलावत बे फ़ाइदा है बड़ी भूल में है, इस लिए कि बहुत सी हदीसों में बे समझे पढ़ने पर भी उभारा गया है जैसे :

अनुवाद : जिस ने क़ुर्आन का एक हर्फ़ पढ़ा उसके लिए एक नेकी है और नेकी दस गुने तक बढ़ती है, मैंनहीं कहता कि क़ुर्आन मजीद का الٓمٓ अलिफलाममीम एक हर्फ़ है बल्कि अलिफ़ एक हर्फ़ है, लाम एक हर्फ़ है और मीम एक हर्फ़ है। (मिश्कात)

तिर्मिज़ी की एक दूसरी रिवायत में है – जो पूरी रवानीसे पढ़ता है वह फ़िरिश्तों के साथ होगा और जो क़ुर्आन अटक अटक कर दिक़्क़त से पढ़ता है उसको दुहरा अज्र (बदला) मिलेगा, एक तिलावत का दूसरा मशक़्क़त से पढ़ने का। (तिर्मिजी)

क़ुर्आन मजीद को अच्छी आवाज़ से पढ़ने का हुक्म दिया गया है इस

का दिल पर अच्छा असर पड़ता है। खुद नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अच्छी आवाज़ से पढ़ने वाले सहाबा से क़ुर्आन पढ़वा कर सुना करते थे और फरमाया :

क़ुर्आन मजीद को अच्छी आवाज़ से पढ़ा करो इस लिए कि अच्छी आवाज़ से क़ुर्आन का हुस्न बढ़ता है। (दारमी)

क़ुर्आन रिहल वगैरह ऊंची जगह रख कर अच्छी आवाज़ के साथ पढ़ना चाहिए और हर लफ़्ज़ को सहीह पढ़ना चाहिए, हर आयत पर जहां ठहरना ज़रूरी है ठहरना चाहिए।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इन तमाम बातों का हुक्म दिया, ख़ुद क़ुर्आन में तील से ठहर ठहर कर पढ़ने का हुक्म आया है।

क़ुर्आन मजीद की कोई आयत याद कर के भुला देने वालेको नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने बदतरीन आदमी कहा है तो जो लोग हिफ़्ज़ कर के भुला देते हैं उन पर कितना गुनाह होगा।

जब तक दिल लगे उसी वक़्त तक तिलावत करना चाहिए कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने बे दिली के साथ क़ुर्आन पढ़ने से रोका है। लेकिन अगर किसी का दिल सिरे से न लगता हो तो उसे तो कुछ तिलावत करना ही है। ऐसे ही तालिबे इल्म का दिल न लगता हो तो उससे तो जबरन पढ़वाना ही है।

रोज़ाना तिलावत के लिए कोई वक़्त मुक़र्रर कर लेना चाहिए और सुब्ह को फ़ज्र बाद का वक़्त बहुत अच्छा होता है।

क़ुर्आन देखकर पढ़ना ज़बानी पढ़ने से अफ़ज़ल है। नमाज़ के अन्दर क़ुर्आन की क़िराअत नमाज़ से बाहर की क़िराअत से अफ़जल है, और नमाज़ के बाहर की क़िराअत तस्बीह़ व तक्बीर से बेहतर है। (मिशकात)

क़ुर्आने पाक की कुछ और ख़ुसूसियात :

दुन्या में क़ुर्आने पाक जितनी तअ़दाद में छपता है और जिस कसरत से वह पढ़ा जाता है दुन्या की कोई किताब न इतनी तअ़दाद में छपती है न पढ़ी जाती है।

क़ुर्आने पाक ही एक ऐसी किताब है जो बे समझे पढ़ी और ज़बानी याद की जाती है। जितनी तअ़दाद में क़ुर्आन के हाफ़िज़ आप को दुन्यामें मिलेंगे उसके हज़ारवां हिस्सा भी किसी और किताब के हाफ़िज़ न मिलेंगे।

इसको बार–बार पढ़ने से उक्ताहट नहीं होती ख़ुद नबीये पाक अ़लैहिस्सलाम का इर्शाद है : "यह बार–बार पढ़ने से पुराना नहीं होता।" मतलब यह है कि हर बार नये का मज़ा मिलता है।

इल्म वाले इस में ग़ौर व फ़िक्र करते हैं तो नये नये राज़ खुलते हैं। ह़दीस शरीफ़ में है :

"उ़लमा कभी इस से सेर नहीं होते और इस के मअ़नवी अ़जाइब व ग़राइब कभी ख़त्म न होंगे।

आज़ादी के नाम पर स्त्रियों का शोषण

ज़ैद अहमद कसौलवी

इस्लाम में अपने अनुयाइयों को जो सिद्धान्त व नियम प्रदान किये हैं वह परिपूर्ण हैं। यह हकीकत है कि इस्लाम ने स्त्रियों को जो स्थान दिया है वह दुन्या के किसी धर्म ने नहीं दिया है बल्कि दूसरे धर्मों ने तो उन पर अत्याचार के पहाड़ तोड़े हैं। उनके अधिकारों का हनन किया है और उनके साथ अप्रिय व्यवहारा को उचित समझा । इस्लाम ही वह धर्म है जिस ने औरत को तिरस्कार और हीनता के गढढे से निकाल कर आदर और सम्मान के उच्च स्थान पर आसीन किया। उसकी हैसियत को दुन्या केसामने पेश किया। आप (सल्ल०) ने माल और सामान के इस्तेमाल में पूरी आजादी दी। विरासत में स्थाई भागीदार बनाया। आज समाज में अनैतिकता का जो ज़हर फैलाया जा रहा है उन में सबसे हानिकारक औरतों को शरअी परदे से निकाल कर महफिल की रौनक बनाना है। स्त्री को स्त्री इसलिए कहा जाता है कि उसका अर्थ पर्दा है इसलिए कि स्त्री की महानता उसका पद, गुण और उसका कमाल यह है कि वह पर्दा इख़्तियार करे क्योंकि इस्लाम यह तालीम देता है कि स्त्री पर्दे की वस्तु है। अतएव स्त्री बज्म (महफिल) की ज़ीनत (शोभा) नहीं बनाई जा सकती और न दफतर के सुन्दर व सुसज्जित मेज पर सजा कर मनोरंजन की वस्तु बनाई जा सकती है। न सड़कों और बाजारों में बेपर्दा घूमने की इजाज़त दी जा सकती है।

आज समाज में स्त्रियों के साथ जो बराबर बलातकार हो रहा है उस का मुख्य कारण बेपर्दगी है। आज स्त्री पर्दे में रहने लगे तो फिर उनको हाथ लगाना आसान नहीं होगा।

(राष्ट्रीय सहारा उर्दू के सौजन्य से)

आपके प्रश्नों के उत्तर

इदारा

प्रश्न : ग़ैर मुस्लिम जो पाक व नापाक का इल्म नहीं रखते अल्बत्ता फ़ित्री सफ़ाई का ख़याल रखते हैं उनकी बनाई हुई खाने की चीज़ों का क्या हुक्म है?

उत्तर : ग़ैर मुस्लिमों की बनाई हुई खाने की चीजों को जब तक किसी क़रीने से नजासत का सुबूत न मिले पाक समझेंगे, उस को जाइज़ तरीक़े से हासिल कर के खा सकेंगे। इसी तरह ग़ैर मुस्लिमीन के बरतनों को भी पाक समझेंगे सिवा इसके कि उनके नजिस होने का इल्म हो।

प्रश्न : फलों में जो कीड़े पड़ जाते हैं वह पाक हैं या नापाक ?

उत्तर : फलों के कीड़े पाक हैं मगर उनका खाना जाइज़ नहीं।

प्रश्न : हलाल गोश्त सड़ गया अब वह पाक है या नापाक?

उत्तर : कोई भी खानेकी चीज़ सड़कर बदबू करने लगे जब भी पाक है लेकिन उस का खाना सिहत के लिए नुक्सान दिह है इस लिए खाना जाइज़ नहीं।

प्रश्न : छोटे बच्चों को कुर्आन मजीद पढ़ाते वक्त क्या उनसे वुज़ू कराना ज़रूरी है?

उत्तर : अगर्चि छोटे यानी नाबालिग बच्चों के लिए बे वुज़ू क़ुर्आन मजीद छूना जाइज़ है लेकिन तअ्लीम के लिए उनसे वज़ू करवा कर क़ुर्आन मजीद छूने देना चाहिए और किसी वक्त नज़र अन्दाज़ भी कर देना चाहिए।

प्रश्न : अगर कोई शख़्स अज़ान में उसका तर्जुमा (अनुवाद) ज़ोर ज़ोर से अज़ान ही की तरह कह दे तो अज़ान हो जाएगी?

उत्तर : अज़ान सिर्फ़ अरबी ज़बान में उनही अल्फ़ाज़ से होगी जो सिखाए गये हैं, न अरबी के दूसरे अल्फ़ाज़ से अज़ान होगी न किसी तर्जुमे से।

प्रश्न : अज़ान के जवाब देने का क्या हुक्म है? और जवाब देने का तरीक़ा क्या है?

उत्तर : अज़ान का जवाब देना वाजिब है, अस्ली जवाब तो अज़ान का यह है कि अज़ान सुनने वाला नमाज़ के इरादे से, मस्जिद की तरफ़ चल पड़े और ज़बान से जवाब दे। जवाब का तरीक़ा यह है कि जो कुछ मुअज़्ज़िन कहता जाए वही दुहराता जाए अल्बत्ता हय्य अलस्सलात और हय्य अललफ़लाह के बअ्द लाहौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाह भी कहे इसी तरह फ़ज्र की अज़ान में अस्सलातु ख़ैरूम्मिन्नौम के बअ्द सदक्त व बरर्त कहे।

प्रश्न : अज़ान के बअ्द कौन सी दुआ पढ़ना चाहिए?

उत्तर : अजानके बअ्द दुरूद शरीफ़ पढ़ कर यह दुआ पढ़ना चाहिए।

अल्लाहुम्म रब्ब हाज़िहिद्दअ्वतित्ताम्मा वसलातिल्काइमति आति सय्यिदेना मुहम्मदनिल् वसीलत वल्फ़ज़ीलत वब्अ़स्हु मक़ाममहमूद निल्लज़ी वअ्त्तहू इन्नक ला तुख़्लिफ़ुल मीआ़द।

यह दुआ किसी जानने वाले को सुनाना ज़रूरी है, वरना तलफ़्फ़ुज की ग़लतियां ज़रूर रह जाएगी।

प्रश्न : अल्लहा के सिवा किसी और की क़सम खाना जाइज़ है या नहीं?

उत्तर : अल्लाह तआला या उसके किसी सिफ़ाती नाम की कसम खाई जा सकती है। किसी दूसरी ज़बान का लफ़्ज़ जिससे अल्लाह ही मुराद हो जैसे फ़ारसी का ख़ुदा, की क़सम खाना भी जाइज़ है, लेकिन ऐसा कोई लफ़्ज़ जिससे अल्लहा मुराद न हो जैसे रसूल की क़सम, नबी की कसम, कअ़्बे की क़सम, मदीने की क़सम वगैरह ना जाइज़ हैं। क़सम के सिलसिले में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह हदीस सामने रहे।

'मन् हलफ़ लिगैरिल्लाहि फ़कद् अश्रक" जिसने अल्लाह के अलावा किसी की क़सम खाई उसने शिर्क किया। (तिर्मिजी)

प्रश्न : क़ुर्आन की क़सम खाने का क्या हुक्म है?

उत्तर : कुर्आन अल्लाह का कलाम है, और कलाम अल्लाह की सिफ़त है इस लिए क़ुर्आन की क़सम खाना जाइज़ है लेकिन इस से बचना बेहतर है।

Mohd. Saleem

Mob. : 9415782827

(R) 268177, 254796

New King Shoes

Bata Liberty

Shop No. 8-9, New Market,

Nishat Ganj, Lucknow-226006

इस्लाम में ब्याज हराम है

डॉ० अब्दुल लतीफ़ चतुर्वेदी, जौनपुर

इस्लाम ने जिविकोपार्जन में हराम और हलाल का अन्तर रखा है। हर व्यक्ति को यह अधिकार प्राप्त है कि वह स्वतंत्र रूप से प्रयास करके अपनी हलाल रोजी तलाश कर के अपनी तथा अपने परिवार का भरण–पोषणा करे वह जो कुछ कमाये वह उसकी जायज और हलाल कमायी उसकी सम्पत्ति है। उस जायज सम्पत्ति कोसीमित करने या उसे छीन लेने का किसी को कोई अधिकार नहीं है।

अवैध तरीके की कमाई का उसपर हक नही है। ऐसी कमाई करने वालों को इस्लाम रोक लगाता है उस कमाई का वह जायज मालिक नही है। उसके अपराध की प्रवृत्त को देखते हुए उसे कैद और जुर्माने की सजा दी गयी है तथा नाजायज तरीक से पैदा किये गये माल को जब्त भी किया जा सकता है और उसके गलत कामों को रोकने के लिए उपाय भी किये जा सकते हैं। इस्लाम में प्रमुख रूप से जिन को हराम ठहराया गया है। वे यह है –

१.खियानत २. रिश्वत, ३. अपहरण करना ४. बैतुलमाल में गबन करना, ५. चोरी ६. नाप–तौल में कमी करना ७. अश्लीलता फैलाने वाले कारोबार ८. वेश्यावृत्ति १०. जुआ और सट्टा व ११. ब्याज से धन कमाना। कुरआन में ब्याज के लेन–देन पर सख्ती से मना किया गया है।

सूर–ए–बकर: ७८–७९ में बताया गया है कि –

"जो कुछ ब्याज तुम्हारा लोगों पर बाकी रह गया है उसे छोड़ दो और अगर तुम तौबा कर लो तो तुम्हें अपनी असली रकम लेने का अधिकार है।

सूर–ए–रूम : ३९ में है :

"और जो ब्याज तुमने दिया है कि लोगों के माल बढ़े, तो अल्लाह के निकट इससेमाल नहीं बढ़ता।

कुरआना की इन आयतों से यह स्पष्ट हो गया कि ब्याज का लेन–देन हराम है।

इस्लाम में कारोबार करने और इसके द्वारा मुनाफा लेने को आदेश दिया गया है लेकिन ब्याज लेने से इस लिये रोका गया है कि इसमें आदमी न तो अपना दिमाग खर्च करता है और न ही कारोबार में विशेष उन्नति के लिये भाग दौड़ ही करनी पड़ती है दूसरी बात यह है कि कारोबार के लिए ब्याज का रूपया देता तो वह अपने सूदी लाभ का तो हकदार होता है मगर घाटे से उसका कोई मतलब नहीं होता है। इसके अलावा ब्याज के लेन–देन से इन्सान कन्जूसी, खुदगर्जी और बेरहमी तथा घमण्डी पन का शिकार हो जाता है परिणाम स्वरूप व दो व्यक्तिों में दुश्मनी पैदा करता है। समा में फूट डालता है। वह लोगों में रूपया जमा करने एवं निजी लाभ के लिये खर्च करने की ही प्रेरणा देता है। वह समाज में धन को स्वतंत्र प्रवाह में रूकावट पैदा करता है बल्कि गरीबों और कमजोरों का धन छीनने की कोशिश करता है। इस कारोबार में सारा धन चन्द माल दार लोगों के पास ही इकट्ठा हो जाता है और दूसरे लोग धन से महरूम होकर मुसीबतों एवंबुराइयों का शिकार हो जाते हैं। इस्लाम इन्हीं सब बुराइयों से इन्सान को रोकना चाहता है। कुरआन का ऐलान है कि –

"अल्लाह ब्याज को मिटाता है और खैरात (दान) को बढ़ाता है।" (२:२७६)

"और जो कुछ तुम्हारा ब्याज लोगों पर बाकी रह गया है उसे छोड़ दो यदि वास्तव में तुम इमान लाये हो। लेकिन यदि तुमने ऐसा नही किया तो सावधान हो जाओ कि अल्लाह और उसके रसूल की ओर से तुम्हारे विरूद्ध युद्ध की घोषणा है। अब भी पलट जाओ और ब्याज छोड़ दो तो अपना मूलधन लेने के तुम अधिकारी हो।" (२७८:२७६)

"जो लोग ब्याज खाते हैं उनकी दशा उस व्यक्ति जैसी होती है जिसे शैतान ने छूकर पागल करदिया हो और इस दशा में उनके ग्रस्त होने का कारण यह है कि वे कहते हैं। "व्यापार भी तो आखिर ब्याज ही जैसी चीज है जबकि अल्लाह ने व्यापार को बैध किया है और ब्याज को अवैध। (२:२७५)

"जिस व्यक्ति को उसके प्रभू की ओर से यह उपदेश पहुंचे और आइन्दा के लिए वह, ब्याज लेने से बाज आ जाये तो जो कुछ वह पहले खा चुका है सो खा चुका है उसका मामला अल्लाह के हवाले है और जो

(शेष पृष्ठ ३४ पर)

धन्या

इदारा

दाल, तरकारी में जो मसाला मिलाया जाता है धन्या उस का एक जुज़्व (भाग) है। इस से सालन खुशबूदार हो जाता है। धन्या मेअ़दे को ताकत देता है और रियाह़ (हवा) को निकालता है, और हवाओं को दिमाग की तरफ चढ़ने से रोकता है, धन्या और भी बहुत से फायदे रखता है जैसे गर्म दर्दे सर के लिये मुफीद है, इस को पानी में पीस कर पेशानी पर लगाने से गर्मी का दर्दे सर दूर हो जाता है। हरे धन्या का पानी और ककड़ी का पानी निलकाल कर उस में थोड़ा सा सिर्का मिलाएं और एक शीशी में डाल कर सरसाम के मरीज़ की नाक के सामने रखें मुफीद है।

अगर चक्कर आने की शिकायत होतो धन्या खुश्क और आम्ला खुश्क नौ नौ ग्राम को अध कुटा कर के रात को पानी में भिगो दें और सुबह को पानी छान क़र मिस्री से मीठा कर के पियें।

खाना खाने के बाद पांच छ ग्राम धन्या चबाने से मिअ़दे को ताकत मिलती है और अगर मेअ़दे की कमज़ोरी की वजह से दस्त आते हो तो दस्त के बन्द होने में मदद मिलती है। अगर दस्तों में खून आता हो तो दस ग्राम धन्या को पानी में पीस छान कर पीने से बन्द हो जाता है। अगर मेअ़दे से तब्खीर (मेअ़दे में भाप का दबाव) होती हो और उस में मरीज़ को दर्दे सर हो या चक्कर आते हों तो धन्या को कूट छान कर बराबर तौल खन्ड मिला कर ६ ग्राम खाने से तब्ख़ीर रूक जाती है और चक्कर ख़त्म हो जाता हैं।

अगर कोई शख्स गलती से जमाल गोटा खा ले या जमाल गोटे की गोलियां खाने से दस्त आने लगें और मरीज निढाल हो जाए तो धन्या कूट छान कर सुफूफ बनाएं और आध पाव दही बिलो कर उस में ६ ग्राम सुफूफ मिला कर पिलाएं, दो तीन बार पिलाने से दस्त बन्द हो जाएंगे और मरीज़ की कमजोरी दूर हो जाएगी।

कसरते इहतिलाम में दस ग्राम धन्या रात को भिगो दे सुबह को पानी छान कर पियें।

धन्या कूट छान कर उस के बराबर खन्ड मिलांए और ६,६ ग्राम सुबह शाम कई रोज़ तक खाएं, दिल की धड़कन, दूर करने के लिये मुफीद है।

बीड़ी सिग्रेट पीने वाले अगर मस्जिद में दाख़िल होने से पहले थोड़ा धन्या चबा कर थूक दें तो उन के मुँह की बदबू से दूसरे नमाजियों को तक्लीफ़ न पहुंचे। धन्या की चटनी जहां खाने में मजेदार है वहीं वह खाने को हज्म भी करती है।

0522-264646

Bombay Jewellers

The Complete Gold & Silver Shop

84, Victoria Street, Akbari Gate, Lucknow.

एलाने मिलकियत व अन्य विवरण

फारम–४ नियम–८

प्रकाशन का स्थान	–	मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, नदवतुल उलमा, बादशाहबाग, लखनऊ
प्रकाशन अवधि	–	मासिक
सम्पादक	–	डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी
राष्ट्रीयता	–	भारतीय
पता	–	अहाता दारुल उलूम नदवतुल उलमा, लखनऊ
मुद्रक एवं प्रकाशक	–	अतहर हुसैन
राष्ट्रीयता	–	भारतीय
पता	–	२१, अदनान पल्ली निकट हिरा पब्लिक स्कूल, रंग रोड, दुबग्गा, डाक घर, काकोरी, लखनऊ
मालिक का नाम	–	मजलिसे सहाफ़त व नशरियात दारुल उलूम नदवतुल उलमा, लखनऊ

मैं, अतहर हसैन प्रमाणित करता हूं कि उपरोक्त विवरण मेरे विश्वास व जानकारी में सही हैं।

ह़जरत मौलाना अ़ब्दुल्लाह अ़ब्बा़स नदवी (रह़०)

(एजूकेशन एडवाइजर आफ नदवतुल उलमा)

अगर दुन्या कसे पायन्दा बूदे
अबुल क़ासिम मुह़म्मद ज़िन्दा बूदे

हारून रशीद सिद्दीक़ी

अगर दून्या में कोई बाक़ी रहता तो हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) (हम लोगों के दर्मियान) इस दुन्यावी ज़िन्दगी के साथ मौजूद होते तो जब अल्लाह के मह़बूब व आख़िरी नबी हमारी आखों से ओझल कर दिये गये तो हमारे हर अज़ीज़ तरीन को आंखों से ओझल होना ही है और हम को भी यह दुन्या छोड़ना ही है। चुनाचि हम अहले नदवा की मह़बूब तरीन शख़्सीयत, इल्मी एअ़तिबार से इस वक़्त की अ़ज़ीम तरीन शख़्सीयत जनाब डाक्टर, मौलाना अ़ब्दुल्लाह अ़ब्बास साहि़ब नदवी को भी अल्लाह तआ़ला ने हमारी आंखों से ओझल कर के अपनी रह़मत में ढांप लिया। इन्ना लिल्लहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

हज़रत मौलाना अ़ब्दुल्लाह अ़ब्बास की पैदाइश पटना के क़रीब क़स्बा फुलवारी शरीफ़ में १३४३ हि० (१९२५ ई०) में हुई। वालिद साहि़ब का नाम मुह़म्मद अ़ब्बास था वह इमारते शरअ़ीयः के मुफ़्ती व क़ाजी थे, इस्लाह़ व इर्शाद में भी उन का और उन के ख़ान्दान का एक ख़ास मक़ाम था। हमारे मौलाना अगर्चि किसी को मुरीद न करते थे लेकिन वह तसव्वुफ़ की राह में एक मक़ाम रखते थे। मौलाना की इब्तिदाई ता़लीम फुलवारी शरीफ़ में हुई। अअ़्ला ता़लीम के लिए लखनऊ आए पहले फिरिंगी मह़ल में दाख़िला लिया फिर दारूल उ़लूम नदवतुल उ़लमा में दाख़िला लिया। यहां उनका शुमार मुम्ताज़ तालिब इल्मों में रहा, यह दौर मशहूर और चोटी के असातिज़ा का था, मौलाना सैयियद अबुल ह़सन अ़ली ह़सनी भी मौलाना के असातिज़ा में थे।

दारूल उ़लूम में लक्मील के बा़द मौलाना दारूल उ़लूम के शोब़ा—ए—अदब में उस्ताद मुक़र्रर हो गये। मौलाना अदब के साथ साथ तफ़सीरे क़ुर्आन भी पढ़ाते थे, बलाग़ते क़ुर्आन पर उनकी नज़र गहरी थी।

ह़ज़रत मौलाना अ़ली मियां साहि़ब (रह़०) के मश्वरे से मौलाना अ़ब्दुल्लाह अ़ब्बास साहि़ब १९५० में इ़ल्मी व दा़वती मक़्सद से हिजाज़े मुक़द्दस में एक साल क़ियाम किया, जनाब मौलाना मुह़म्मद राबे ह़सनी साह़ब (हा़ल नाज़िम नदवतुल उ़लमा) भी साथ थे। इसी क़ियाम में वहां के उ़लमा से उनका रब्त (सम्बन्ध) हुआ और यही रब्त उनके वहां मुस्तक़िल (स्थाई) क़ियाम का सबब बना।

मौलाना ने वहीं से इंग्लैंड की लीड्स यूनीवर्सिटी में नदवे की फ़ज़ीलत की सनद की बुन्याद पर दाख़िला ले कर लिसानियात में पोस्ट ग्रेजवेट की डिग्री हा़सिल की। वहां से फ़ारिग़ होकर मक्का मुकर्रमा वापस आए और बड़े अहम अहम मनासिब (पदों) पर फ़ाइज़ हुए। राबिते के मन्थली इंग्लिश मैगज़ीन के एडीटर हुए। राबिते के शोब—ए—मुनज़्ज़माते इस्लामिया के मुदीर हुए, जामिआ़ उम्मुलक़ुरा में अदबे अ़रबी के उस्ताद हुए लेकिन अपनी मादरे इल्मी को बराबर याद रखा। दामे, दिरमे,सुख़ने, क़दमे हर तरह इस को नवाज़ते रहे। उम्मुलक़ुरा से रिटायरमेंट के बाद अगर्चि उन को सऊ़दी नेशनलीटी मिल गई थी मगर वह अपना ख़ासा वक़्त नदवे में गुज़ारते। वह नदवे की शूरा के मिम्बर भी थे और मुअ़तमद तअ़्लीम (शिक्षा—सलाहकार) भी। उन्होंने नदवतुल उ़लमा और दारूल उ़लूम नदवतुल उ़लमा की ख़ि़दमत अपना मिशन बना लिया था। वह दारूल उ़लूम के तलबा को अपनी औलाद की तरह समझते थे। वह हर साल मक्का मुकर्रमा से अपने ख़र्च से नदवा तशरीफ़ लाते और महीनों ठहर कर जहां इन्तिज़ामिया को अपने मुफ़ीद मश्वरों से नवाज़ते वहीं तलबा को अअ़्ला मज़ामीन जैसे बलाग़ते क़ुर्आन, ह़ज़रत शाह वलीयुल्लाह साहि़ब की किताब ह़ुज्जतल्लाहि बालिगःकी तदरीस से मुस्तफ़ीद फ़रमाते।

इ़ल्म बहुत पुख़्ता था,अ़रबी, अंग्रेज़ी और उर्दू में तो वह सनद थे, फ़ारसी पर भी उ़बूर था। इन चारों ज़बानों के सैकड़ों सबकआमोज़ अशआ़र याद थे जिन को वह मजलिसी गुफ़्तगू में पढ़ कर मजलिस को बाग व बहार कर देते। कम लोगों को मा़लूम होगा कि वह उर्दू निसाब में मौलवी ईस्माईल की रीडरों के बड़े मद्दाह थे। मैंने उस के बा़ज़ अस्बाक़ के बारे में अ़र्ज़ किया तो फ़रमाया बा़ज़ अस्बाक़ निकाले जा सकते हैं और जदीद तदवीन की गुंजाइश है, लेकिन अब तक इन रीडरों का बदल नहीं आ

सका वह कदीम तरीन अरबी क़ाइदा यानी "बग़दादी क़ाइदा" के भी बड़े क़ाइल थे। फ़रमाते इसे बच्चा उतनी ही आसानी से याद करता है जैसे कोई ढाल का रास्ता तय करता हो।

मेरा तअ़ल्लुक मौलाना से पहली बार गालिबन सन० ६२ में हुआ था जब उनके दो साहिबजादगान ज़िया अ़ब्दुल्लाह और ताहा अ़ब्दुल्लाह (अल्लाह तआ़ला उनकी उ़म्रें दराज़ करे) मेर हवाले हुए थे। तब से आख़िर तक तअ़ल्लुकात क़ाइम रहे।

मौलाना, हज़रत मौलना सय्यिद अबुल हसन अ़ली हसनी से बड़ा जज़बाती तअ़ल्लुक़ रखते थे। "मीरे कारवां" का एक एक लफ़्ज़ इस का शाहिद है। जैसा कि ऊपर आ चुका मौलाना अ़ब्दुल्लाह अ़ब्बास साहिब को सऊ़दी नेशनलीटी मिल चुकी थी। उनका ज़ाती मकान जद्दे में भी है और मक्के में भी। चुनांचि हज़रत मौलाना अ़ली मियां साहिब जब भी हिजाज़ का सफ़र फ़रमाते तो मौलाना अ़ब्दुल्लाह अ़ब्बास साहिब औरउनके साहिबज़ादगान मीज़बानी का शरफ़ ज़रूर हासिल करते। हज़रत मौलाना अ़ली मियां साहिब का भी मौलाना और उनकी औलाद के साथ आख़िर वक़त तक शफ़क़त व महब्बत का तअ़ल्लुक़ रहा।

मौलाना अ़ब्दुल्लाह साहिब ने कई मुफ़ीद तरीन किताबें लिखीं जो दर्ज ज़ैल हैं।

१. चन्द दिन दयारे ग़ैर में "यह यूरोप का सफ़र नामा है। ख़ानक़ाह मोंगेर बिहार के "अलमुजीब दौरे अव्वल" में छपा था।

२. दुरूसुल अतफ़ाल (अरबी) इसे मक्तब–ए–दीन व दानिश लखनऊ ने छापा था।

३. आसान फिक़्ह (उर्दू) बच्चों के लिए लिखी थी, इसे भी मक्तब–ए–दीन व दानिश ने छापा था।

४. अ़रबी में नअ़तिया कलाम" यह किताब अरबी में नहीं उर्दू में है, इसके कई एडीशन छप चुके हैं। नया एडीशन कुछ इज़ाफ़े के साथ जल्दी ही "मक्तब–ए–इस्लाम" गोइन रोड छापने वाला है।

५. "तफ़्हीमुल मन्तिक़" मन्तिक़ की किताब है, दारूल उ़लूम नदवतुल उ़लमा के निसाब मे दाख़िल है।

६. पैग़म्बरे अख़्लाक़ व इन्सानियत यह कई तक़रीरों कामजमूआ़ है।

७. कुर्आने करीम तारीखे इन्सानियत का सबसे बड़ा मुअ़जिज़ा"

८. तारीख़े तदवीने सीरत।

यह तीनों किताबें दारूल उ़लूम सबीलुस्सलाम हैदराबाद ने छापी है।

९. आफ़ताबे नुबुव्वत की चन्द किरनें,

१०. मीरे कारवां

११. निगारिशात १२. मुफ़स्सल तब्सिरा १३. रिदाए रहमत १४. इर्शादाते नबवी की रौशनी में निज़ामे मुआशरत १५. रूहे कायनात व फज़ाइले दुरूद व सलाम। १६. मसाइब का मदावा।यह सभी किताबें उर्दू में हैं और छप चुकी हैं।

आपने अरबी में भी कई किताबें लिखीं जो दर्ज जैल हैं –

१. तर्जुमातु मआनिल कुर्आन ततव्वुरू फहमिही अिन्दल अ़रब"

२. अलमजाहिबुल मुनहरिफ़: फ़ित्तफ़्सीर

३. निज़ामुल लुगतिल उर्दूइय:

४. शरह किताबिन्नुकत फ़ी इअ़जाज़िलकुर्आन

५. असासु लुग़तिल् अ़रबीय:

६. तअ़ल्लम लुग़तल क़ुर्आनिल करीम

७. कामूस, अल्फाजिल कुर्आनिल करीम (अरबी–अंग्रेजी)

मौलाना ने अपनी आप बीती बनाम "सफ़रनाम–ए–हयात" भी तहरीर फ़रमाई है जो ख़ानकाह मुजीबिया, फुलवारी शरीफ़ पटना से जल्द ही छपने वाली है। यह किताब उर्दू में है।

मौलाना कई साल से मुसलसल बीमार चल रहे थे। अमराज़ मअ़मूली न थे। अल्लाह का दिया सब कुछ था इलाज भी बड़ा क़ीमती और बड़ा ऊंचा चलता रहा लेकिन उनकी बीमारी कभी उनके कामों में हाइल न हो पाई। बीमारी के ज़माने में भी वह बराबर सफ़र फ़रमाते नदवे आते हैदराबाद जाते, अपने वतन जाते और अ़ला क़िस्म के तदरीसी व तस्नीफ़ी काम भी अन्जाम देते। मुझे कई बार ख़याल आया कि मौलाना को इन हालात में हिजाज़े मुक़द्दस न छोड़ना चाहिए ख़ुदा मालूम कब वक़्त आ जाए लेकिन उन के काम में इख़्लास था और उनकी इस दुन्या से खानगी पहली जिल्हिज्जा १४२६ (पहली जनवरी २००६ ई०) इतवार को जद्दा स्पताल में जुह्र के वक़्त हुई, जनाज़ा हरम ले जाया गया, हज्ज का ज़माना था लाखों हाजियों ने जनाजे की नमाज़ पढ़ी, जन्नतुल मअ़ल्ला में तदफ़ीन हुई। क़िस्मत हो तो ऐसी हो, नसीब हो तो ऐसे हों। बलन्दीए दरजात की दुआ करता हूं ताकि मेरे नसीब में भी कुछ आ सके। मेरे एक मुकर्रम अ़ज़ीज़ मश्हूर शाअ़िर रईसुश्शाकिरी ने ईस्वी व हिज्री तारीखें निकालीं : "ताजदारे फ़िक्र व फ़न ख़मोश है। (२००६) "शमअ़ेजां ख़ामोश है।" (१४२६) (यह तारीखें हिसाबे जमल से है

अल्लाह का शुक्र व इहसान

(सम्पादक)

ऐसा लगता हैकि सच्चा राही का इफ़्तिताह (उदघाटन) अभी कल ही की तो बात हे, लेकिन फ़ाइलो पर नज़र पड़ती है तो पूरी चार दिख रही हैं गोया कि हम पांचवे साल में दाख़िल हो चुके हैं। सच यह है कि गुज़रा हुआ व़क्त ऐसा लगता है कि जैसे आया ही नहीं।

कोताहियों पर क्षमा

सब से पहले अपनी कोताहियों पर अपने पाठकों से क्षमा चाहते है। कोताहियॉ प्रूफ़ रीडिंग की, काताहियां हाई राइटिंग, (कठिन लिखने) की, कोताहियॉ अप्रिय विषयों की, जो भी कोताहियां, जिस तरह की कोताहियां सच्चा राही में आप को नज़र आईं हो हम सब की क्षमा चाहते है।

खूबियों पर शुक्र

हर चीज में जहां कमिया और ख़मियाँ होती है वहीं उस में कुछ ख़ूबियां भी होती है। पस अगर इस चार साला दौर के 'सच्चा राही' में कुछ ख़ूबिया नज़र आई हैं तो वह हमारे सम्मानीय सहायकगण जनाब मुहम्मद हसन अंसारी, जनाब मुहम्मदगुफ़रान नदवी, जनाब सरवर फ़ारूक़ी नदवी और जनाब हबीबुल्लाह आज़मी साहिबान की तवज्जुह, जनाब मसीहुज्ज़मॉ साहिब की हुस्ने नज़रे मुहम्मद सलमान साहिब कम्पोज़ीटर की मेहनत, मैनेजर मुईद अशरफ़ साहिब के हुस्ने इन्तिज़ाम, कारकुनाने दफ़्तर के तआवुन और जनाब सिकेट्री साहिब और नाज़िर आम साहब की नज़रे करम के सबब है। अल्लाह की तोफीक़ पर उस का शुक्र अदा करने के बाद हम इन सभी करम फ़र्माओ के शुक्र गुज़ार हैं। हम अपने लेखको का भी शुक्रिया अदा करते है। जिन्होने फ़ीसबीलिल्लाह हम को क़लमी तआवुन दिया।

हम अपने उन भाइयो के भी शुक्रगुज़ार है जिन्हो ने जब तब अच्छे मशवरे दिये। हम अपने उन भाइयों के भी शुक्रगुजार है जो हमारी ग़लतियो पर हम को टोकते और सचेत करते रहे इस सिल्सिले में हम ख़ास तौर से जनाब मास्टर मुहम्मद इल्यास साहिब रूदौलवी का बहुत बहुत शुक्रिया अदा करते है। अल्लाह तआ़ला इन सब को जज़ाए ख़ैर से नवाज़े आमीन।

अनुरोध

हम अपने सभी पाठकों से विशेष कर उन पाठाके से जो इल्म (ज्ञान) वाले है, अनुरोध करते हैं कि वह हम को अपने मश्वरों (परामर्शो) से महरूम न रखें इसी प्रकार गलतियों को पकड़ने वाले, आलोचना करने वाले हाथ न खींचे आप के मश्वरो तथा आप की आलोचनाओं से आप का सच्चा राही निखरता जाएगा।

साथ ही हम अपने पाठकों, लेखकों, एजन्टों से अनुरोध करते है कि वह "सच्चा राही" के नये ख़रीदार बना कर इस को अपने पैरो पर खड़ा कर दें। इस समय सच्चा राही दो हज़ार से जियादा छप रहा है। अगर इस के एक हज़ार ग्राहक और बढ़ जाएं तो यह अपने पैरो पर खड़ा हो जाएगा इन्शा अल्लाह तआ़ला। आख़िर में हम अपने रब से प्रार्थना करते हैं कि "सच्चा राही" द्वारा हम से वही काम ले जो तुझे प्रिय हो और हर उस काम से हमें बचाले जो तुझे अप्रिय हो।

(पृष्ठ ३० का शेष)

इस आदेश के बाद फिर इस काम को करे वह नरकीय है जहां वह हमेशा रहेगा।" (२:२७५)

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने जब "नजरान" के ईसाइयों से समझौता किया तो साफ तौर पर लिख भेजा कि यदि तुम सूदी कारोबार करोगे तो समझौता रद्द समझा जायेगा। बनू मगीरह के सूद खोर पूरे अरब में मशहूर थे। मक्का पर विजय प्राप्त करने के बाद आप (सल्ल०) ने उनकी सम्पूर्ण ब्याज–..... समाप्त कर दी और मक्के के अधिकारियों को लिखा है कि यदि वे बाज न आयें तो उनसे युद्ध करो। आप (सल्ल०) ने फरमाया –

"सूद लेने और देने वाले और उसका दस्तावेज लिखने वाले और उसकी गवाही देने वाले, सब पर अल्लाह की लानत है।"

इन सभी आदेशों का मकसद केवल समाज से सूदी कारोबार को जड़–मूल से नष्ट कर दिया जाय बल्कि इसका मूलआदेश ऐसी व्यवस्था कायम करना है जिसमें कंजूसी के बदले दानशीलता हो, स्वार्थपरता के बदले सहानुभूति हो, आपसी सहयोग हो, सूद के बदले जकात (दान) हो।

वैदिक काल की सभ्यता

इतिहास के पन्नों से

इदारा

आर्थिक दशा – उत्तर वैदिक काल में आर्यों की आर्थिक दशा में क्रमशः परिवर्तन होता गया। अब वे गांवों के अतिरिक्त नगरों में भी निवास करने लगे और उनका जीवन अधिक सम्पन्न हो गया। उनके धार्मिक जीवन में निम्नलिखित परिवर्तन दिखाई देता है :–

(१) भूमिपतियों का प्रादुर्भाव – ऋग्वैदिक काल में भूमिपतियों का कहीं नाम न था परन्तु अब बड़े–बड़े भूमिपतियों का प्रादुर्भाव हो रहा था। बहुत से भूमिपति सम्पूर्ण गांव के स्वामी होते थे और गांव के लोगों पर उसका बड़ा प्रभाव रहता था।

(२) व्यवसाय में परिवर्तन – उत्तर वैदिक काल में आर्य लोग गंगा–यमुना की अत्यन्त उपजाऊ भूमि में पहुंच गये थे अतएव अब उनकी कृषि में बड़ी उन्नति हो गयी थी। अब वे बड़े–बड़े हलों का प्रयोग करने लगे थे। वे विभिन्न प्रकार की खाद भी प्रयोग करने लगे थे। अब वे गेहूं तथा जौ के अतिरिक्त अन्य अन्नों को भी पैदा करने लगे थे और चावल का अत्यधिक प्रयोग करते थे। उत्तर मैदान में बस जाने के कारण वे लोग मानसून पर अत्यधिक निर्भर रहने लगे थे। फलतः उन्हें अधिक दृष्टि तथा अनावृष्टि दोनों का सामना करना पड़ता था। कृषि को रोगों से बचाने के लिए मंत्र–तंत्र का प्रयोग किया जाता था जिनका उल्लेख हमें अर्थवेद में मिलता है। ऋग्वैदिक काल की अपेक्षा अब उद्योग धन्धों में भी अधिक वृद्धि हो गई और कार्य विभाजन का सिद्धान्त दृढ़ हो गया था। यजुर्वेद में उन सब व्यवसायों का उल्लेख है, जिन्हें इस काल के आर्य किया करते थे। इनमें शिकारी, मछुए, पशु पालक, हलवाहे, जौहरी, चटाई बनाने वाले, धोबी रंगरेज, जुलाहे, कसाई, सुनार, बढ़ई आदि आते हैं। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि इस काल के व्यवसाय में कितनी उन्नति हो गयी थी।

(३) वाणिज्य तथा व्यापार में उन्नति– उत्तर वैदिक काल में ऋग्वैदिक काल की अपेक्षा व्यापार तथा वाणिज्य में अधिक वृद्धि हो गयी थी। यह स्वाभाविक भी था क्योंकि अब वे एक विशाल मैदान के निवासी हो गये थे जो बड़ा हीं उपजाऊ तथा धन–सम्पन्न था। इस काल में व्यपारियों का एक अलग वर्ग बन गया था जिन्हें वणिक कहते थे। धनी व्यापारी श्रेष्ठिन कहलाता था। आर्य लोगों का आंतरिक व्यापार पहाड़ियों में रहने वाले किरातों के साथ होता था, जिन्हें ये कपड़े देकर औषधि के लिए जड़ी–बूटियां प्राप्त करते थे। अब ये लोग समुद्र से भी परिचित हो गये थे और बड़ी–बड़ी नावों द्वारा सामुद्रिक व्यापार भी करते थे। अब आर्य लोग निष्क, शतमान तथा कृष्णाल नाम की मुद्राओं का प्रयोग करने लगे थे जिससे व्यापार में बड़ी सुविधा होने लगी।

(४) धातु–तान में वृद्धि – उत्तर वैदिक काल में नई–नई धातुओं का भी आर्यों को ज्ञान हो गया था। ऋग्वैदिक काल में इन्हें स्वर्ण तथा अयस् का ज्ञान प्राप्त था परन्तु इस काल में रांगा, सीसा तथा चांदी का भी ज्ञान प्राप्त हो गया था। इस काल में लाल–अयस् तथा कृष्ण–अयस् का भी उल्लेख मिलता था। संभवतः लाल अयस का तात्पर्य तांबे और कृष्ण–अयस का लोहे से था।

कला – उत्तर वैदिक काल में कला के क्षेत्र में भी हमें कई परिवर्तन दिखाई देते हैं। काव्य–काल का स्वरूप अत्यन्त व्यापक हो गया था। ऋग्वेद में केवल स्तुति मंत्रों का संग्रह है, परन्तु अब यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेदा, ब्राह्मण ग्रन्थों तथा सूत्रों की रचना कर काव्य क्षेत्र को अत्यन्त विस्तृत कर दिया गया। यजुर्वेदा में यज्ञों का विस्तृत विवेचन है। सामवेद गीति–काव्य है और उसका संगीत–कला पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा तथा इसमें भूत–प्रेत से रक्षा का विधान है। ब्राह्मण–ग्रन्थों में उच्चकोटि की दार्शनिक विवेचना है। अथर्ववेद में तंत्र–मंत्र चला है। सूत्रों की रचना इसी काल में हुई थी इससे संक्षेप में लिखने की कला की बड़ी उन्नति हुई थी। खगोल विद्या भी बड़ी उन्नति पर गई थी और इस काल में आर्यों को नये–नये नक्षत्रों का ज्ञान प्राप्त हो गया था। ऐसा लगता है कि औषधि–विज्ञान इस काल में अवनत दशा में था और लोगों की संख्या में वृद्धि हो गयी थी।

आर्थिक दशा–ऋग्वैदिक काल का धर्म बड़ी ही सरल तथा आडम्बरहीन था परन्तु उत्तर–वैदिक काल का धर्म बड़ा ही जटिल तथा आडम्बरमय हो गया। इस काल के ध र्म की निम्नलिखित विशेषताएं थीं–

(१) ब्राह्मरणों की प्रधानता– इस युग में ब्राह्मणों का प्रधान तथा उनका महत्व अत्यधिक बढ़ गया था, ब्राह्मण–ग्रंथों की रचना इसी काल में हुई थी। इन ग्रन्थों के रचयिता ब्राह्मण थे और इनका सम्बन्ध भी ब्राह्मणों से ही था। वेदों तथा ब्राह्मण ग्रन्थों के सच्चे ज्ञान का अधिकार यही वर्ग अपने को समझता था। ब्राह्मण ही यज्ञ करता और कराता था, अतएव उसके आदर–सम्मान में बड़ी वृद्धि हो गयी थी। इस काल में ब्राह्मण का स्थान इतना ऊंचा हो गया था कि वह भू–सुर, भू–देव आदि नामों से सम्बोधित किया जाने लगा था।

(२) यज्ञ तथा बलि के महत्व में वृद्धि – इस युग में यज्ञों तथा बलि के महत्व में इतनी अधिक वृद्धि हो गयी थी कि यदि इसे यज्ञों का युग कहा जाय तो कुछ अनुचित न होगा। यजुर्वेद, जिसकी रचना इस युग में हुई। यह प्रधान–ग्रंथ है और यज्ञों के विधान की उसमें विस्तृत विवेचना की गई है। अब यज्ञों की संख्या में बड़ी वृद्धि हो गयी और उनके करने में भी सरलता न रह गई थी। अब ग्रहस्थ स्वयं यज्ञ नहीं कर सकता था वरन् उसे याज्ञिकों की आवश्यकता पड़ती थी। ऋग्वेद काल में केवल फल तथा दूध की बलि से काम चल जाता था परन्तु अब पशु तथा सोम की बलि का महत्व अधिक बढ़ गया। यज्ञों में समय भी अधिक लगता था। बहुत से यज्ञ वर्ष भर चलते रहते थे और उनमें बहुत अधिक धन व्यय लगता था। राजसूय, अश्वमेघ यज्ञ केवल राजा–महाराजा ही कर सकते थे। इस का परिणाम यह हुआ कि अब सर्वसाधारण के लिए बहुत कठिन कार्य हो गया। इस प्रकार ऋग्वैदिक काल के सरल तथा आडम्बरहीन धर्म में बड़ी जटिलता आ गई थी और उसमें तरह–तरह के आडंबर आ गये थे।

(३) याज्ञिक वर्ष की उत्पत्ति – यज्ञों की संख्या तथा महत्व में वृद्धि हो जाने तथा उनमें जटिलता आ जाने के कारण ब्राह्मणों में एक ऐसा वर्ग उत्पन्न हो गया जो यज्ञों का विशेषज्ञ होता था और यज्ञ कराने में कुशल होता था। इस वर्ग का एक मात्र व्यवसाय अपने यजमान के यहां यज्ञ कराना तथा उसमें यज्ञ–शुल्क एवं दान प्राप्त करना हो गया। उत्तर वैदिक काल की यह परम्परा आज तक चली आ रही है।

(४) उच्च कोटि का दार्शनिक विवेचन – ब्राह्मणों का दूसरा वर्ग बड़ा ही चिन्तनशील बन गया और वह दार्शनिक विवेचन में सम्पन्न हो गया। इस काल की दार्शनिक विवेचन के प्रधान ग्रंथ आरण्यक तथा उपनिषद् हैं। याज्ञवल्क्य इस काल के बहुत बड़े दार्शनिक थे। इस काल में आत्मा तथा परमात्मा के सम्बन्ध की जैसी विषद विवेचना की गई है वैसी अन्य कहीं नहीं मिलती। पुनर्जन्म के सिद्धान्त का अनुमोदन भी इसी युग में किया था और बतलाया गया था कि मनुष्य का आगामी जन्म उसके कर्मों पर निर्भर रहता है। अच्छा कार्य करने वाला अच्छी योनि में और बुरा कार्य करने वाला बुरी योनि में जन्म लेता है। युग में ज्ञान की प्रधानता पर बल दिया गया था। मोक्ष प्राप्त करने के लिए ब्रह्म का ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक समझा जाता था। षट्दर्शन अर्थात सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, पूर्व–मीमांसा तथा उत्तर–मीमांसा की रचना इसी काल में हुई थी।

(५) देवताओं के महत्व में परिवर्तन – उत्तर वैदिक काल की एक यह भी विशेषता थी कि ऋग्वैदिक काल के देवताओं का महत्व घटता जा रहा था और उसका स्थान अन्य नये–नये देवता ग्रहण करते आ रहे थे। इस युग में प्रजापति का महत्व देवताओं से अधिक हो गया था। कालान्तर में रूद्र का भी महत्व बढ़ गया और इन्हें महादेव कहा जाने लगा। इन्हें पशुपति के नाम से पुकारा जाने लगा। रूद्र के साथ–साथ शिव का महत्व बढ़ने लगा। विष्णु आगे चलकर वासुदेव कहलाने लगे। भागवत–सिद्धान्त का भी बीजारोपण इस युग में हो गया था।

(६) आडम्बर तथा अन्ध–विश्वास में वृद्धि – ऋग्वैदिक काल का विशुद्ध धर्म अब धीरे–धीरे आडम्बरों तथा अन्ध–विश्वासों का जाल बनने लगा था। अब देवताओं की शक्ति का स्थान यज्ञों ने ले लिया था। अब ये विश्वास हो गया था कि यज्ञों तथा मंत्रों द्वारा न केवल देवताओं को वश में किया जा सकता है वरन् उन्हें समाप्त भी किया जा सकता है। अब भूत–प्रेत तथा मंत्र–तंत्र में लोगों का विश्वास बढ़ता जा रहा था। अथर्ववेद में इन भूत–प्रेतों का वर्णन है और यह भी बतलाया गया है कि मंत्रों–तंत्रों द्वारा

इनसे रक्षा की जा सकती है।

वैदिक तथा द्रविड़ सभ्यता में अन्तर – वैदिक तथा द्रविड़ सभ्यता का तुलनात्मक अध्ययन करने पर इसमें कई अंतर दिखाई देते हैं। द्रविड़ लोग छोटे काले तथा चपटी नाक वाले होते थे परन्तु आर्य लोग लम्बे, गोरे तथा सुंन्दर शरीर के होते थे। यद्यपि द्रविड़ लोग भी वीर, योद्धा होते थे परन्तु वे उतने वीर, बलिष्ठ तथा साहसी नहीं होते थे जितने आर्य लोग। आर्य के अस्त्र–शस्त्र भी द्रविड़ों से अच्छे होते। आर्यों की सभ्यता तथा संस्कृति का सृजन उत्तरी भारत में हुआ था परन्तु द्रविड़ों की सभ्यता का विकास दक्षिण–भारत में हुआ था। यद्यपि द्रविड़ लोग भी सभ्य थे परन्तु उनकी सभ्यता उनकी उन्नति तथा प्रौढ़ न थी जितनी आर्यों की। द्रविड़ों का कुटुम्ब मातृक तथा अर्थात् माता कुटुम्ब की प्रधान होती थी, परन्तु आर्यों का कुटुम्ब पैतृक तथा जिसमें पिता अथवा कुटुम्ब का अन्य कोई वयोवृद्ध पुरूष प्रधान होता था। द्रविड़ों में लोग अपनी माता के भाई की सम्पति के उत्तराधिकारी होते थे। आर्यों में लोग अपने पिता की सम्पत्ति के उत्तराधिकारी होते थे। द्रविड़ों में चचेरे भाई–बहन में विवाह हो सकता था, परन्तु आर्यों में इस प्रकार के विवाहों का निषेध था। आर्यों के समाज का मूलाधार जाति–व्यवस्था थी जिसमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र के कार्य अलग अलग निश्चित थे। परन्तु द्रविड़ों में इस प्रकार की जाति–व्यवस्था न थी। आर्यों की भाषा संस्कृति थी। परन्तु द्रविड़ों की भाषा इससे भिन्न थी। द्रविड़ लोग भूत–प्रेत की पूजा करते थे परन्तु आर्य लोग सर्वशक्तिमान दयालु ब्रह्म को मानते थे। द्रविड़ लोगों को सामुद्रिक जीवन प्रिय था और सामुद्रिक व्यापार में वे बड़े कुशल थे परन्तु आर्यों को स्थलीय जीवन अधिक प्रिय था। इतना अन्तर होने पर शताब्दियों के सम्पर्क के कारण दोनों ने एक दूसरेकी सभ्यता तथा संस्कृति को अत्यधिक प्रभावित किया है। और अब इनमें अत्यधिक साम्य हो गया है।

वैदिक सभ्यता तथा सिन्धु घाटी की सभ्यता का अन्तर–वैदिक सभ्यता तथा सिन्धु घाटी की सभ्यता का तुलनात्मक अध्ययन करने पर इनमें कई अन्तर दिखाई पड़ते हैं जिनमें से प्रधान निम्नांकित है–

(१) सिन्धु घाटी की सभ्यता वैदिक सभ्यता से अधिक प्राचीन है। पहले से यह धारणा थी कि वैदिक सभ्यता ही भारत की प्राचीनतम सभ्यता है परन्तु अब यह निष्कर्ष निकाला गया है कि सिंध–सभ्यता वैदिक सभ्यता से लगभग दो हजार वर्ष अधिक पुरानी है।

(२) दोनों सभ्यताओं के स्वरूप में अन्तर – वैदिक सभ्यता ग्रामीण तथा कृषि प्रधान थी, परन्तु सिन्धु–घाटी की सभ्यता नगरीय तथा व्यापार प्रधान थीं।

(३) आवास सम्बन्धी अन्तर– वैदिक आर्य गांवों में बांस के पर्ण–कुटीर बना कर रहते थे। परन्तु सिन्धु घाटी के लोग नगरों में पक्की ईंटों के मकान बनाकर रहते थे।

(४) धातुओं के प्रयोग में अन्तर – सिन्धु घाटी के लोग प्रधानतः पाषाण का प्रयोग करते थे। धातुओं में वेसोने की अपेक्षा चांदी का अधिक प्रयोग करते थे। लोहे से तो बिलकुल अपरिचित थे। परन्तु वैदिक काल के आर्य प्रारम्भ में सोने तथा तांबे का और बाद में चांदी, लोहे तथा कांसे का भी प्रयोग करने लगे थे।

(५) अस्त्र–शस्त्र के प्रयोग में अन्तर – वैदिक काल के लोग युद्ध में आत्मरक्षा के लिए कवच, शिरस्त्राण आदि का प्रयोग करते थे, परन्तु सिन्धु घाटी के लोग इन आत्म–रक्षक अस्त्रों से अनभिज्ञ थे।

(६) भोजन में अन्तर – यद्यपि वैदिक आर्य प्रारम्भ में मांस भक्षण करते थे, परन्तु कालान्तर में मांस भक्षण घृणा की दृष्टि से देखा जाने लगा। इसके विपरीत मांस–मछली सिन्धु के लोगों का प्रधान आहार था।

(७) पशुओं के ज्ञान तथा महत्व में अन्तर – वैदिक आर्य घोड़े पालते थे जिन्हें ये अपने रथों में जोतते थे, परन्तु सिन्धु घाटी के लोग सम्भवतः इस पशु से अपरिचित ही थे। वैदिक काल के आर्य बाघ से सर्वथा अपरिचित थे। हाथी का वेदों में बहुत कम उल्लेख मिलता है परन्तु सिन्धु घाटी के लोग इन दोनों पशुओं से भली–भांति परिचित थे। वैदिक काल के आर्य गाय को बड़ा पवित्र मानते थे और उसे पूजनीय समझते थे। परन्तु सिन्धु घाटी के लोग गाय को महत्व नहीं देते थे। गाय से अधिक महत्व सांड को देते थे।

(८) धार्मिक धारणा में अन्तर– यद्यपि वैदिक आर्यों ने अपने देवी देवताओं में मानवीय गुणों का आरोपण किया था, परन्तु वे मूर्ति–पूजक न थे। इसके विपरीत सिन्धु घाटी के लोगों में मूर्ति पूजा की प्रतिष्ठा थी।

(शेष पृष्ठ १६ पर)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ज़ाते ग्रामी से महब्बत व लगाव

हजरत मौ० अब्दुल्लाह अब्बास नदवी

हज़रत रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ाते गिरामी से महब्बत व लगाव दीन का हासिल, ईमान का पैमाना और निःस्वार्थता व सत्यता की कसौटी है। यह सम्बन्ध जिस कदर पुख्ता, गहरा और दृढ़ हो, उसी दर्जे अल्लाह तआ़ला मोक्ष (मगफ़िरत) इस्लामी धर्म शास्त्र (शरीअत) से वफ़ादारी, एकेश्वरवाद में परिपक्वता और ईमान में पुख़्तगी होगी। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहिवसल्लम का कथन है –

"तुम में से कोई शख़्स उस समय तक ईमान वाला नहीं हो सकता जब तक कि वह अपने बाप अपने बेटे और तमाम लोगों से अधिक मुझ को प्रिय न रखे।"

अल्लाह तआ़ला वहदानियत (एकेश्वरवाद) पर ईमान, उसके व्यक्तित्व, गुणों तथा समानता को हर सन्देह से मुक्त और बुलन्द तथा पाक समझना और उसी से डरना और उसकी सत्ता में किसीको शरीक न करना ही इस्लाम का केन्द्र बिन्दु है लेकिन इस ख़ालिस तौहीद पर विश्वास और इस विश्वास को ज़िन्दगी के तमाम कर्मों में रचबस जाना उसी समय सम्भव है जब इस राह के सरदार पथ प्रदर्शक सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का पूर्ण अनुकरण नसीब हो और जिस अनुकरण के बिना कोई सम्बन्ध विश्वसनीय नहीं है। "(ऐ रसूल!) कह दीजिए (ऐ लोगो !) अगर तुम अल्लाह से महब्बत रखते हो तो मेरा इत्तबा (पैरवी)करो (और अगर तुम ऐसा करोगे तो) अल्लाहतआ़ला तुम को पसन्द फ़रमाएगा। (पवित्र क़ुर्आन)

लेकिन वह पैरवी बनावटी और बेजान होती है जिसकी बुनियाद महब्बत और शख़्सी (व्यक्तिक) लगाव पर न हो और ऐसी पैरवी देर तक क़ायम नहीं रहती। एक निश्चित समय तक किसी मजबूरी के कारण या किसी वक़्ती उम्मीद तक तो सम्भव है परन्तु वह अनुसरण जो ज़िन्दगी की रीति बन जाए दिल "चाहे" या "न चाहे" हर हाल में कायम रहे उस के लिए प्रेम और व्यक्तिक लगाव आवश्यक है। सहाब–ए–किराम (रज़ि०) ने जब हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हाथों में अपना हाथ दिया तो इसी बात की प्रतिज्ञा ली थी कि दिल चाहे या न चाहे हम हर हाल में आपकी पैरवी करेंगे।

"हम ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से इस बात की बैअ़त (भक्ति प्रतिज्ञा) की है कि हम उनकी पैरवी हर हाल में करते रहेंगे चाहे तबीअ़त आमादह हो या दिल उचाट हो।"

क़ुर्आने करीम के सर्वप्रथम श्रोता (मुख़ातब) सहाबा (रज़ि०) थे। उनसे अधिक तौहीद की असलियत समझने वाला कोई दूसरा नहीं हो सकता। उन्होंने इस आस्था (अ़क़ीदे) के लिए जान व माल औलाद इ़ज़्ज़त, घरबार सब कुछ क़ुर्बान किया था। उन का अ़क़ीदा फ़न्नी बारीकियों का नहीं था तर्क के दाव पेंच वह नहीं जानते थे। शब्दों और परिभाषिक उलझनों से वह आज़ाद थे। उन हज़रात ने हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को केवल एक सन्देश वाहक नहीं समझा था जिस का काम केवल इतना हो कि वह सन्देश पहुंचा कर मुक्त हो जाए बल्कि वह हुज़ूरे अकरम सल्ल० को अपनी महब्बतों का केन्द्र समझते थे। प्रिय, आक़ा और मालिक समझते थे। हुज़ूरे अकरम सल्ल० की ज़ात से जो उनको लगाव व प्रेम था उसकी एक झलक अ़रवा बिन मसऊ़द के इस बयान से ज़ाहिर है जिस की हैसियत एक रिपोर्टर की थी। उनको सुलह़ हुदैबिया से पहले क़ुरैश ने अपना दूत बनाकर हुज़ूरे अकरम सल्ल० की सेवा में भेजा था और निर्देशित किया था कि मुसलमानों की दशा ग़ौर से देखें और क़ौम को आकर बताएं। अ़रवा ने वापस आकर बयान दिया –

"नबी–ए–करीम (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) वज़ू करते थे तो वज़ू के बचे पानी पर सहाबा यूं गिरे पड़ते हैं कि गोया अब लड़ पड़ेंगे। हुज़ूर अकरम (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के दहने पाक (पवित्र मुंह) से जो चीज़ निकलती उस को ज़मीन पर गिरने न देते वह किसी न किसी के हाथ पर रोक लिया जाता है जिसे वह सर पर मल लेते हैं। हुज़ूर अकरम (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) कोई हुक्म देते हैं तो पालन के लिए सब दौड़ पड़ते हैं। हुज़ूर अकरम (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) कुछ बोलते हैं तो सब चुपचाप

हो जाते हैं। सम्मान का यह हाल है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तरफ़ आंख उठा कर नहीं देखते।"

अ़रवा : ने यह भी कहा –

"लोगो ! मैंने किसरा का दरबार देखा है और क़ैसर का दरबार भी देखा है और नजाशी का दरबार भी देखा है मगर मुह़म्मद (सल्ल०) के सह़ाबी (साथी) जो सम्मान मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) का करते हैं वह किसी बादशाह को ख़ुद उस के दरबार और देश में भी प्राप्त नहीं है।"

हज़रत अम्र बिन अलआस (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि "रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से बढ़कर मुझे कोई प्यारा न था मगर दिल में हुज़ूर अकरम सल्ल० का जलाल (प्रताप) इस क़दर था कि मैं आंख भरकर हुज़ूर सल्ल. को देख नहीं सकता था।"

हज़रत अ़ली मुर्तुज़ा से किसी ने पूछा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से तुम्हारी मह़ब्बत कैसी थी? फ़रमाया "बख़ुदा हुज़ूर सल्ल० हम को माल औलाद पुत्र और मां बाप से अधिक प्रिय थे और उससे भी अधिक तलब हमारे दिलों में थी जितनी एक प्यासे को ठंडे पानी की तलब होती है।

एक और सह़ाबी का ज़िक्र है कि वह 'नबी सल्ल. की सेवा में ह़ाज़िर होते तो हुज़ूरेअकरम सल्ल० की तरफ़ टकटकी लगाए देखते रहते। हुज़ूर सल्ल० ने पूछा क्या बात है? वह बोले– मैं समझता हूं कि दुन्या ही में इसदौलत के दर्शन की बहारें समेट लूं आख़िरत में हुज़ूर सल्ल० के उच्च स्थान तक मेरी पहुंच भी न होगी। उस पर यह आयत उतरी –

अनुवाद : "जो कोई अल्लाह और रसूल की आज्ञा का पालन करता है वह उन नबियों, सिद्दीकों और शहीदों के साथ होगा जिन पर ख़ुदा का इनाम हुआ।"

सहाब–ए–किराम (रज़ि०) के इस तअल्लुक व लगाव को बयान करने के लिए हम अपने शब्दों के सीमित भंडारा में केवल "इश्क" का शब्द पाते हैं जिससे किसी दर्जा इस कैफियत (दशा) का इज़हार हो सकता है जो उन के अन्दर पाई जाती थी। उन्होंने इस "इश्क़" का इज़हार शब्दों से कम और अपने अ़मल से ज़्यादा किया था। जानें क़ुर्बान कर के इस दौलत को प्राप्त किया था।

सह़ाब–ए–किराम के बाद ताबईन (वह मुसलमान जिन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु के सह़ाबा को देखा है) ने आप सल्ल० की ह़दीस शरीफ़ को सीनों से लगाया, अपनी उ़म्रें इस खोज में बिता दीं कि आप सल्ल० ने क्या फ़रमाया और किन शब्दों में फ़रमाया आप के एक एक क़ौल को इकट्ठा किया। एक एक बात को परखा। चुनानचः एक एक वाक्य के बारीक से बारीक अन्तर का उल्लेख किया। यह सब कोशिशें बग़ैर शख़्सी तअ़ल्लुक (ज़ाती सम्बन्धों) और उस मह़ब्बत के नामुम्किन था जिसको 'इश्क़' कहा जाता है।

(शेष पृष्ठ २२ पर)

(पृष्ठ ४० का शेष)

भी बताया गया है कि जिस कार्यक्रम में जवाहिरी को आना था वह उसमें निमंत्रण के बावजूद शामिल नहीं हुए।

इससे पहले राष्ट्रपति मुशर्रफ ने सरकारी टेलीविजन पर कहा था कि विदेशी आतंकवादियों को देश में किसी भी हालत में पनपने नहीं देना है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया था कि अगर विदेशी आतंकी घर में जड़ें जमा लेंगे तो देशवासियों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। हालांकि मुशर्रफ की अपील से बेअसर लोगों ने अमेरिकी हमले का विरोध किया और जमकर नारेबाजी की। जमाअ़ते इस्लामी के सीनेटर प्रो० गफूर ने कहा कि प्रधानमंत्री शौकत अजीज को अमेरिका यात्रा पर नहीं जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि मुशर्रफ के नेतृत्व में सेना देश की सुरक्षा नहीं कर सकती।

उधर, पाक खुफिया अफसरों ने बताया कि इस हवाई हमले में सात आतंकी मारे गए हैं लेकिन वहां जवाहिरी की मौजूदगी के कोई संकेत नही मिले है। एक खुफिया अधिकारी ने बताया कि जवाहिरी को भोज के लिए आमंत्रित किया गया था,लेनिक उसके आने का कोई प्रमाण नहीं मिला, बल्कि अलकायदा के आतंकियों को प्रश्रय देने वाले दो मौलवी भोज में शामिल हुए थे, लेकिन रात में हमले के पहले वे वहां से जा चुके थे। अलअरबिया चैनल ने एक सूत्र के हवाले से जवाहिरी के जिंदा होने की खबर दी है। वहीं दूसरे सूत्र ने बताया कि जवाहिरी के वहां मौजूद होने की पुख्ता जानकारी के बाद ही हमला हुआ था।

●●●

अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

डॉ० मुईद अशरफ नदवी

जर्मनी में पिछले ३४ वर्षों से जनसंख्या में तेजी से आ रही गिरावट के मद्देनजर जनसंख्याविदों ने आशंका व्यक्त की है कि यदि इस पर समय रहते ध्यान नहीं दिया गया तो जर्मनवासियों का अस्तित्व इतिहास बनकर रह जाएगा। देश के जनसंख्या विशेषज्ञों ने खुलासा कियाहै कि १९७२ से अब तक जर्मनी की जनसंख्या ३२ लाख की कमी आई है। विशेषज्ञों का कहना है कि यदि देश कीा जनसंख्या इसी तरह लगातार घटती रही तो इसके गंभीर परिणाम हो सकते हैं।

कुवैत के अमीर जाबिर का निधन, साद बनेंगे नए अमीर

कुवैत। कुवैत के अमीर जाबिर अल अहमद अल सबाह का निधन हो गया। वे ७८ वर्ष के थे। सरकारी मीडिया ने यह जानकारी दी। कुवैत के संविधान के मुताबिक शाही खानदान के वली अहद (युवराज) शेख साद अल अब्दुला अल सबाह कुवैत के नए अमीर बनेंगे, लेकिन राजनीतिक विशेषज्ञों का मानना है कि श्री साद की बीमारी और राजकाज संभालने की समर्थता को देखते हुए कुवैत के प्रधानमंत्री शेख सबाह अल अहमद अल सबाह भी देश की बागडोर संभाल सकते हैं। कुवैत में अमीर की मौत के बाद ४० दिन के राजकीय शोक की घोषणा की गई है। भारत में भी एक दिन का राष्ट्रीय शोक रखा जाएगा। उ०प्र० में भी एक दिन का राजकीय शोक मनाया गया। श्री सबाह ने ३१ दिसम्बर १९७७ में देश की सत्ता संभाली थी। श्री सबाह को वर्ष २००१ में मस्तिष्काघात हुआ था। श्री सबाह कुवैत के २४५ वर्ष पुराने राजवंश के १३वें शासक थे।

प्रतिबंधों की परवाह नहीं ईरान को

तेहरान। ईरान के राष्ट्रपति महमूद अहमदीनेजाद को अपने कार्यक्रम के कारण अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिबंधों की परवाह नहीं है। इस बीच ईरान के विदेश मंत्रालय ने यूरोपीय देशों व अन्तर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी को परमाणु मुद्दे पर फिरसे वार्ता करने का निमंत्रण दिया है। श्री अहमदनेजाद ने अपनी सरकार के फैसले का बचाव करते हुए कहा कि हमने परमाणु ऊर्जा के मामले में परमाणु अप्रसार संधि का उल्लंघन नहीं किया है। इस वजह से हम आणविक ईंधन उत्पन्न करने के लिए मुक्त हैं। ईरान के करीब ढाई वर्षों के बाद को नेजात स्थित कुछ प्रमुख संयंत्रों से आईएईए की सील हटा कर वहां छोटे पैमाने पर संवर्द्धन का काम शुरू कर दिया था। इसके बाद पश्चिमी देशों में हलचल हो गई और उन्होंने आशंका जताई कि ईरान परमाणु हथियार बनाने का प्रयास कर सकता है। यूरेनियम के संवर्द्धन से आणविक संयंत्रों का ईंधन तैयार होता है, जिससे विद्युत उत्पन्न करने के अलावा हथियार भी बनाए जा सकते हैं। ईरान ने कहा कि वह फिलहाल महज शोध कर रहा है और यूरेनियम संवर्द्धन अब भी बंद है। वैसे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ईरान के इस कदम की आलोचना हुई है और ईरान पर प्रतिबंध का खतरा भी बढ़ गया है, अहमदीनेजाद ने कहा कि इस बात के प्रमाण नहीं हैं कि ईरान आणविक हथियार बनाने में जुटा है। उन्होंने कहा कि हम बस इतना ही कह सकते हैं कि ईरान के लिए ऐसे हथियार का कोई महत्व नहीं है, क्योंकि ये इस्लाम की भावनाओं के विपरीत हैं।

अमेरिकी हमले के विरोध में उतरे इस्लामी संगठन

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के कबायली इलाके में अयमान अल जवाहिरी को मारने के लिए हुए अमेरिकी हवाई हमले के विरोध में पाकिस्तान के कई इस्लामी संगठनों ने जमकर प्रदर्शन किया। कराची, इस्लामाबाद, लाहौर और पेशावर में कार्यकर्ताओं ने पाक राष्ट्रपति परवेज मुशर्रफ और अमेरिका विरोधी नारेबाजी की। कराची में मुत्तहिदा मजलिस–ए–अमल और मुत्तहिदा कौमी मूवमेंट रैलीनिकाली। दूसरी ओर, हवाई हमले में मारे गए शवों में से जवाहिरी के शव की पहचान डीएनए जांच के आधार पर की जाएगी। हालांकि यह

(शेष पृष्ठ ३६ पर)